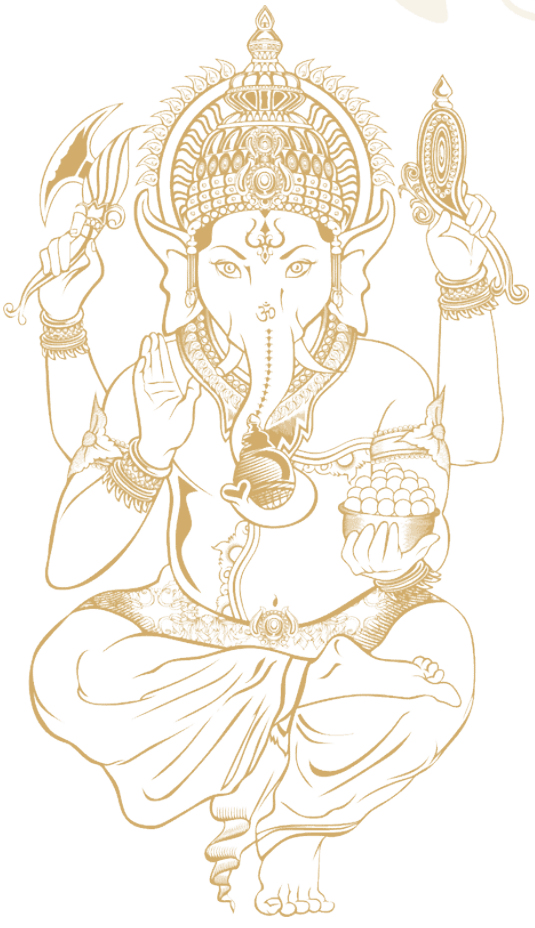

vinay varma

23 Aug 1983

07:20 PM

Gorakhpur

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119191801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**23/08/1983**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**19:20:33 घंटे**
इष्ट	34:32:22 घटी
स्थान	**Gorakhpur**
देश	India

अक्षांश	26:45:00 उत्तर
रेखांश	83:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:03:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:24:05 घंटे
वेलान्तर	-00:02:48 घंटे
साम्पातिक काल	17:29:15 घंटे
सूर्योदय	05:31:36 घंटे
सूर्यास्त	18:26:25 घंटे
दिनमान	12:54:49 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	06:14:39 सिंह
लग्न के अंश	25:41:01 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**धनिष्ठा - 4**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	अतिगण्ड
करण	बव
गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गे-गेंदा
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1905	भाद्रपद	1
पंजाबी	संवत : 2040	भाद्रपद	7
बंगाली	सन् : 1390	भाद्रपद	6
तमिल	संवत : 2040	आवनी	7
केरल	कोल्लम : 1159	चिगंम	7
नेपाली	संवत : 2040	भाद्रपद	7
चैत्रादि	संवत : 2040	श्रावण	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2040	श्रावण	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 20:29:19
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: धनिष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:14:52 घंटे
जन्म योग _____: धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग ____: शोभन
योग समाप्ति काल _____: 09:26:51 घंटे
जन्म योग _____: अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 07:18:28 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 62:35:58
भभोग _____: 67:21:45
भोग्य दशा काल _____: मंगल 0 वर्ष 5 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

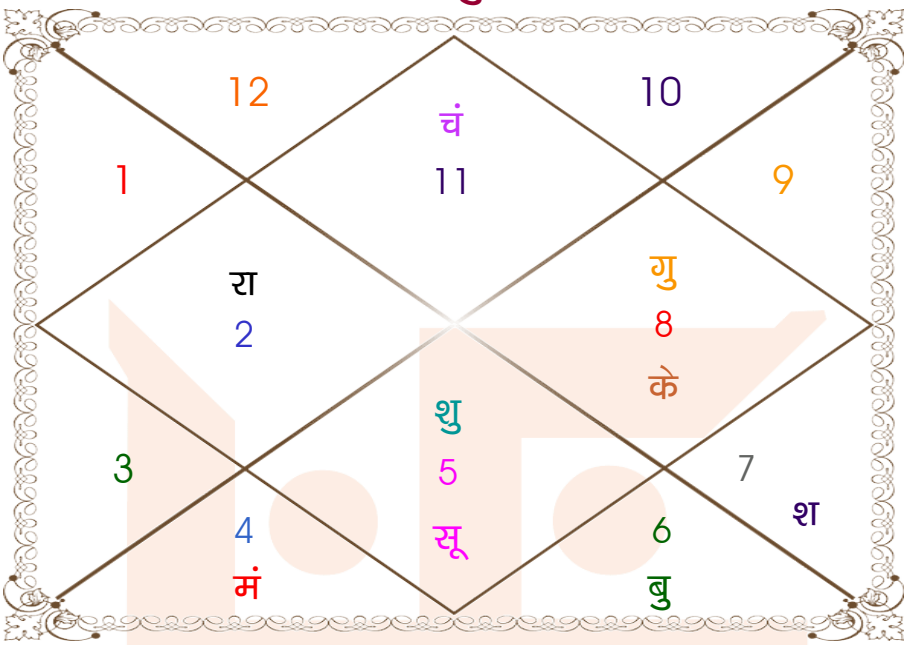

चन्द्र कुंडली

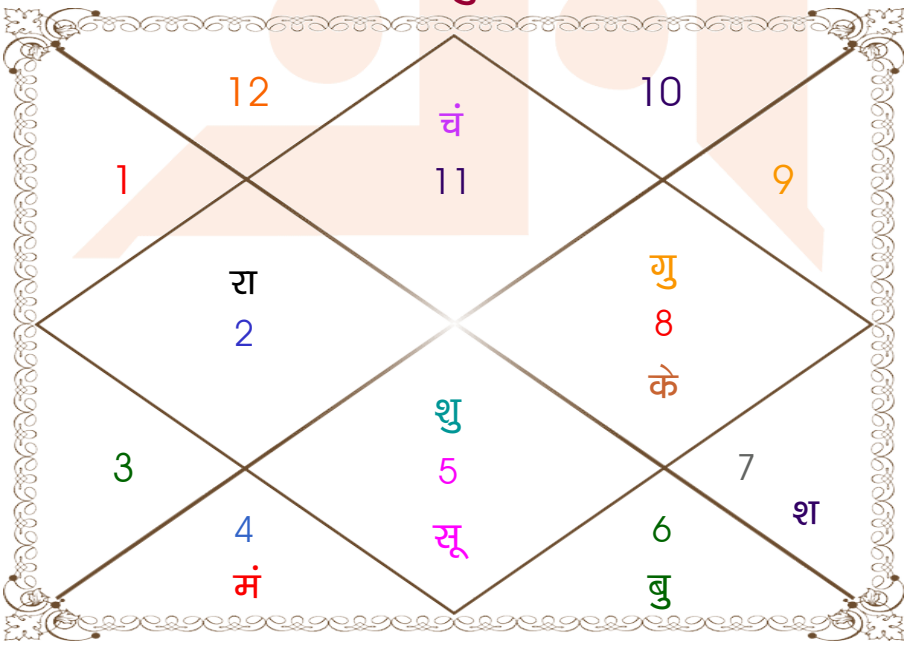

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

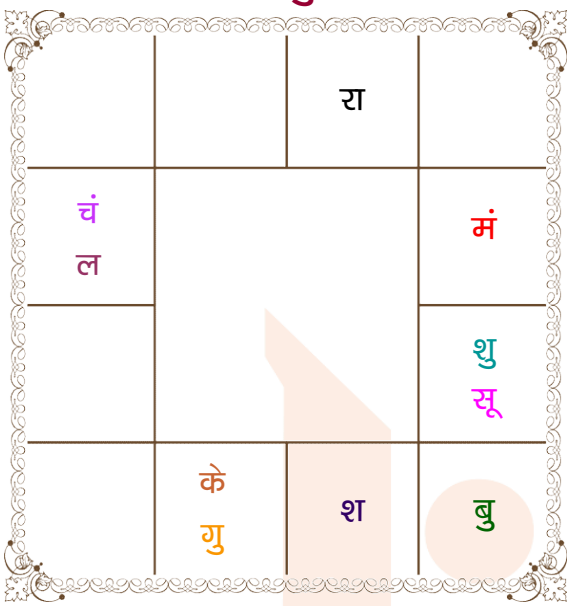

लग्न कुंडली

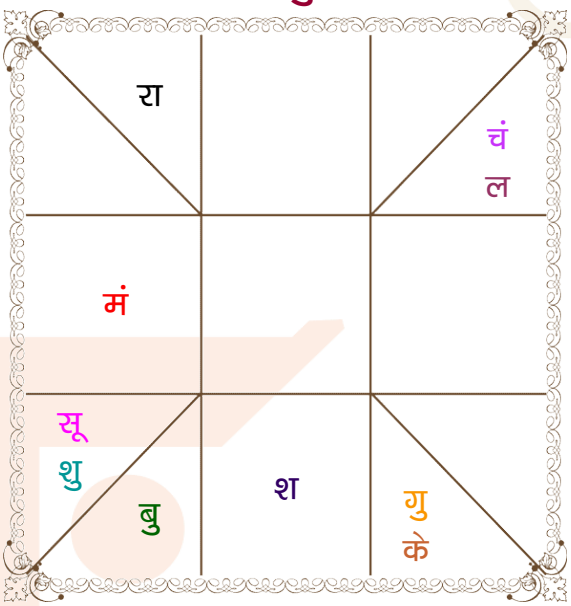

विंशोत्तरी
मंगल 0वर्ष 5मा 29दि

मंगल

23/08/1983

20/02/2097

मंगल	21/02/1984
राहु	20/02/2002
गुरु	20/02/2018
शनि	20/02/2037
बुध	20/02/2054
केतु	20/02/2061
शुक्र	20/02/2081
सूर्य	20/02/2087
चन्द्र	20/02/2097

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 1मा 21दि

भ्रामरी

14/10/2022

14/10/2026

भ्रामरी	25/03/2023
भद्रिका	14/10/2023
उल्का	14/06/2024
सिद्धा	25/03/2025
संकटा	12/02/2026
मंगला	25/03/2026
पिंगला	14/06/2026
धान्या	14/10/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	25:41:01	499:01:24	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	---
सूर्य			सिंह	06:14:39	00:57:48	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	मूलत्रिकोण
चंद्र			कुंभ	05:43:18	11:54:04	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	सम राशि
मंगल			कर्क	12:44:03	00:38:29	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	मंगल	नीच राशि
बुध			कन्या	03:10:08	00:44:53	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	शनि	उच्च राशि
गुरु			वृश्चि	08:24:11	00:04:27	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र	व	अ	सिंह	08:48:04	00:36:59	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	शत्रु राशि
शनि			तुला	06:18:11	00:04:43	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	उच्च राशि
राहु	व		वृष	29:08:49	00:12:02	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	29:08:49	00:12:02	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	मित्र राशि
हर्ष			वृश्चि	11:28:59	00:00:29	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	---
नेप	व		धनु	02:54:21	00:00:30	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	03:42:03	00:01:31	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
दशम भाव			वृश्चि	29:18:52	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:37:27

लग्न-चलित

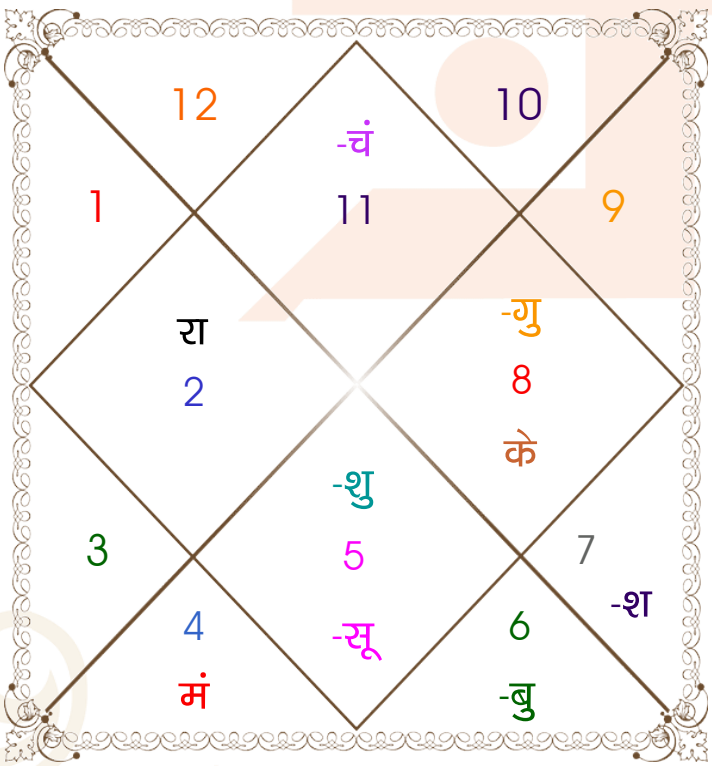

चन्द्र कुंडली

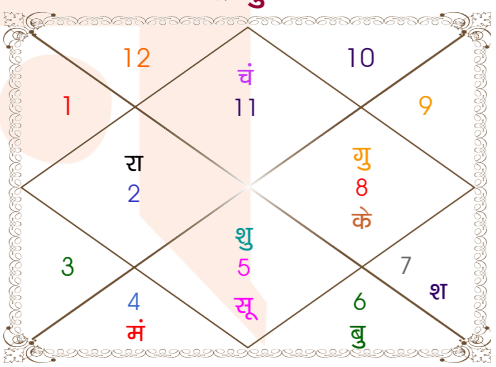

नवमांश कुंडली

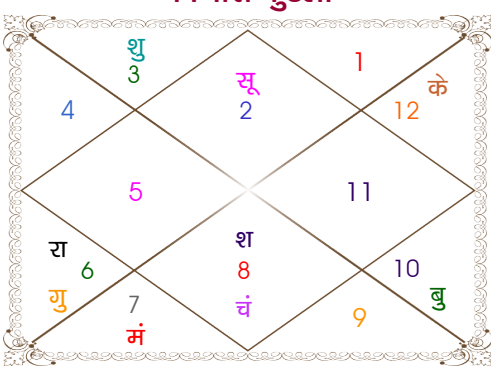

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	11:17:19	कुम्भ	25:41:01
2	मीन	11:17:19	मीन	26:53:38
3	मेष	12:29:56	मेष	28:06:15
4	वृष	13:42:33	वृष	29:18:52
5	मिथुन	13:42:33	मिथुन	28:06:15
6	कर्क	12:29:56	कर्क	26:53:38
7	सिंह	11:17:19	सिंह	25:41:01
8	कन्या	11:17:19	कन्या	26:53:38
9	तुला	12:29:56	तुला	28:06:15
10	वृश्चिक	13:42:33	वृश्चिक	29:18:52
11	धनु	13:42:33	धनु	28:06:15
12	मकर	12:29:56	मकर	26:53:38

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	25:41:01
2	मेष	04:20:34
3	वृष	04:24:50
4	वृष	29:18:52
5	मिथुन	23:16:18
6	कर्क	20:27:17
7	सिंह	25:41:01
8	तुला	04:20:34
9	वृश्चिक	04:24:50
10	वृश्चिक	29:18:52
11	धनु	23:16:18
12	मकर	20:27:17

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली

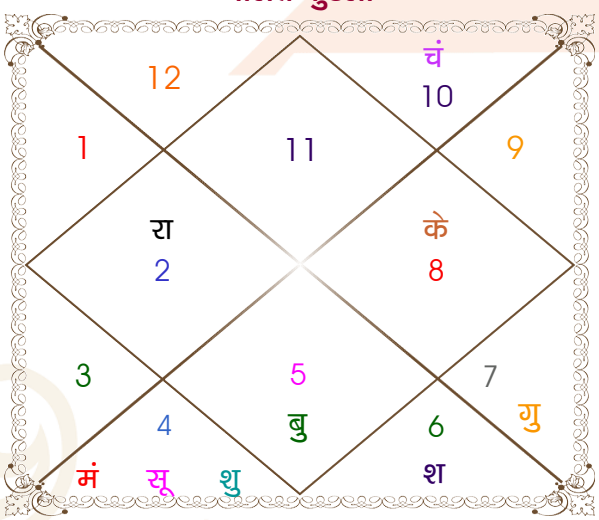

भाव कुंडली

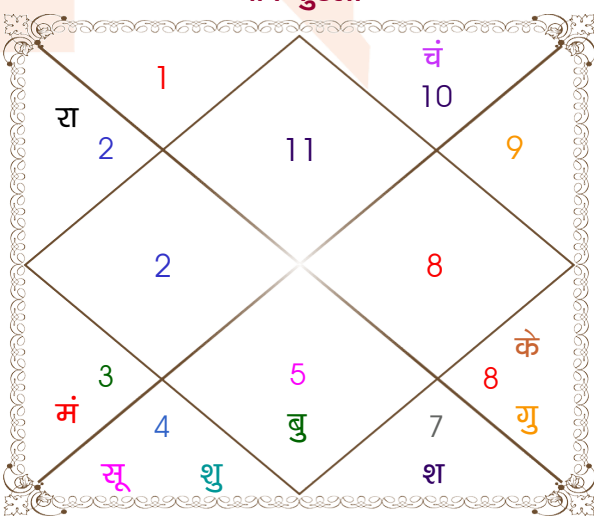

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	स्वस्थ	प्रकाश	7.08	47 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	बाल	निपीदित	प्रकाश	2.32	38 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	युवा	भीत	आगम	0.42	57 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	दीप्त	आगम	14.01	58 %
गुरु	भ्रातृ	धन	वृद्ध	मुदित	कौतुक	2.20	48 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	कुमार	विकल	आगम	0.86	38 %
शनि	मातृ	आयु	कुमार	दीप्त	निद्रा	13.86	35 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	मुदित	आगम	0.00	1 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	मुदित	उपवेशन	0.00	1 %
कुल						40.76	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली

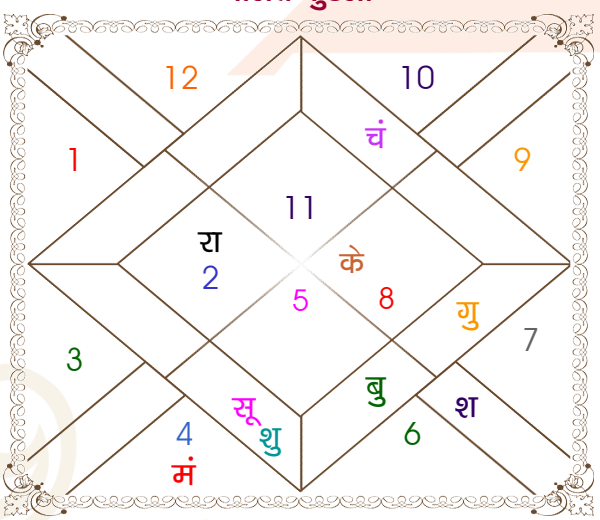

लग्न-चलित

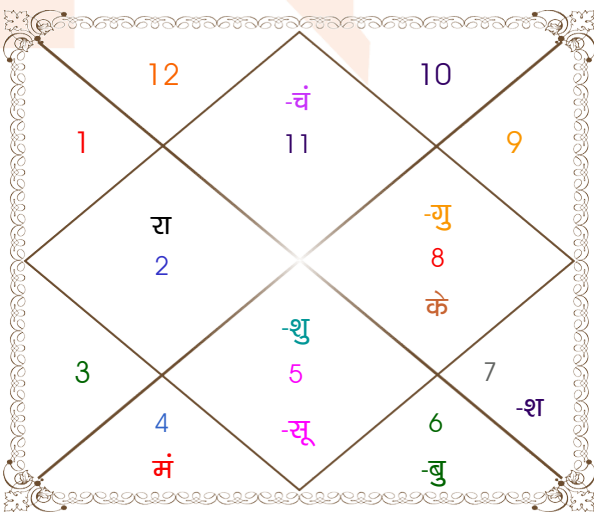

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

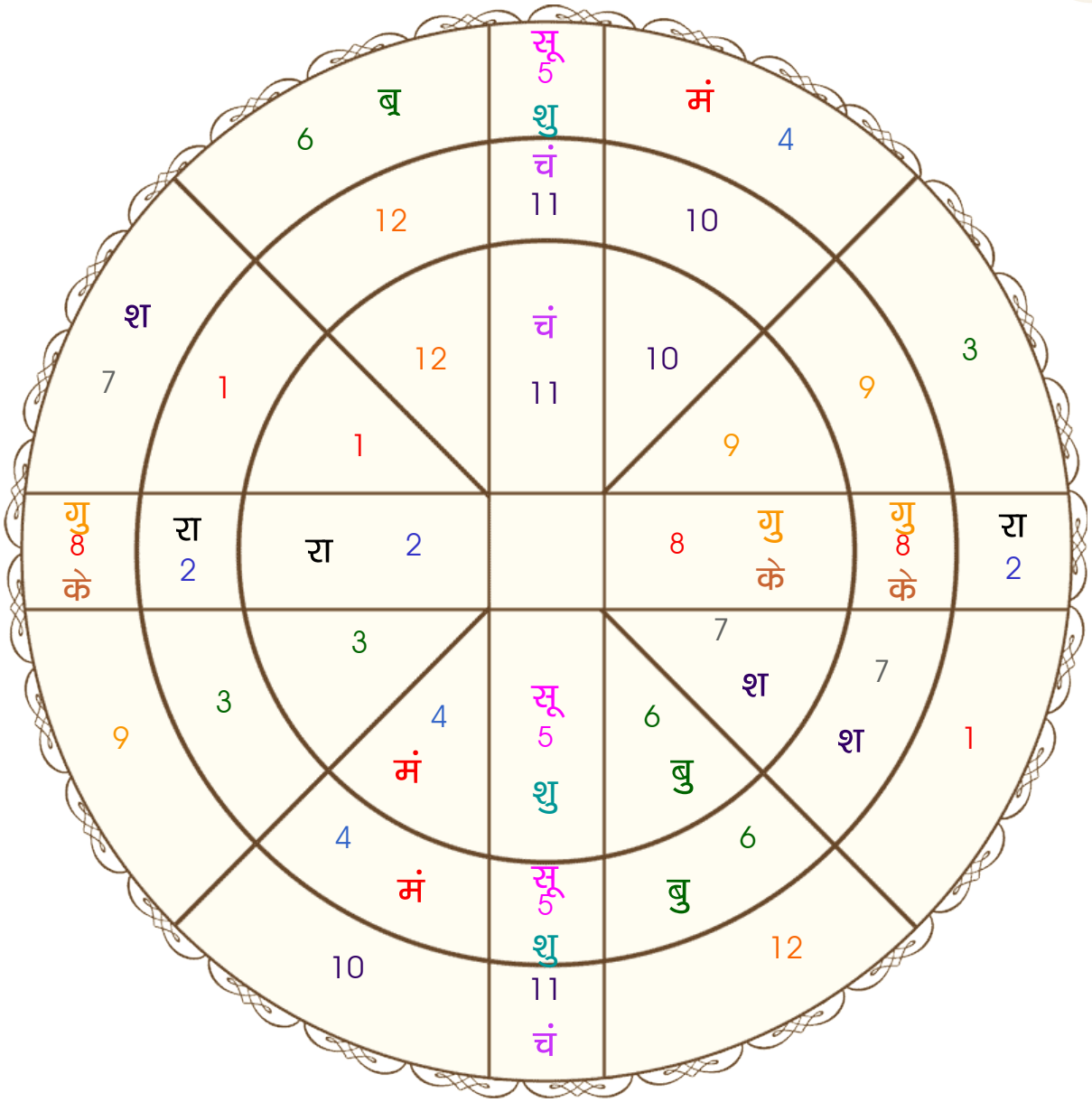

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 5 मास 10 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	06:20:33	सूर्य	केतु	राहु	शनि
चंद्र		कुंभ	05:49:12	शनि	मंगल	चंद्र	राहु
मंगल		कर्क	12:49:58	चंद्र	शनि	मंगल	चंद्र
बुध		कन्या	03:16:02	बुध	सूर्य	शनि	शनि
गुरु		वृश्चि	08:30:05	मंगल	शनि	शुक्र	सूर्य
शुक्र	व	सिंह	08:53:58	सूर्य	केतु	गुरु	चंद्र
शनि		तुला	06:24:06	शुक्र	मंगल	चंद्र	केतु
राहु	व	वृष	29:14:43	शुक्र	मंगल	शनि	चंद्र
केतु	व	वृश्चि	29:14:43	मंगल	बुध	शनि	चंद्र
हर्ष		वृश्चि	11:34:53	मंगल	शनि	चंद्र	शनि
नेप	व	धनु	03:00:16	गुरु	केतु	सूर्य	सूर्य
प्लूटो		तुला	03:47:57	शुक्र	मंगल	शुक्र	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कुंभ	25:46:55	शनि	गुरु	केतु	केतु
2	मेष	04:26:28	मंगल	केतु	चंद्र	बुध
3	वृष	04:30:45	शुक्र	सूर्य	शनि	मंगल
4	वृष	29:24:46	शुक्र	मंगल	शनि	राहु
5	मिथु	23:22:13	बुध	गुरु	शनि	राहु
6	कर्क	20:33:11	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
7	सिंह	25:46:55	सूर्य	शुक्र	बुध	शनि
8	तुला	04:26:28	शुक्र	मंगल	शुक्र	शनि
9	वृश्चि	04:30:45	मंगल	शनि	शनि	सूर्य
10	वृश्चि	29:24:46	मंगल	बुध	शनि	राहु
11	धनु	23:22:13	गुरु	शुक्र	शनि	मंगल
12	मक	20:33:11	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:31:32

फॉरच्युना : सिंह 25:15:34

लग्न कुंडली

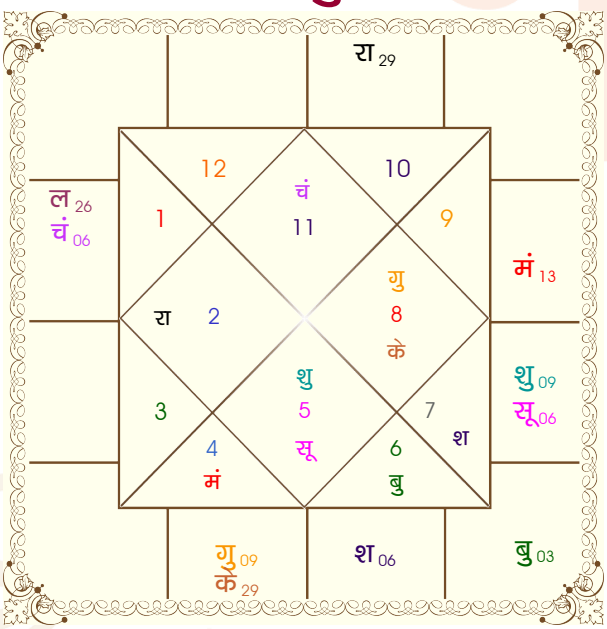

भाव कुंडली

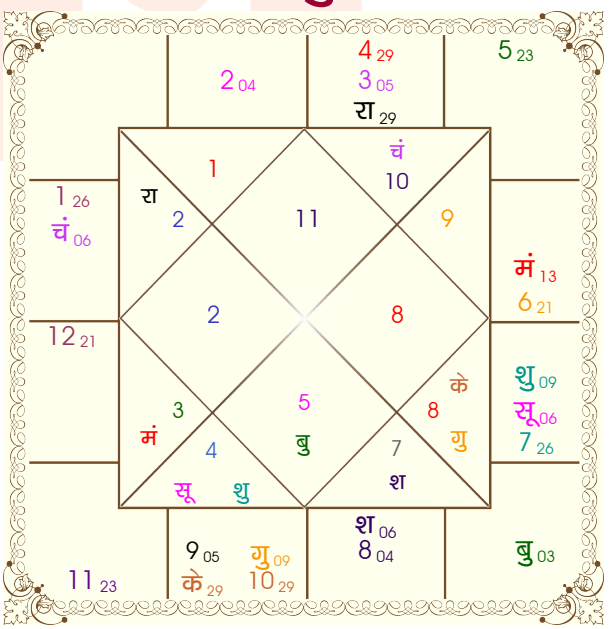

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- गुरु- शनि-
2	चंद्र- मंगल- शनि- राहु-
3	शुक्र- राहु,
4	शुक्र-
5	चंद्र, मंगल, बुध- शनि, राहु, केतु-
6	सूर्य, चंद्र- बुध, शुक्र,
7	सूर्य- बुध+ केतु,
8	मंगल, गुरु, शुक्र- शनि,
9	सूर्य, चंद्र- मंगल- गुरु, शुक्र, शनि- राहु- केतु,
10	चंद्र- मंगल- शनि- राहु-
11	गुरु-
12	चंद्र, मंगल- गुरु- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6, 7- 9,
चंद्र	2- 5, 6- 9- 10- 12,
मंगल	1- 2- 5, 8, 9- 10- 12-
बुध	5- 6, 7+
गुरु	1- 8, 9, 11- 12-
शुक्र	3- 4- 6, 8- 9,
शनि	1- 2- 5, 8, 9- 10- 12-
राहु	2- 3, 5, 9- 10-
केतु	5- 7, 9,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	मं गु	श
2	--	--	चं श रा	मं
3	--	रा	--	शु
4	--	--	--	शु
5	चं श रा	मं	के	बु
6	बु	सू शु	--	चं
7	के	बु	बु	सू
8	मं गु	श	--	शु
9	सू शु	गु के	चं श रा	मं
10	--	--	चं श रा	मं
11	--	--	--	गु
12	--	चं	मं गु	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	7	3	सिंह	6
चंद्र	6	12	कुम्भ	12
मंगल	2,9,10	4,8	कर्क	5
बुध	5	6,10	कन्या	7
गुरु	11	1,5	वृश्चिक	9
शुक्र	3,4,8	7,11	सिंह	6
शनि	1,12	9	तुला	8
राहु	---	---	वृष	3
केतु	---	2	वृश्चिक	9

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	2	9	---	---	3
चंद्र	2,9,10	4,8	5	6	12	12
मंगल	1,12	9	8	2,9,10	4,8	5
बुध	7	3	6	1,12	9	8
गुरु	1,12	9	8	3,4,8	7,11	6
शुक्र	---	2	9	11	1,5	9
शनि	2,9,10	4,8	5	6	12	12
राहु	2,9,10	4,8	5	1,12	9	8
केतु	5	6,10	7	1,12	9	8

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	126.24	305.72	102.73	153.17	218.40	128.80	186.30	59.15	239.15	221.48	242.91	183.70
सूर्य	--	सप्त	--	--	चतु	युति	तृती	--	--	चतु	पंच	तृती
126.24	0.00	9.99	0.00	0.00	2.53	9.64	3.00	0.00	0.00	0.59	1.93	2.36
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
305.72	9.99	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	8वां	--	--	पंच	--	4था	--	--	पंच	--	4था
102.73	0.00	7.42	0.00	0.00	1.27	0.00	7.82	0.00	0.00	2.84	0.00	5.85
बुध	--	--	--	--	तृती	--	--	--	चतु	--	चतु	--
153.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.60	0.00	0.00	0.00	1.49	0.00	2.99	0.00
गुरु	--	चतु	9वां	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
218.40	0.00	2.29	8.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00
शुक्र	युति	सप्त	--	--	चतु	--	तृती	--	--	चतु	पंच	तृती
128.80	9.64	9.48	0.00	0.00	2.98	0.00	2.38	0.00	0.00	2.29	0.08	0.70
शनि	--	पंच	10वा	--	--	--	--	--	3रा	--	3रा	युति
186.30	0.00	2.97	7.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.32	0.00	9.37	9.63
राहु	--	--	--	चतु	--	--	--	--	सप्त	--	सप्त	पंच
59.15	0.00	0.00	0.00	1.49	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	9.24	1.11
केतु	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति	--
239.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	9.24	0.00
हर्ष	--	चतु	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
221.48	0.00	0.19	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	तृती	--	--	--	--	--	सप्त	युति	--	--	--
242.91	0.00	2.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.24	9.24	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	पंच	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	तृती	--
183.70	0.00	2.59	0.00	0.00	0.00	0.00	9.63	0.00	1.11	0.00	2.94	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	325.68	356.89	28.10	59.31	88.10	116.89	145.68	176.89	208.10	239.31	268.10	296.89
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
126.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.58
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
305.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.02
मंगल	8वां	--	--	--	युति	युति	--	--	--	--	सप्त	सप्त
102.73	2.13	0.00	0.00	0.00	0.39	0.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.39	0.88
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
153.17	7.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.08	0.00	0.73	1.60	0.73	0.00
गुरु	5वां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
218.40	2.37	0.00	4.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.73	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त
128.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.18
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--
186.30	0.00	5.53	0.00	0.00	6.54	0.00	0.00	5.53	0.00	7.44	0.00	0.00
राहु	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--
59.15	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	2.49	1.85	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00
केतु	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
239.15	1.85	2.49	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	2.49
हर्ष	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
221.48	0.00	0.80	1.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.69	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
242.91	0.00	0.00	0.00	9.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.30	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--
183.70	0.00	7.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.57	0.00	1.23	0.32	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	325.68	4.34	34.41	59.31	83.27	110.45	145.68	184.34	214.41	239.31	263.27	290.45
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	--	--	--
126.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.64	2.66	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	--
305.72	0.00	0.00	2.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	8वां	--	--	--	--	युति	--	4था	--	--	--	सप्त
102.73	2.13	0.00	0.00	0.00	0.00	6.91	0.00	6.38	0.00	0.00	0.00	6.91
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--
153.17	7.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.08	0.00	2.84	1.60	0.00	0.00
गुरु	5वां	--	सप्त	--	--	9वां	--	--	युति	--	अष्ट	पंचा
218.40	2.37	0.00	9.14	0.00	0.00	3.04	0.00	0.00	9.14	0.00	0.98	1.00
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	--	अष्टां	--
128.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.18	1.23	0.00	0.67	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	10वा	--	युति	--	3रा	--	--
186.30	0.00	9.79	0.00	0.00	2.05	0.89	0.00	9.79	0.00	7.44	0.00	0.00
राहु	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त	--	--
59.15	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	1.85	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00
केतु	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
239.15	1.85	0.63	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
221.48	0.00	0.00	7.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.38	0.00	0.00	0.00
नेप	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
242.91	0.00	2.79	0.00	9.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.30	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--
183.70	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	1.23	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

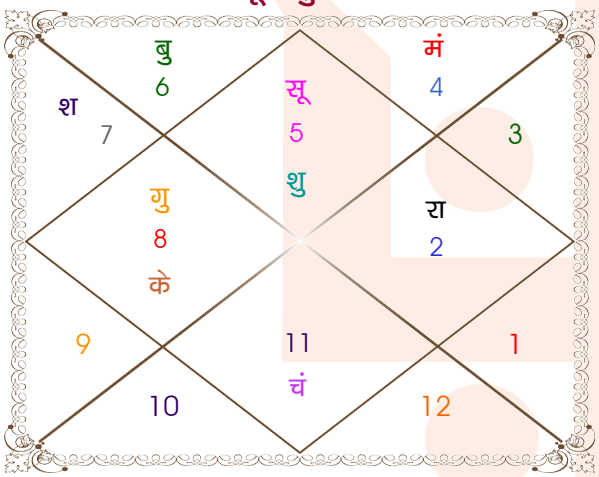

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

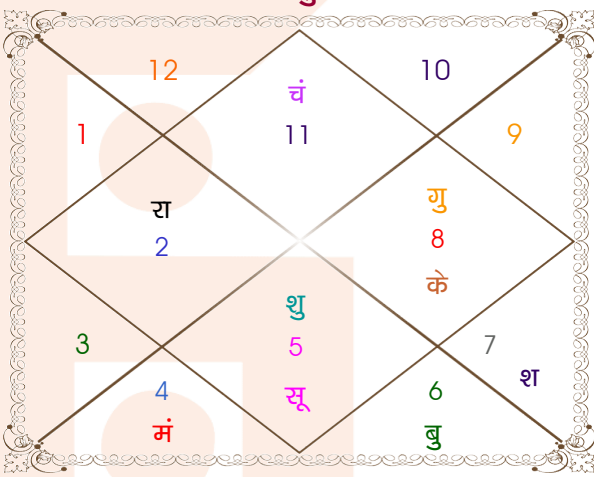

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

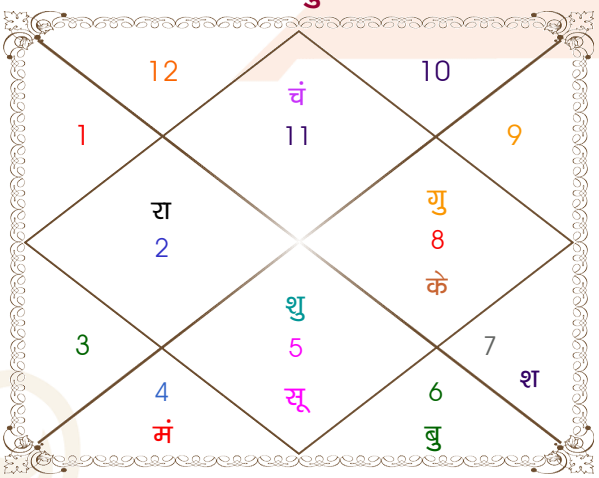

देह विचारः

होरा कुंडली

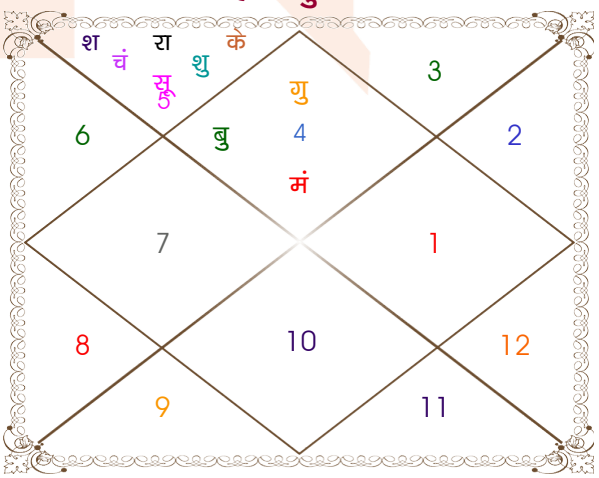

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

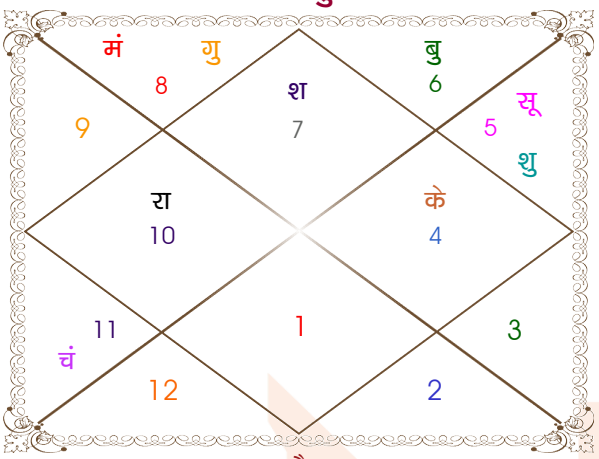

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

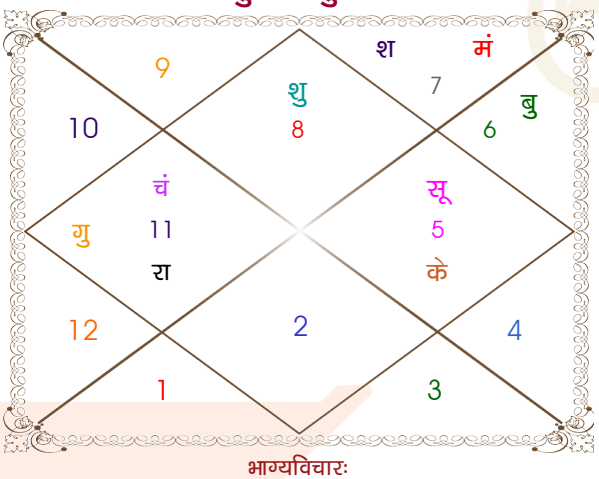

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

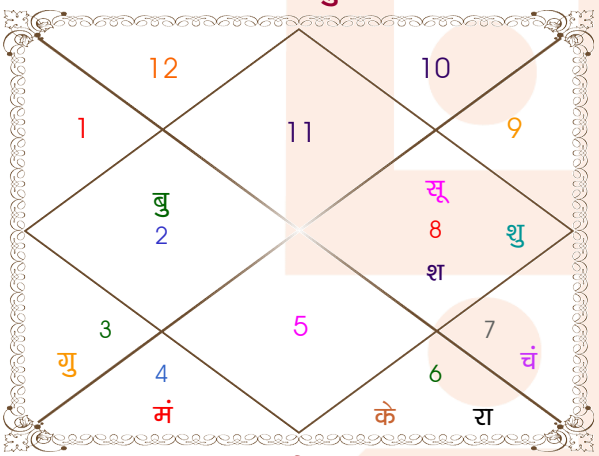

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

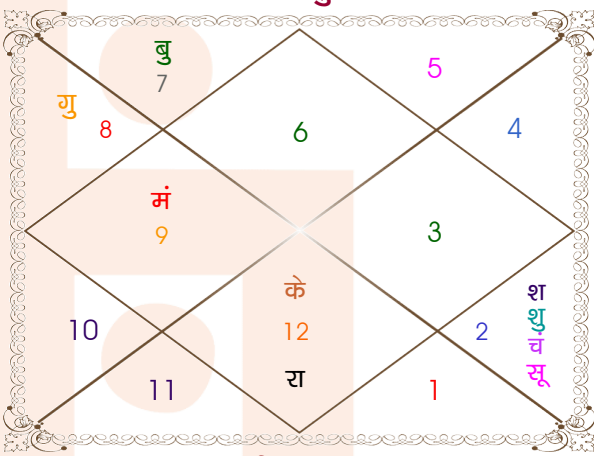

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

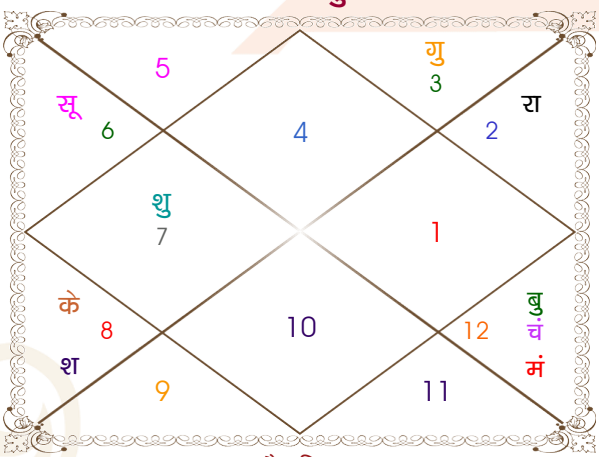

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

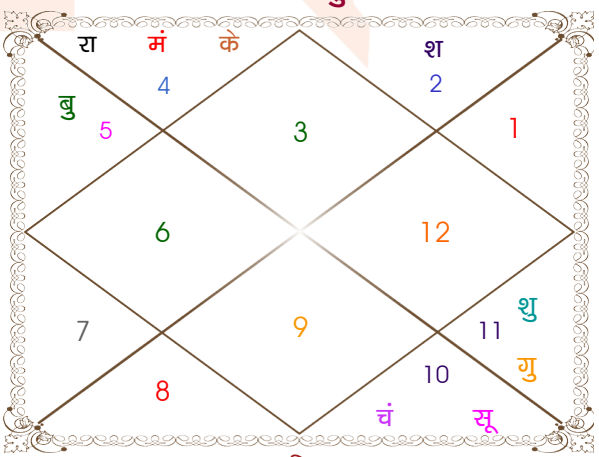

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

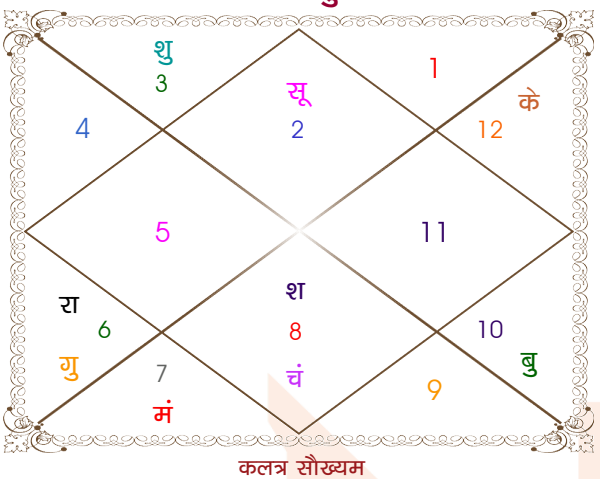

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

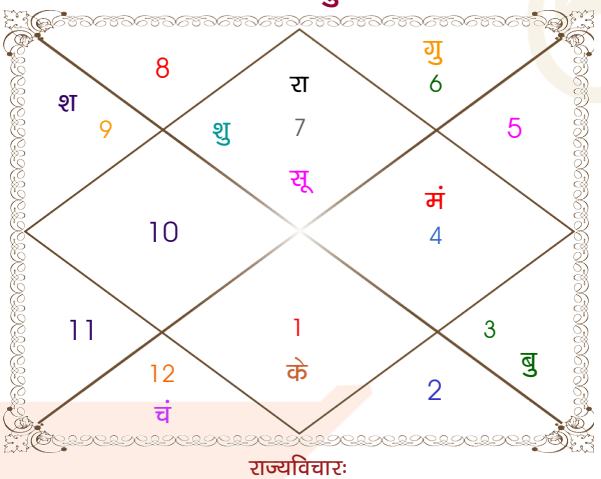

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

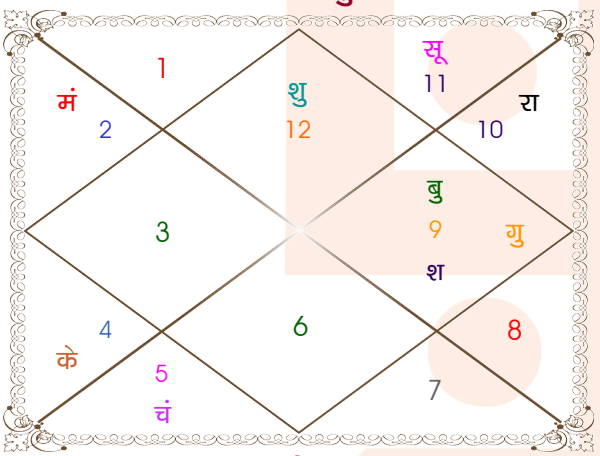

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

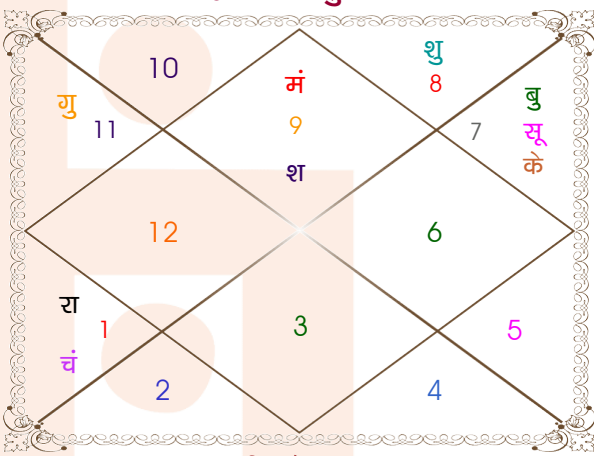

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

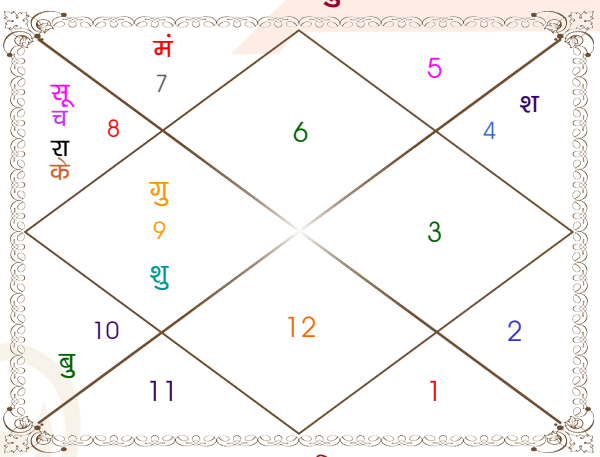

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

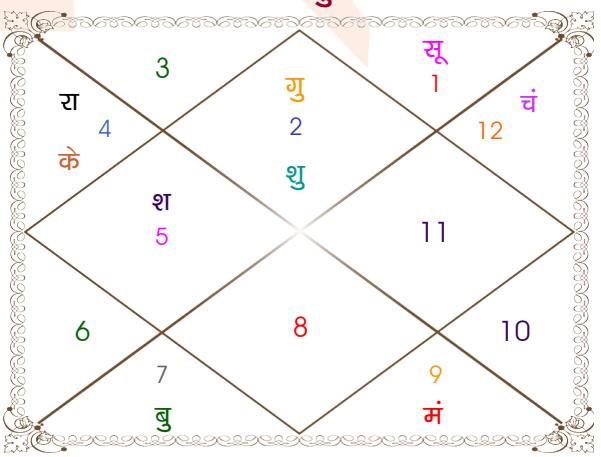

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

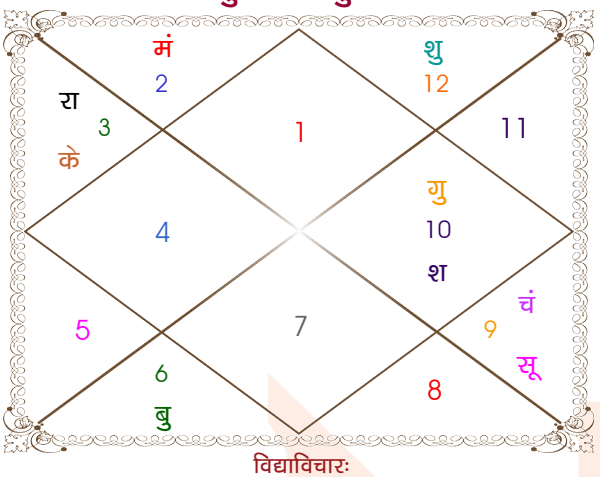

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

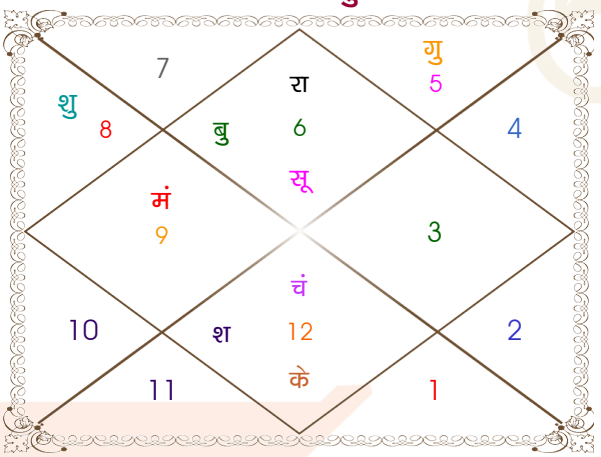

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

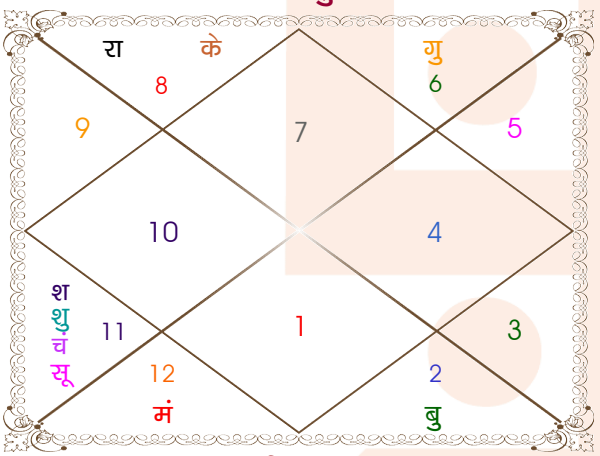

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

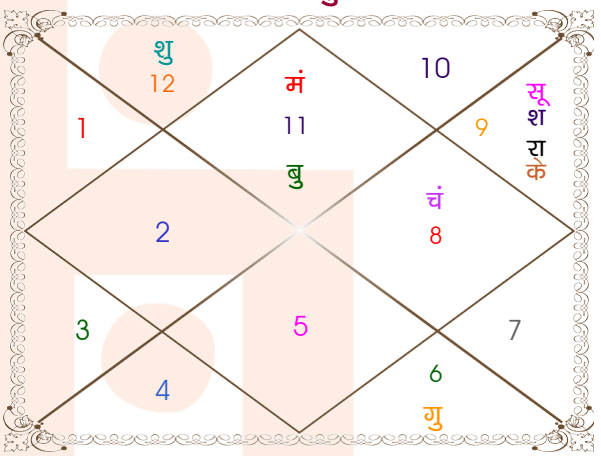

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

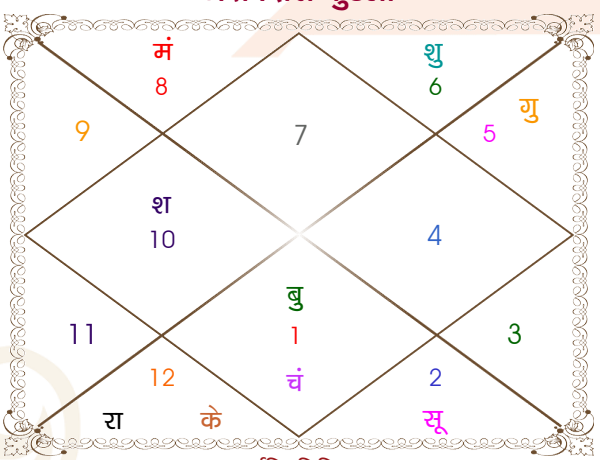

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

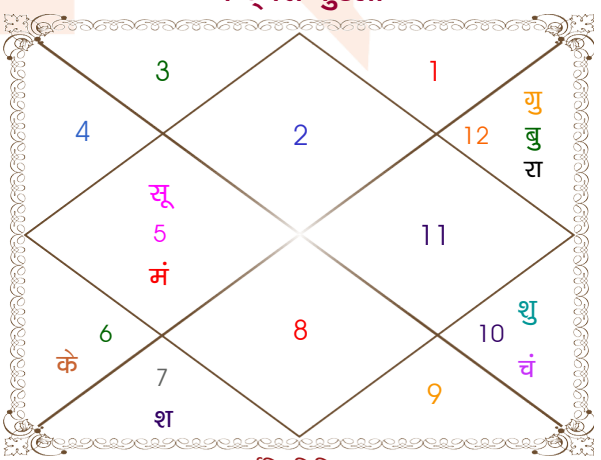

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कुंभ	सिंह	कुंभ	कर्क	कन्या	वृश्चि	सिंह	तुला	वृष	वृश्चि
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	तुला	सिंह	कुंभ	वृश्चि	कन्या	वृश्चि	सिंह	तुला	मक	कर्क
चतुर्थांश	वृश्चि	सिंह	कुंभ	तुला	कन्या	कुंभ	वृश्चि	तुला	कुंभ	सिंह
सप्तमांश	कर्क	कन्या	मीन	मीन	मीन	मिथु	तुला	वृश्चि	वृष	वृश्चि
नवमांश	वृष	वृष	वृश्चि	तुला	मक	कन्या	मिथु	वृश्चि	कन्या	मीन
दशमांश	तुला	तुला	मीन	कर्क	मिथु	कन्या	तुला	धनु	तुला	मेष
द्वादशांश	धनु	तुला	मेष	धनु	तुला	कुंभ	वृश्चि	धनु	मेष	तुला
षोडशांश	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	तुला	मक	धनु	धनु	कर्क	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	वृष	मेष	मीन	धनु	तुला	वृष	वृष	सिंह	कर्क	कर्क
चतुर्विंशांश	मेष	धनु	धनु	वृष	कन्या	मक	मीन	मक	मिथु	मिथु
सप्तविंशांश	कन्या	कन्या	मीन	धनु	कन्या	सिंह	वृश्चि	मीन	कन्या	मीन
त्रिंशांश	तुला	कुंभ	कुंभ	मीन	वृष	कन्या	कुंभ	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
खवेदांश	कुंभ	धनु	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कन्या	मीन	धनु	धनु	धनु
अक्षवेदांश	तुला	वृष	मेष	वृश्चि	मेष	सिंह	कन्या	मक	मीन	मीन
षष्ट्यंश	वृष	सिंह	मक	सिंह	मीन	मीन	मक	तुला	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
गुरु	1 ---	1 ---	3 उत्तम	3 कुसुम
शुक्र	0 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.25	7.30	13.25	16.95	11.30	9.90	15.00	11.65	10.05
सप्तवर्ग	14.00	8.30	12.63	16.45	11.30	11.45	14.20	12.33	10.13
दशवर्ग	15.35	8.43	13.50	16.20	14.23	13.95	14.93	11.43	11.63
षोडशवर्ग	15.53	8.15	13.98	16.43	14.18	13.90	14.60	10.45	10.65

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	सम	सम	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	21	31	5	56	19	16	55
सप्तवर्गज बल	131	41	83	152	75	96	113
ओजयुग्मक बल	15	15	15	0	0	0	15
केन्द्र बल	60	60	15	30	60	60	15
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	15	0	0
कुल स्थान बल	243	147	118	238	169	172	198
कुल दिग्बल	22	22	14	2	24	37	46
नतोन्नत बल	23	37	37	60	23	23	37
पक्ष बल	0	120	0	60	60	60	0
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	90	45	54	32	4	44	45
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	114	307	136	152	207	127	82
कुल चेष्टाबल	0	0	12	44	33	60	19
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	15	-9	4	10	-3	18	-2
कुल षट्बल	454	518	301	471	464	457	352
रूप षट्बल	7.6	8.6	5.0	7.8	7.7	7.6	5.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.4	1.0	1.1	1.2	1.4	1.2
संबंधित पद	1	2	7	6	4	3	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	29.17	43.00	7.94	49.47	24.94	31.02	32.45
कष्ट फल	27.81	2.25	51.12	8.03	33.34	2.12	13.68

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	352	464	301	457	471	518	454	471	457	301	464	352
भावदिग्बल	60	40	10	0	20	40	30	10	20	30	50	20
भावदृष्टि बल	66	77	67	67	35	49	17	1	3	36	15	17
कुल भाव बल	477	580	379	523	526	607	501	482	480	368	528	388
रूप भाव बल	8.0	9.7	6.3	8.7	8.8	10.1	8.3	8.0	8.0	6.1	8.8	6.5
संबंधित पद	9	2	11	5	4	1	6	7	8	12	3	10

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

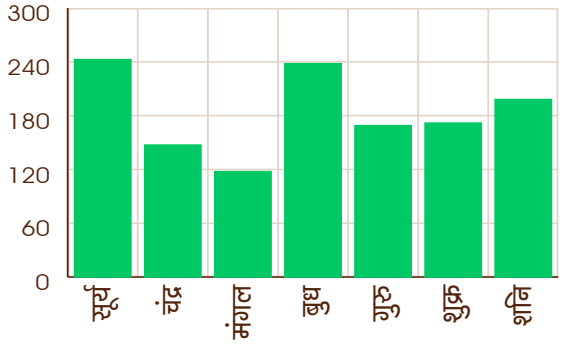

दिग्बल

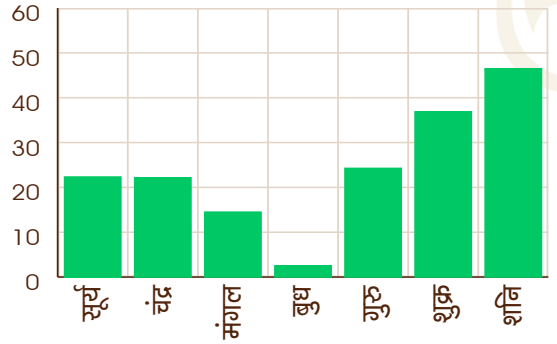

कालबल

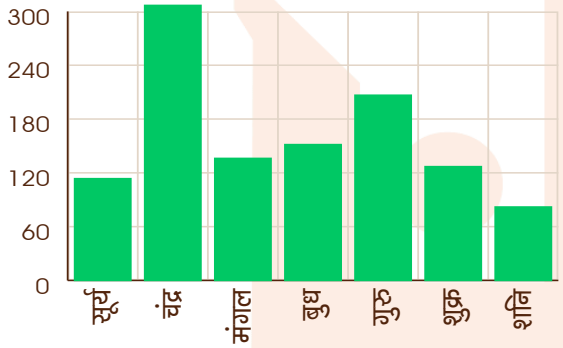

चेष्टाबल

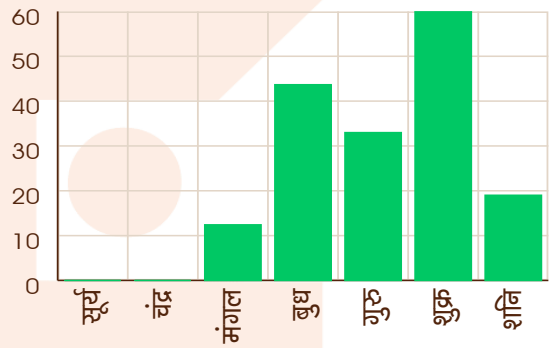

नैसर्गिक बल

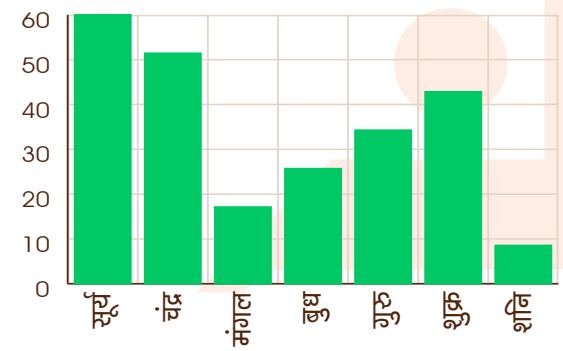

दृग्बल

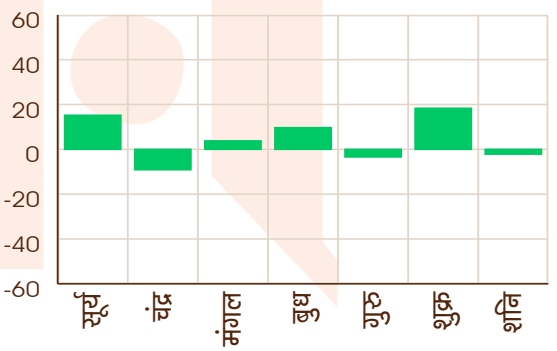

रूप षट्बल

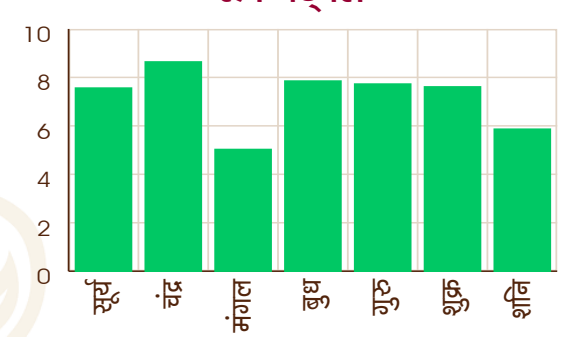

न्यूनतम षट्बल

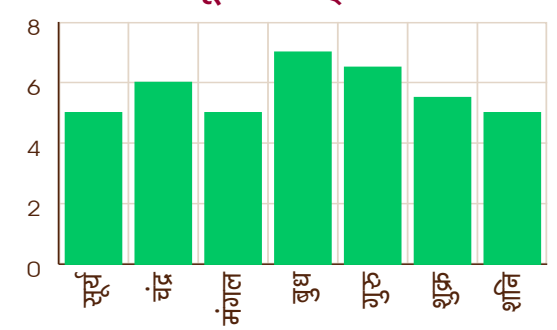

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

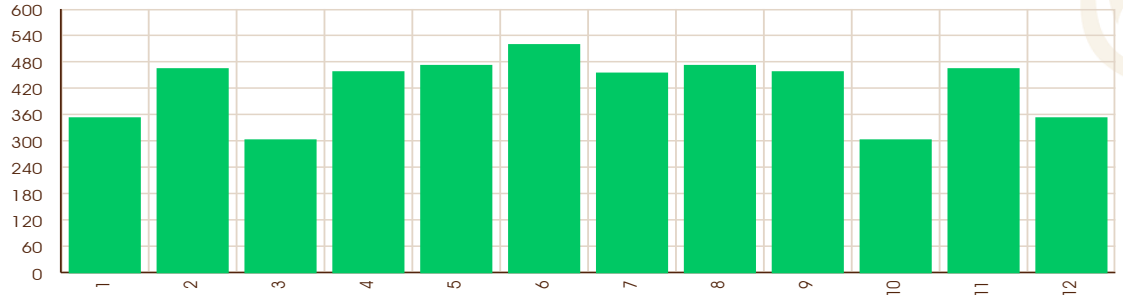

भावदिग्बल

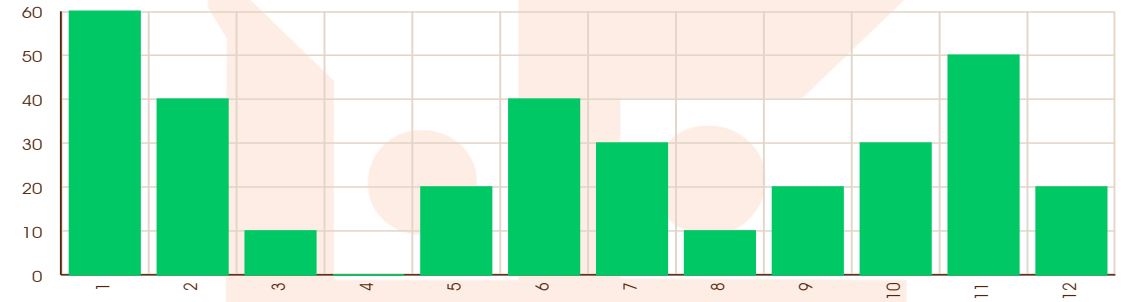

भावदृष्टि बल

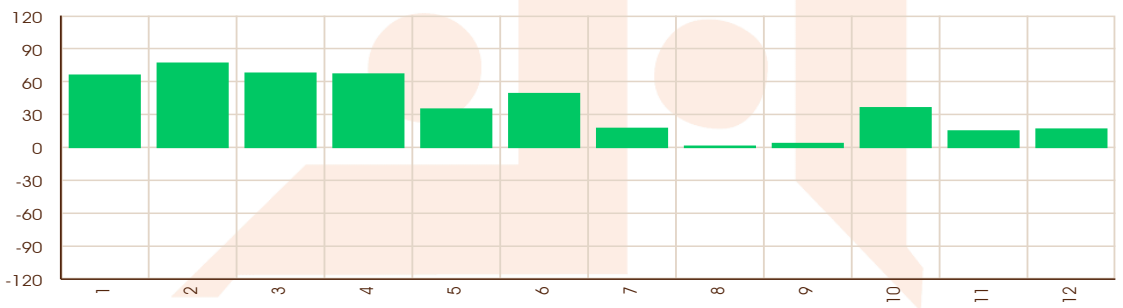

भाव बल

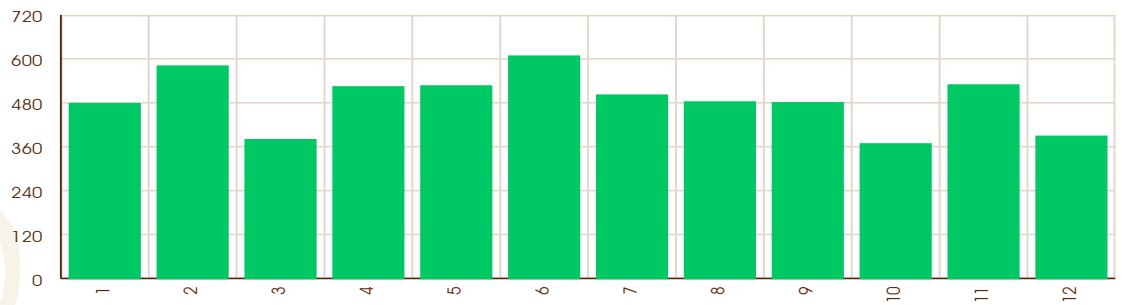

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

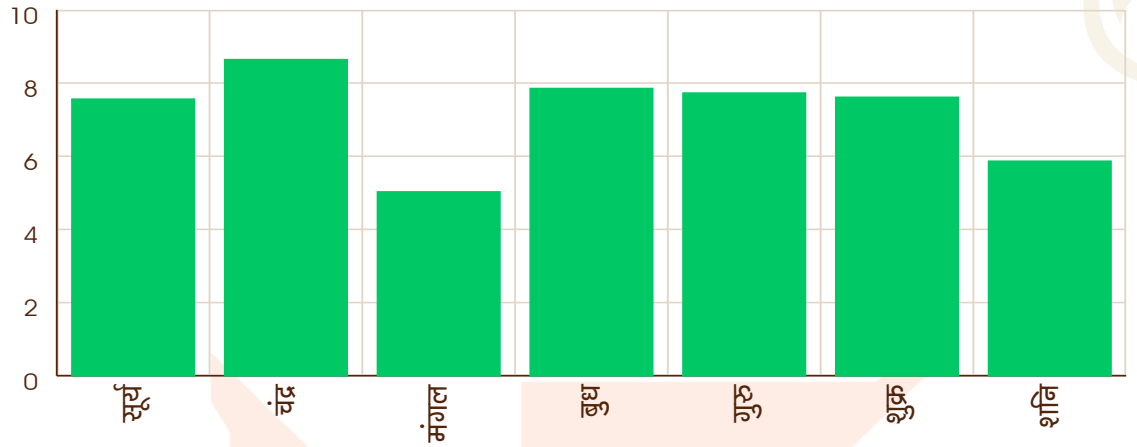

इष्ट - कष्ट फल

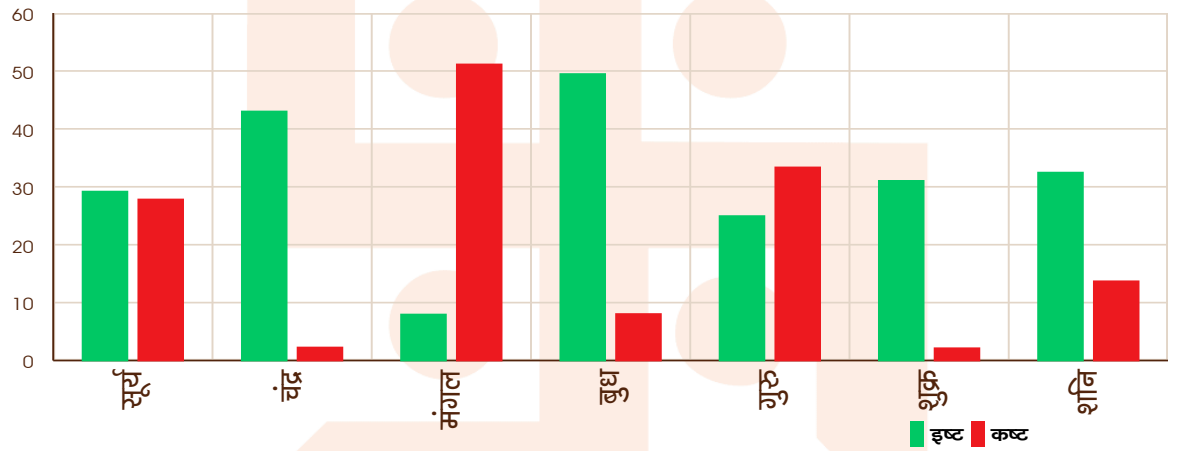

रूप भाव बल

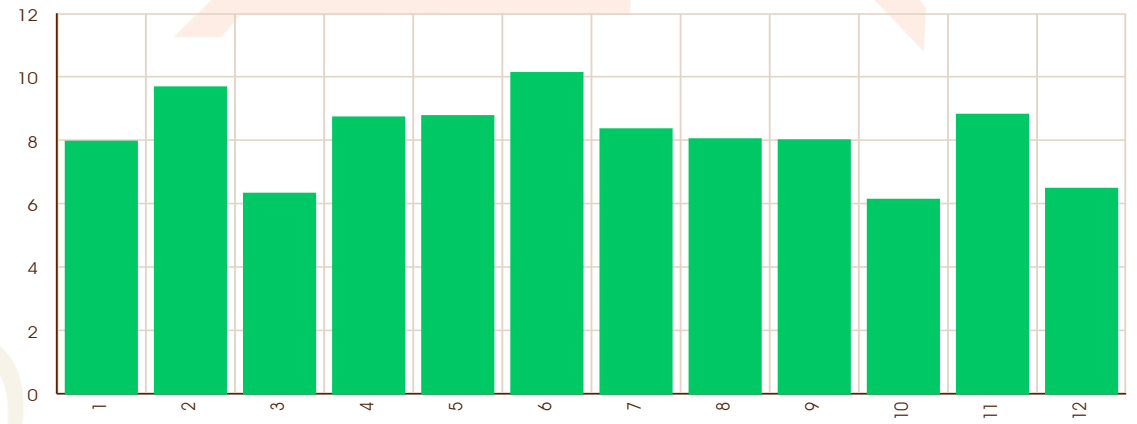

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कुंभ	25:41:01	--	--	पू०भाद्रपद	2	25
गुलिक	गु	मीन	06:08:44	--	--	उ०भाद्रपद	1	26
काल	का	मेष	04:36:12	--	--	अश्विनी	2	1
मृत्यु	मृ	वृष	21:52:29	--	--	रोहिणी	4	4
यमघंटक	यम	मिथु	29:44:01	--	--	पुनर्वसु	3	7
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	11:26:41	--	मूल	आर्द्रा	2	6
धूम	धू	धनु	19:34:39	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
व्यतिपात	व्य	कर्क	10:25:21	--	--	पुष्य	3	8
परिवेश	परि	मक	10:25:21	--	--	श्रवण	1	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	19:34:39	नीच	--	आर्द्रा	4	6
उपकेतु	उप	कर्क	06:14:39	--	मूल	पुष्य	1	8

प्राणपद	:	तुला	10:58:11	कारकाँश लग्न	:	कन्या	22:19:18
भाव लग्न	:	मीन	03:28:49	होरा लग्न	:	तुला	00:43:00
घटी लग्न	:	मिथु	22:25:32	वर्णद लग्न	:	सिंह	26:24:00

उपग्रह कुंडली

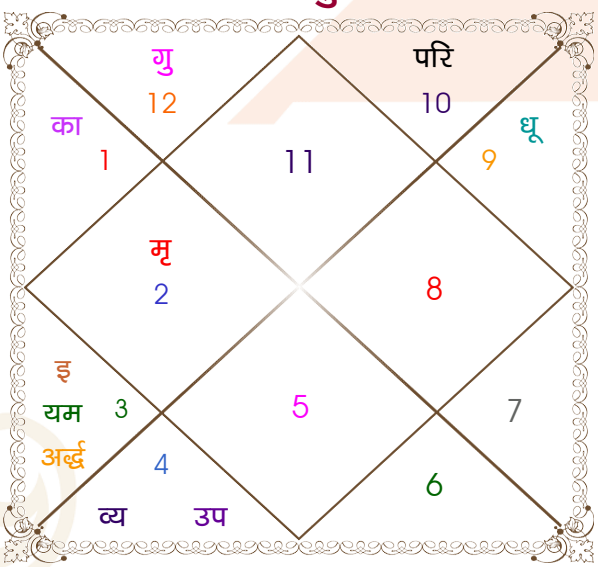

आरूढ़ कुंडली

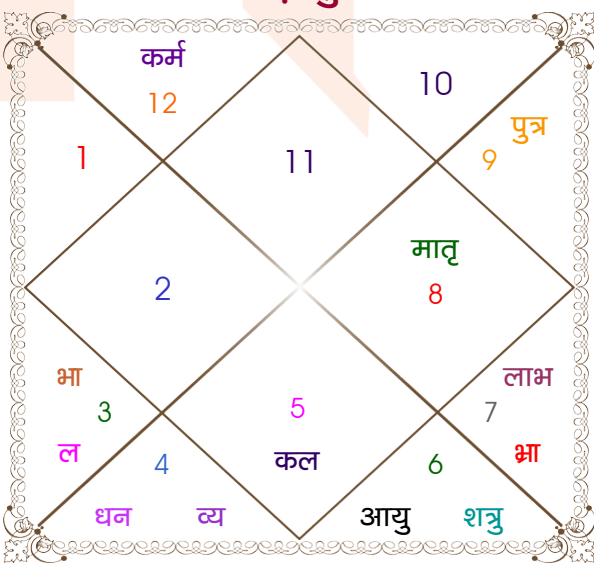

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षन्नाडी चक्र

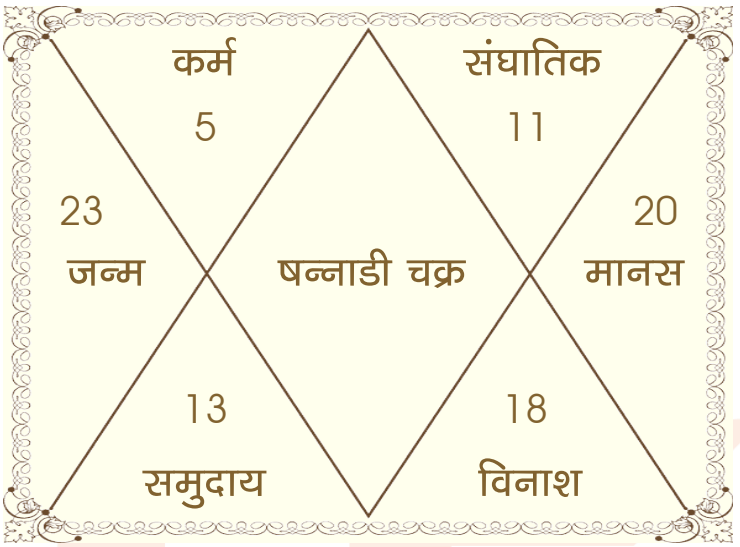

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
लग्न	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
कुल	4	2	2	5	2	5	4	3	6	5	3	7	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	3	5	4	4	3	4	3	3	6	7	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
कुल	6	3	1	4	2	3	5	3	1	5	3	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
कुल	5	4	5	4	4	3	4	5	5	5	6	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
कुल	3	6	4	6	4	3	6	6	3	5	5	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	3	5	4	2	5	3	4	6	3	6	7	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	1	3	4	1	4	3	5	4	4	4	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	3	6	3	2	7	3	4	4	5	7	3	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	4	4	4	3	3	1	3	4	1	4	3	39
गुरु	3	6	6	3	5	5	5	3	6	4	6	4	56
मंगल	5	3	3	6	3	1	4	2	3	5	3	1	39
सूर्य	6	5	3	7	4	2	2	5	2	5	4	3	48
शुक्र	3	6	7	4	3	5	4	2	5	3	4	6	52
बुध	5	5	5	6	4	5	4	5	4	4	3	4	54
चंद्र	5	4	4	3	4	3	3	6	7	2	5	3	49
बिन्दु	32	33	32	33	26	24	23	26	31	24	29	24	337
रेखा	24	23	24	23	30	32	33	30	25	32	27	32	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	3	1	0	2	0	0	1	0	3	0	15
गुरु	0	2	1	0	2	1	0	0	3	0	1	1	11
मंगल	2	2	0	5	0	0	1	1	0	4	0	0	15
सूर्य	4	3	1	4	2	0	0	2	0	3	2	0	21
शुक्र	0	3	3	2	0	2	0	0	2	0	0	4	16
बुध	1	1	2	2	0	1	1	1	0	0	0	0	9
चंद्र	1	2	1	0	0	1	0	3	3	0	2	0	13
रेखा	10	16	11	14	4	7	2	7	9	7	8	5	100

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	1	1	0	2	0	0	1	0	3	0	13
गुरु	0	2	0	0	2	1	0	0	2	0	1	1	9
मंगल	1	1	0	5	0	0	1	1	0	4	0	0	13
सूर्य	2	3	1	4	2	0	0	2	0	1	2	0	17
शुक्र	0	3	1	2	0	2	0	0	2	0	0	2	12
बुध	0	0	1	2	0	1	1	1	0	0	0	0	6
चंद्र	0	2	0	0	0	1	0	3	3	0	2	0	11
रेखा	5	14	4	14	4	7	2	7	8	5	8	3	81

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	131	98	72	36	86	98	108
ग्रह पिंड	86	45	55	36	34	26	33
शोध्य पिंड	217	143	127	72	120	124	141

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

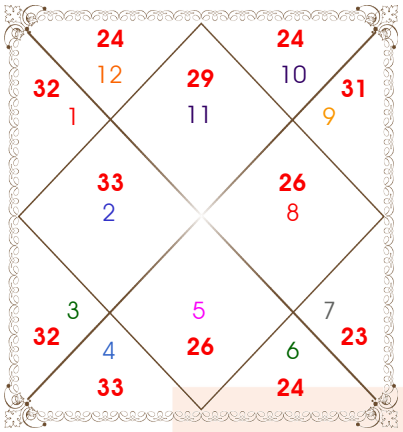

सूर्य का अष्टकवर्ग

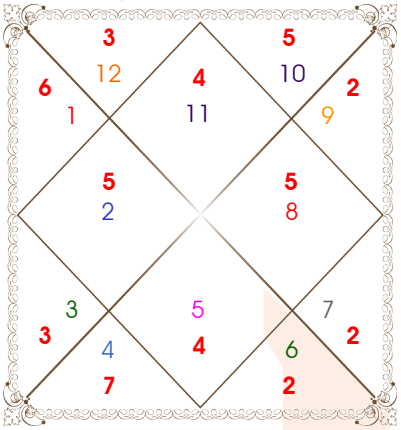

चंद्र का अष्टकवर्ग

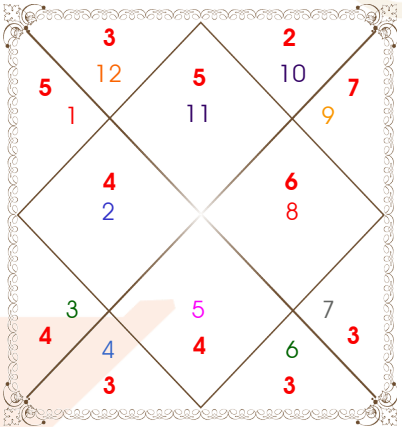

मंगल का अष्टकवर्ग

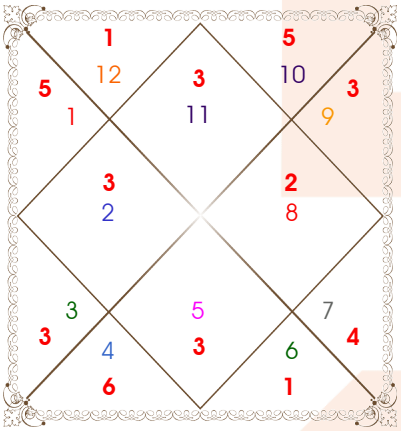

बुध का अष्टकवर्ग

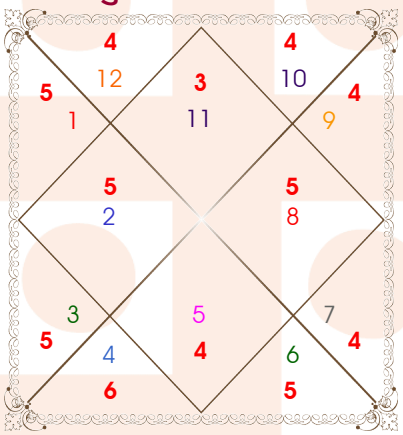

गुरू का अष्टकवर्ग

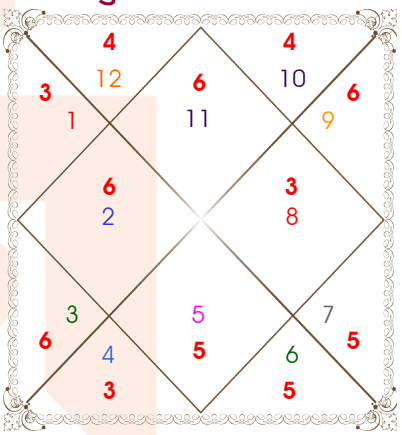

शुक्र का अष्टकवर्ग

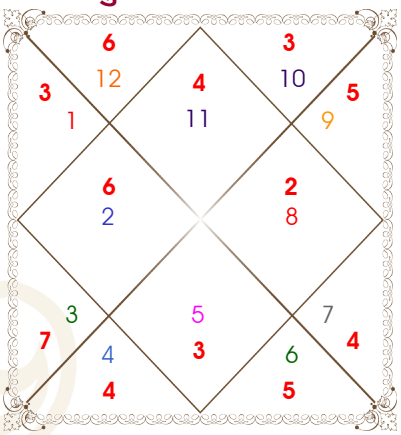

शनि का अष्टकवर्ग

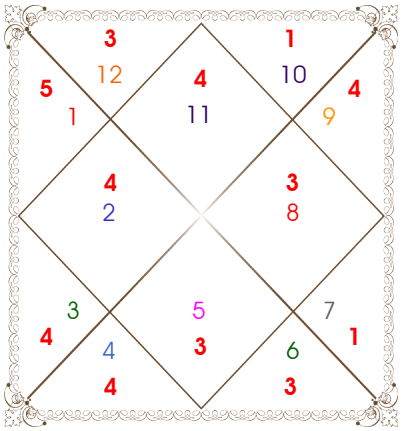

लग्न का अष्टकवर्ग

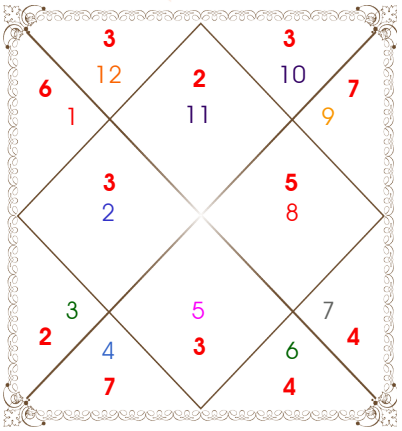

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

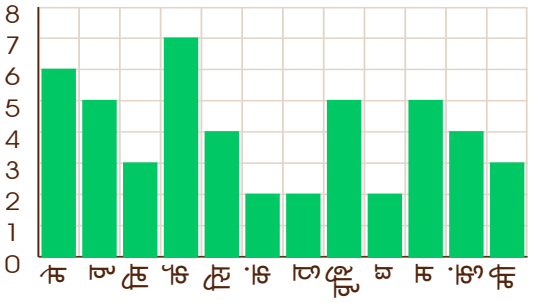

चन्द्र

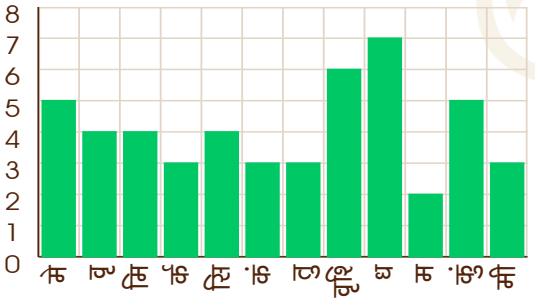

मंगल

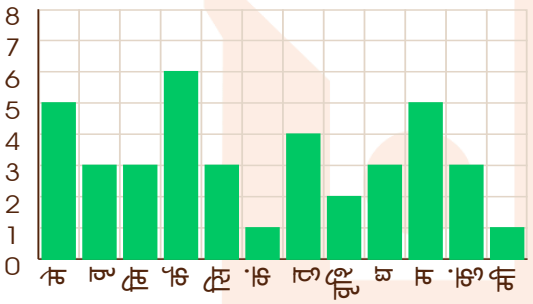

बुध

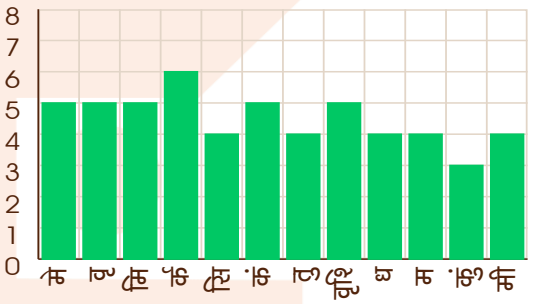

गुरु

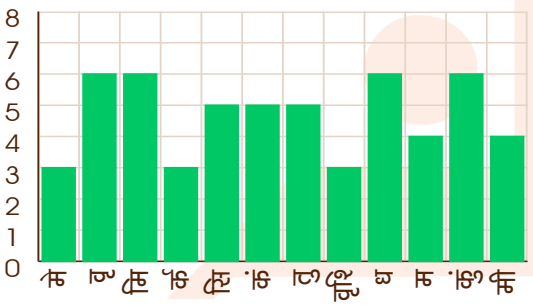

शुक्र

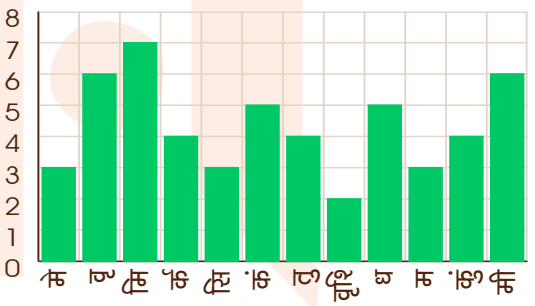

शनि

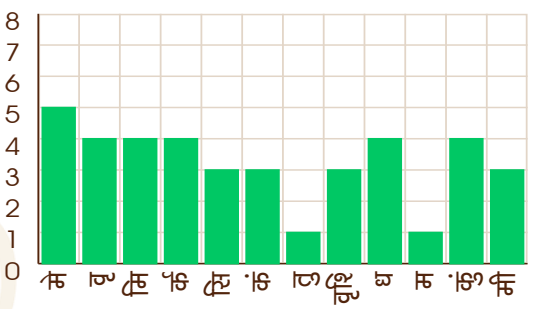

लग्न

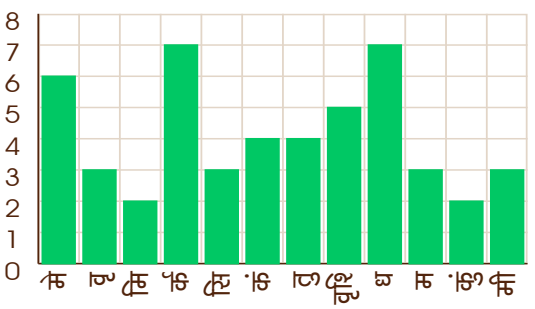

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

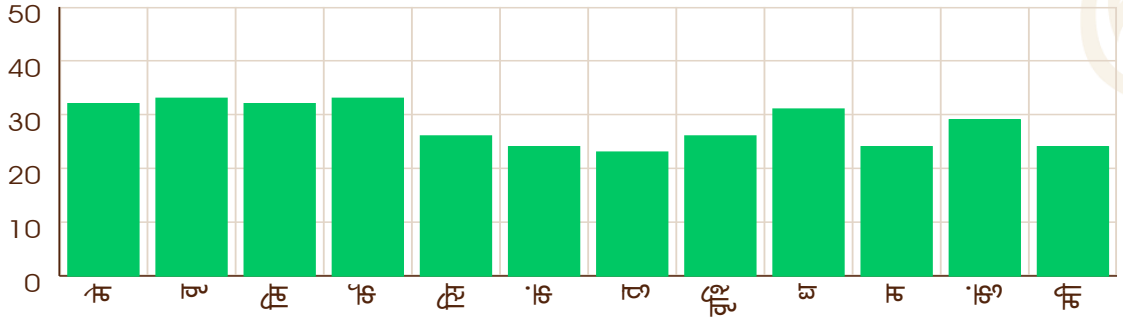

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

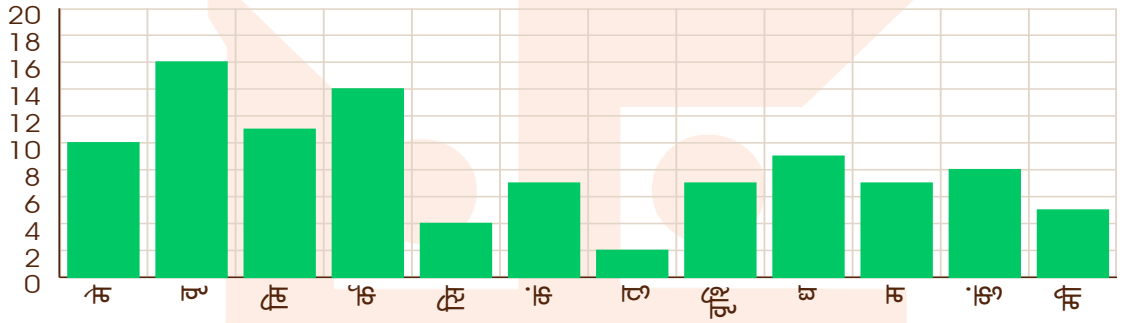

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

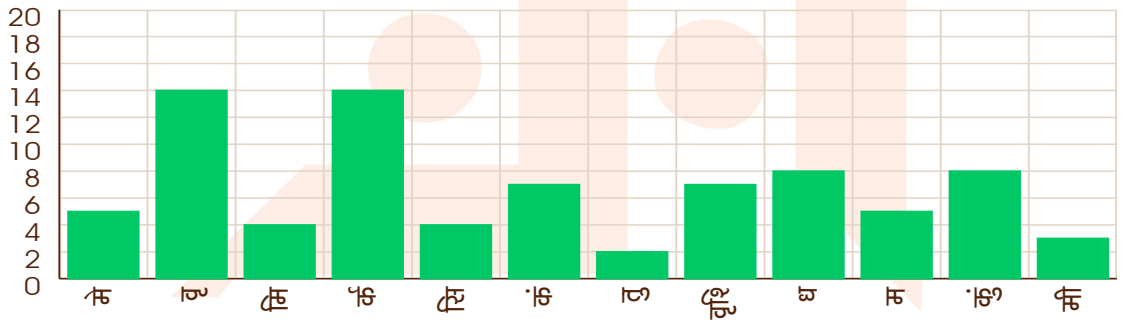

शोध्य पिंड

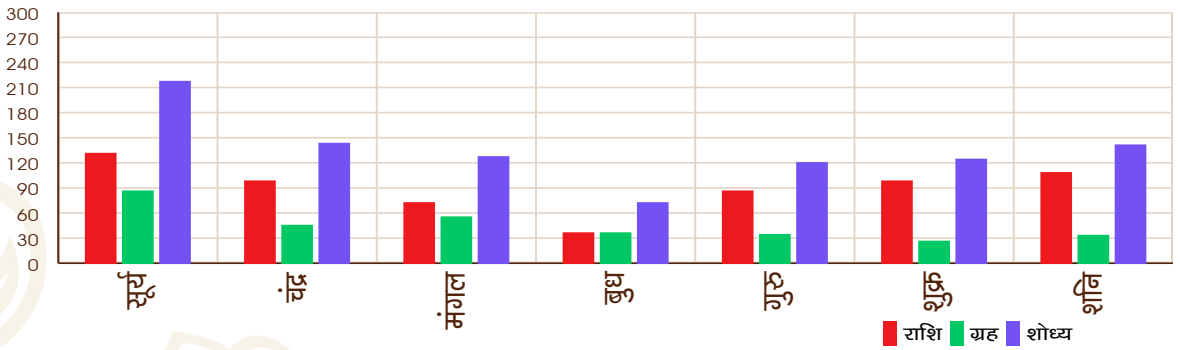

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 5 मास 29 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
23/08/1983		21/02/1984		20/02/2002		20/02/2018		20/02/2037	
21/02/1984		20/02/2002		20/02/2018		20/02/2037		20/02/2054	
	00/00/0000	राहु	03/11/1986	गुरु	09/04/2004	शनि	23/02/2021	बुध	19/07/2039
	00/00/0000	गुरु	28/03/1989	शनि	22/10/2006	बुध	03/11/2023	केतु	16/07/2040
	00/00/0000	शनि	02/02/1992	बुध	26/01/2009	केतु	12/12/2024	शुक्र	17/05/2043
	00/00/0000	बुध	22/08/1994	केतु	02/01/2010	शुक्र	11/02/2028	सूर्य	22/03/2044
	00/00/0000	केतु	09/09/1995	शुक्र	02/09/2012	सूर्य	23/01/2029	चंद्र	21/08/2045
	00/00/0000	शुक्र	09/09/1998	सूर्य	22/06/2013	चंद्र	25/08/2030	मंगल	19/08/2046
	00/00/0000	सूर्य	04/08/1999	चंद्र	22/10/2014	मंगल	04/10/2031	राहु	07/03/2049
	23/08/1983	चंद्र	02/02/2001	मंगल	27/09/2015	राहु	09/08/2034	गुरु	13/06/2051
चंद्र	21/02/1984	मंगल	20/02/2002	राहु	20/02/2018	गुरु	20/02/2037	शनि	20/02/2054

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
20/02/2054		20/02/2061		20/02/2081		20/02/2087		20/02/2097	
20/02/2061		20/02/2081		20/02/2087		20/02/2097		24/08/2103	
केतु	19/07/2054	शुक्र	21/06/2064	सूर्य	09/06/2081	चंद्र	22/12/2087	मंगल	19/07/2097
शुक्र	18/09/2055	सूर्य	22/06/2065	चंद्र	09/12/2081	मंगल	22/07/2088	राहु	06/08/2098
सूर्य	24/01/2056	चंद्र	20/02/2067	मंगल	16/04/2082	राहु	21/01/2090	गुरु	13/07/2099
चंद्र	24/08/2056	मंगल	21/04/2068	राहु	11/03/2083	गुरु	23/05/2091	शनि	22/08/2100
मंगल	20/01/2057	राहु	22/04/2071	गुरु	28/12/2083	शनि	21/12/2092	बुध	19/08/2101
राहु	08/02/2058	गुरु	21/12/2073	शनि	09/12/2084	बुध	22/05/2094	केतु	16/01/2102
गुरु	15/01/2059	शनि	20/02/2077	बुध	15/10/2085	केतु	21/12/2094	शुक्र	18/03/2103
शनि	24/02/2060	बुध	22/12/2079	केतु	20/02/2086	शुक्र	21/08/2096	सूर्य	23/07/2103
बुध	20/02/2061	केतु	20/02/2081	शुक्र	20/02/2087	सूर्य	20/02/2097	चंद्र	24/08/2103

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 0 वर्ष 5 मा 28 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
23/08/1983		21/02/1984		03/11/1986		28/03/1989		02/02/1992	
21/02/1984		03/11/1986		28/03/1989		02/02/1992		22/08/1994	
	00/00/0000	राहु	17/07/1984	गुरु	28/02/1987	शनि	09/09/1989	बुध	13/06/1992
	23/08/1983	गुरु	26/11/1984	शनि	16/07/1987	बुध	04/02/1990	केतु	07/08/1992
राहु	23/09/1983	शनि	01/05/1985	बुध	18/11/1987	केतु	05/04/1990	शुक्र	09/01/1993
गुरु	21/10/1983	बुध	18/09/1985	केतु	08/01/1988	शुक्र	26/09/1990	सूर्य	24/02/1993
शनि	24/11/1983	केतु	14/11/1985	शुक्र	02/06/1988	सूर्य	17/11/1990	चंद्र	13/05/1993
बुध	24/12/1983	शुक्र	28/04/1986	सूर्य	16/07/1988	चंद्र	12/02/1991	मंगल	06/07/1993
केतु	05/01/1984	सूर्य	16/06/1986	चंद्र	27/09/1988	मंगल	13/04/1991	राहु	23/11/1993
शुक्र	10/02/1984	चंद्र	06/09/1986	मंगल	17/11/1988	राहु	16/09/1991	गुरु	27/03/1994
सूर्य	21/02/1984	मंगल	03/11/1986	राहु	28/03/1989	गुरु	02/02/1992	शनि	22/08/1994

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
22/08/1994		09/09/1995		09/09/1998		04/08/1999		02/02/2001	
09/09/1995		09/09/1998		04/08/1999		02/02/2001		20/02/2002	
केतु	13/09/1994	शुक्र	10/03/1996	सूर्य	25/09/1998	चंद्र	18/09/1999	मंगल	24/02/2001
शुक्र	16/11/1994	सूर्य	04/05/1996	चंद्र	23/10/1998	मंगल	20/10/1999	राहु	22/04/2001
सूर्य	05/12/1994	चंद्र	03/08/1996	मंगल	11/11/1998	राहु	10/01/2000	गुरु	13/06/2001
चंद्र	06/01/1995	मंगल	06/10/1996	राहु	30/12/1998	गुरु	23/03/2000	शनि	12/08/2001
मंगल	28/01/1995	राहु	19/03/1997	गुरु	12/02/1999	शनि	18/06/2000	बुध	06/10/2001
राहु	27/03/1995	गुरु	12/08/1997	शनि	05/04/1999	बुध	04/09/2000	केतु	28/10/2001
गुरु	17/05/1995	शनि	02/02/1998	बुध	22/05/1999	केतु	06/10/2000	शुक्र	31/12/2001
शनि	17/07/1995	बुध	07/07/1998	केतु	10/06/1999	शुक्र	05/01/2001	सूर्य	19/01/2002
बुध	09/09/1995	केतु	09/09/1998	शुक्र	04/08/1999	सूर्य	02/02/2001	चंद्र	20/02/2002

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
20/02/2002		09/04/2004		22/10/2006		26/01/2009		02/01/2010	
09/04/2004		22/10/2006		26/01/2009		02/01/2010		02/09/2012	
गुरु	04/06/2002	शनि	03/09/2004	बुध	16/02/2007	केतु	15/02/2009	शुक्र	14/06/2010
शनि	05/10/2002	बुध	12/01/2005	केतु	05/04/2007	शुक्र	13/04/2009	सूर्य	01/08/2010
बुध	24/01/2003	केतु	07/03/2005	शुक्र	21/08/2007	सूर्य	30/04/2009	चंद्र	22/10/2010
केतु	10/03/2003	शुक्र	08/08/2005	सूर्य	01/10/2007	चंद्र	29/05/2009	मंगल	17/12/2010
शुक्र	18/07/2003	सूर्य	23/09/2005	चंद्र	09/12/2007	मंगल	17/06/2009	राहु	12/05/2011
सूर्य	26/08/2003	चंद्र	09/12/2005	मंगल	27/01/2008	राहु	08/08/2009	गुरु	19/09/2011
चंद्र	30/10/2003	मंगल	01/02/2006	राहु	30/05/2008	गुरु	22/09/2009	शनि	21/02/2012
मंगल	14/12/2003	राहु	20/06/2006	गुरु	17/09/2008	शनि	15/11/2009	बुध	08/07/2012
राहु	09/04/2004	गुरु	22/10/2006	शनि	26/01/2009	बुध	02/01/2010	केतु	02/09/2012

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
02/09/2012		22/06/2013		22/10/2014		27/09/2015		20/02/2018	
22/06/2013		22/10/2014		27/09/2015		20/02/2018		23/02/2021	
सूर्य	17/09/2012	चंद्र	01/08/2013	मंगल	10/11/2014	राहु	06/02/2016	शनि	13/08/2018
चंद्र	11/10/2012	मंगल	30/08/2013	राहु	01/01/2015	गुरु	02/06/2016	बुध	16/01/2019
मंगल	28/10/2012	राहु	11/11/2013	गुरु	15/02/2015	शनि	19/10/2016	केतु	21/03/2019
राहु	11/12/2012	गुरु	15/01/2014	शनि	10/04/2015	बुध	20/02/2017	शुक्र	20/09/2019
गुरु	19/01/2013	शनि	02/04/2014	बुध	28/05/2015	केतु	12/04/2017	सूर्य	14/11/2019
शनि	06/03/2013	बुध	10/06/2014	केतु	17/06/2015	शुक्र	05/09/2017	चंद्र	13/02/2020
बुध	17/04/2013	केतु	08/07/2014	शुक्र	13/08/2015	सूर्य	19/10/2017	मंगल	18/04/2020
केतु	04/05/2013	शुक्र	27/09/2014	सूर्य	30/08/2015	चंद्र	31/12/2017	राहु	29/09/2020
शुक्र	22/06/2013	सूर्य	22/10/2014	चंद्र	27/09/2015	मंगल	20/02/2018	गुरु	23/02/2021

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
23/02/2021		03/11/2023		12/12/2024		11/02/2028		23/01/2029	
03/11/2023		12/12/2024		11/02/2028		23/01/2029		25/08/2030	
बुध	12/07/2021	केतु	27/11/2023	शुक्र	23/06/2025	सूर्य	29/02/2028	चंद्र	13/03/2029
केतु	07/09/2021	शुक्र	02/02/2024	सूर्य	19/08/2025	चंद्र	29/03/2028	मंगल	15/04/2029
शुक्र	18/02/2022	सूर्य	22/02/2024	चंद्र	24/11/2025	मंगल	18/04/2028	राहु	11/07/2029
सूर्य	08/04/2022	चंद्र	27/03/2024	मंगल	30/01/2026	राहु	09/06/2028	गुरु	26/09/2029
चंद्र	29/06/2022	मंगल	20/04/2024	राहु	23/07/2026	गुरु	25/07/2028	शनि	27/12/2029
मंगल	26/08/2022	राहु	19/06/2024	गुरु	24/12/2026	शनि	18/09/2028	बुध	19/03/2030
राहु	20/01/2023	गुरु	12/08/2024	शनि	25/06/2027	बुध	06/11/2028	केतु	21/04/2030
गुरु	31/05/2023	शनि	15/10/2024	बुध	06/12/2027	केतु	27/11/2028	शुक्र	27/07/2030
शनि	03/11/2023	बुध	12/12/2024	केतु	11/02/2028	शुक्र	23/01/2029	सूर्य	25/08/2030

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
25/08/2030		04/10/2031		09/08/2034		20/02/2037		19/07/2039	
04/10/2031		09/08/2034		20/02/2037		19/07/2039		16/07/2040	
मंगल	17/09/2030	राहु	08/03/2032	गुरु	11/12/2034	बुध	24/06/2037	केतु	10/08/2039
राहु	17/11/2030	गुरु	24/07/2032	शनि	06/05/2035	केतु	15/08/2037	शुक्र	09/10/2039
गुरु	10/01/2031	शनि	05/01/2033	बुध	14/09/2035	शुक्र	08/01/2038	सूर्य	27/10/2039
शनि	15/03/2031	बुध	02/06/2033	केतु	07/11/2035	सूर्य	21/02/2038	चंद्र	26/11/2039
बुध	11/05/2031	केतु	01/08/2033	शुक्र	10/04/2036	चंद्र	06/05/2038	मंगल	17/12/2039
केतु	04/06/2031	शुक्र	22/01/2034	सूर्य	26/05/2036	मंगल	26/06/2038	राहु	10/02/2040
शुक्र	11/08/2031	सूर्य	15/03/2034	चंद्र	11/08/2036	राहु	05/11/2038	गुरु	29/03/2040
सूर्य	31/08/2031	चंद्र	10/06/2034	मंगल	04/10/2036	गुरु	02/03/2039	शनि	25/05/2040
चंद्र	04/10/2031	मंगल	09/08/2034	राहु	20/02/2037	शनि	19/07/2039	बुध	16/07/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
16/07/2040		17/05/2043		22/03/2044		21/08/2045		19/08/2046	
17/05/2043		22/03/2044		21/08/2045		19/08/2046		07/03/2049	
शुक्र	04/01/2041	सूर्य	01/06/2043	चंद्र	04/05/2044	मंगल	12/09/2045	राहु	05/01/2047
सूर्य	25/02/2041	चंद्र	27/06/2043	मंगल	03/06/2044	राहु	05/11/2045	गुरु	10/05/2047
चंद्र	22/05/2041	मंगल	15/07/2043	राहु	20/08/2044	गुरु	23/12/2045	शनि	04/10/2047
मंगल	21/07/2041	राहु	31/08/2043	गुरु	28/10/2044	शनि	19/02/2046	बुध	13/02/2048
राहु	24/12/2041	गुरु	11/10/2043	शनि	18/01/2045	बुध	11/04/2046	केतु	07/04/2048
गुरु	11/05/2042	शनि	29/11/2043	बुध	01/04/2045	केतु	02/05/2046	शुक्र	09/09/2048
शनि	22/10/2042	बुध	12/01/2044	केतु	01/05/2045	शुक्र	01/07/2046	सूर्य	26/10/2048
बुध	17/03/2043	केतु	30/01/2044	शुक्र	27/07/2045	सूर्य	19/07/2046	चंद्र	12/01/2049
केतु	17/05/2043	शुक्र	22/03/2044	सूर्य	21/08/2045	चंद्र	19/08/2046	मंगल	07/03/2049

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
07/03/2049		13/06/2051		20/02/2054		19/07/2054		18/09/2055	
13/06/2051		20/02/2054		19/07/2054		18/09/2055		24/01/2056	
गुरु	25/06/2049	शनि	16/11/2051	केतु	01/03/2054	शुक्र	28/09/2054	सूर्य	25/09/2055
शनि	03/11/2049	बुध	03/04/2052	शुक्र	26/03/2054	सूर्य	20/10/2054	चंद्र	05/10/2055
बुध	01/03/2050	केतु	30/05/2052	सूर्य	02/04/2054	चंद्र	24/11/2054	मंगल	13/10/2055
केतु	18/04/2050	शुक्र	10/11/2052	चंद्र	14/04/2054	मंगल	19/12/2054	राहु	01/11/2055
शुक्र	03/09/2050	सूर्य	29/12/2052	मंगल	23/04/2054	राहु	21/02/2055	गुरु	18/11/2055
सूर्य	14/10/2050	चंद्र	21/03/2053	राहु	16/05/2054	गुरु	19/04/2055	शनि	08/12/2055
चंद्र	22/12/2050	मंगल	17/05/2053	गुरु	04/06/2054	शनि	25/06/2055	बुध	26/12/2055
मंगल	09/02/2051	राहु	12/10/2053	शनि	28/06/2054	बुध	24/08/2055	केतु	03/01/2056
राहु	13/06/2051	गुरु	20/02/2054	बुध	19/07/2054	केतु	18/09/2055	शुक्र	24/01/2056

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
24/01/2056		24/08/2056		20/01/2057		08/02/2058		15/01/2059	
24/08/2056		20/01/2057		08/02/2058		15/01/2059		24/02/2060	
चंद्र	11/02/2056	मंगल	02/09/2056	राहु	19/03/2057	गुरु	25/03/2058	शनि	20/03/2059
मंगल	23/02/2056	राहु	24/09/2056	गुरु	09/05/2057	शनि	18/05/2058	बुध	16/05/2059
राहु	26/03/2056	गुरु	14/10/2056	शनि	09/07/2057	बुध	06/07/2058	केतु	09/06/2059
गुरु	24/04/2056	शनि	07/11/2056	बुध	01/09/2057	केतु	25/07/2058	शुक्र	15/08/2059
शनि	27/05/2056	बुध	28/11/2056	केतु	23/09/2057	शुक्र	20/09/2058	सूर्य	05/09/2059
बुध	27/06/2056	केतु	07/12/2056	शुक्र	26/11/2057	सूर्य	07/10/2058	चंद्र	08/10/2059
केतु	09/07/2056	शुक्र	31/12/2056	सूर्य	16/12/2057	चंद्र	05/11/2058	मंगल	01/11/2059
शुक्र	14/08/2056	सूर्य	08/01/2057	चंद्र	16/01/2058	मंगल	25/11/2058	राहु	01/01/2060
सूर्य	24/08/2056	चंद्र	20/01/2057	मंगल	08/02/2058	राहु	15/01/2059	गुरु	24/02/2060

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
24/02/2060		20/02/2061		21/06/2064		22/06/2065		20/02/2067	
20/02/2061		21/06/2064		22/06/2065		20/02/2067		21/04/2068	
बुध	15/04/2060	शुक्र	11/09/2061	सूर्य	10/07/2064	चंद्र	11/08/2065	मंगल	17/03/2067
केतु	06/05/2060	सूर्य	11/11/2061	चंद्र	09/08/2064	मंगल	16/09/2065	राहु	20/05/2067
शुक्र	05/07/2060	चंद्र	20/02/2062	मंगल	30/08/2064	राहु	16/12/2065	गुरु	16/07/2067
सूर्य	23/07/2060	मंगल	02/05/2062	राहु	24/10/2064	गुरु	07/03/2066	शनि	21/09/2067
चंद्र	23/08/2060	राहु	01/11/2062	गुरु	12/12/2064	शनि	12/06/2066	बुध	21/11/2067
मंगल	13/09/2060	गुरु	12/04/2063	शनि	08/02/2065	बुध	06/09/2066	केतु	16/12/2067
राहु	06/11/2060	शनि	22/10/2063	बुध	31/03/2065	केतु	11/10/2066	शुक्र	25/02/2068
गुरु	24/12/2060	बुध	11/04/2064	केतु	22/04/2065	शुक्र	21/01/2067	सूर्य	17/03/2068
शनि	20/02/2061	केतु	21/06/2064	शुक्र	22/06/2065	सूर्य	20/02/2067	चंद्र	21/04/2068

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
21/04/2068		22/04/2071		21/12/2073		20/02/2077		22/12/2079	
22/04/2071		21/12/2073		20/02/2077		22/12/2079		20/02/2081	
राहु	03/10/2068	गुरु	30/08/2071	शनि	22/06/2074	बुध	16/07/2077	केतु	16/01/2080
गुरु	26/02/2069	शनि	31/01/2072	बुध	03/12/2074	केतु	15/09/2077	शुक्र	27/03/2080
शनि	18/08/2069	बुध	17/06/2072	केतु	09/02/2075	शुक्र	06/03/2078	सूर्य	17/04/2080
बुध	21/01/2070	केतु	13/08/2072	शुक्र	20/08/2075	सूर्य	27/04/2078	चंद्र	22/05/2080
केतु	26/03/2070	शुक्र	22/01/2073	सूर्य	17/10/2075	चंद्र	22/07/2078	मंगल	16/06/2080
शुक्र	24/09/2070	सूर्य	12/03/2073	चंद्र	22/01/2076	मंगल	21/09/2078	राहु	19/08/2080
सूर्य	18/11/2070	चंद्र	01/06/2073	मंगल	29/03/2076	राहु	23/02/2079	गुरु	15/10/2080
चंद्र	17/02/2071	मंगल	28/07/2073	राहु	19/09/2076	गुरु	11/07/2079	शनि	21/12/2080
मंगल	22/04/2071	राहु	21/12/2073	गुरु	20/02/2077	शनि	22/12/2079	बुध	20/02/2081

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
20/02/2081		09/06/2081		09/12/2081		16/04/2082		11/03/2083	
09/06/2081		09/12/2081		16/04/2082		11/03/2083		28/12/2083	
सूर्य	25/02/2081	चंद्र	25/06/2081	मंगल	16/12/2081	राहु	04/06/2082	गुरु	19/04/2083
चंद्र	06/03/2081	मंगल	05/07/2081	राहु	05/01/2082	गुरु	18/07/2082	शनि	04/06/2083
मंगल	13/03/2081	राहु	02/08/2081	गुरु	22/01/2082	शनि	08/09/2082	बुध	15/07/2083
राहु	29/03/2081	गुरु	26/08/2081	शनि	11/02/2082	बुध	25/10/2082	केतु	01/08/2083
गुरु	13/04/2081	शनि	24/09/2081	बुध	01/03/2082	केतु	13/11/2082	शुक्र	19/09/2083
शनि	30/04/2081	बुध	20/10/2081	केतु	08/03/2082	शुक्र	07/01/2083	सूर्य	04/10/2083
बुध	16/05/2081	केतु	30/10/2081	शुक्र	30/03/2082	सूर्य	23/01/2083	चंद्र	28/10/2083
केतु	22/05/2081	शुक्र	30/11/2081	सूर्य	05/04/2082	चंद्र	19/02/2083	मंगल	14/11/2083
शुक्र	09/06/2081	सूर्य	09/12/2081	चंद्र	16/04/2082	मंगल	11/03/2083	राहु	28/12/2083

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
28/12/2083		09/12/2084		15/10/2085		20/02/2086		20/02/2087	
09/12/2084		15/10/2085		20/02/2086		20/02/2087		22/12/2087	
शनि	21/02/2084	बुध	22/01/2085	केतु	23/10/2085	शुक्र	22/04/2086	चंद्र	18/03/2087
बुध	10/04/2084	केतु	09/02/2085	शुक्र	13/11/2085	सूर्य	10/05/2086	मंगल	04/04/2087
केतु	30/04/2084	शुक्र	02/04/2085	सूर्य	19/11/2085	चंद्र	10/06/2086	राहु	20/05/2087
शुक्र	27/06/2084	सूर्य	17/04/2085	चंद्र	30/11/2085	मंगल	01/07/2086	गुरु	30/06/2087
सूर्य	14/07/2084	चंद्र	13/05/2085	मंगल	07/12/2085	राहु	25/08/2086	शनि	17/08/2087
चंद्र	12/08/2084	मंगल	31/05/2085	राहु	27/12/2085	गुरु	12/10/2086	बुध	29/09/2087
मंगल	01/09/2084	राहु	17/07/2085	गुरु	13/01/2086	शनि	09/12/2086	केतु	17/10/2087
राहु	23/10/2084	गुरु	27/08/2085	शनि	02/02/2086	बुध	30/01/2087	शुक्र	06/12/2087
गुरु	09/12/2084	शनि	15/10/2085	बुध	20/02/2086	केतु	20/02/2087	सूर्य	22/12/2087

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
22/12/2087		22/07/2088		21/01/2090		23/05/2091		21/12/2092	
22/07/2088		21/01/2090		23/05/2091		21/12/2092		22/05/2094	
मंगल	03/01/2088	राहु	12/10/2088	गुरु	27/03/2090	शनि	22/08/2091	बुध	04/03/2093
राहु	04/02/2088	गुरु	24/12/2088	शनि	12/06/2090	बुध	12/11/2091	केतु	03/04/2093
गुरु	03/03/2088	शनि	21/03/2089	बुध	20/08/2090	केतु	16/12/2091	शुक्र	29/06/2093
शनि	06/04/2088	बुध	06/06/2089	केतु	17/09/2090	शुक्र	21/03/2092	सूर्य	25/07/2093
बुध	06/05/2088	केतु	08/07/2089	शुक्र	07/12/2090	सूर्य	19/04/2092	चंद्र	06/09/2093
केतु	19/05/2088	शुक्र	08/10/2089	सूर्य	01/01/2091	चंद्र	06/06/2092	मंगल	06/10/2093
शुक्र	23/06/2088	सूर्य	04/11/2089	चंद्र	10/02/2091	मंगल	10/07/2092	राहु	22/12/2093
सूर्य	04/07/2088	चंद्र	20/12/2089	मंगल	11/03/2091	राहु	05/10/2092	गुरु	01/03/2094
चंद्र	22/07/2088	मंगल	21/01/2090	राहु	23/05/2091	गुरु	21/12/2092	शनि	22/05/2094

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
22/05/2094		21/12/2094		21/08/2096		20/02/2097		19/07/2097	
21/12/2094		21/08/2096		20/02/2097		19/07/2097		06/08/2098	
केतु	04/06/2094	शुक्र	02/04/2095	सूर्य	30/08/2096	मंगल	28/02/2097	राहु	14/09/2097
शुक्र	09/07/2094	सूर्य	02/05/2095	चंद्र	15/09/2096	राहु	23/03/2097	गुरु	05/11/2097
सूर्य	20/07/2094	चंद्र	22/06/2095	मंगल	25/09/2096	गुरु	12/04/2097	शनि	04/01/2098
चंद्र	07/08/2094	मंगल	28/07/2095	राहु	23/10/2096	शनि	05/05/2097	बुध	28/02/2098
मंगल	19/08/2094	राहु	27/10/2095	गुरु	16/11/2096	बुध	26/05/2097	केतु	22/03/2098
राहु	20/09/2094	गुरु	16/01/2096	शनि	15/12/2096	केतु	04/06/2097	शुक्र	25/05/2098
गुरु	18/10/2094	शनि	21/04/2096	बुध	10/01/2097	शुक्र	29/06/2097	सूर्य	13/06/2098
शनि	21/11/2094	बुध	17/07/2096	केतु	20/01/2097	सूर्य	06/07/2097	चंद्र	15/07/2098
बुध	21/12/2094	केतु	21/08/2096	शुक्र	20/02/2097	चंद्र	19/07/2097	मंगल	06/08/2098

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - चंद्र	
19/08/2025 21:04	
24/11/2025 06:19	
चंद्र	27/08/2025 21:50
मंगल	02/09/2025 12:47
राहु	16/09/2025 23:46
गुरु	29/09/2025 20:12
शनि	15/10/2025 02:28
बुध	28/10/2025 18:10
केतु	03/11/2025 09:07
शुक्र	19/11/2025 10:39
सूर्य	24/11/2025 06:19

शनि - शुक्र - मंगल	
24/11/2025 06:19	
30/01/2026 17:36	
मंगल	28/11/2025 04:46
राहु	08/12/2025 07:40
गुरु	17/12/2025 07:34
शनि	27/12/2025 23:57
बुध	06/01/2026 13:21
केतु	10/01/2026 11:49
शुक्र	21/01/2026 17:41
सूर्य	25/01/2026 02:39
चंद्र	30/01/2026 17:36

शनि - शुक्र - राहु	
30/01/2026 17:36	
23/07/2026 05:27	
राहु	25/02/2026 18:10
गुरु	20/03/2026 21:21
शनि	17/04/2026 08:38
बुध	11/05/2026 22:30
केतु	22/05/2026 01:24
शुक्र	19/06/2026 23:22
सूर्य	28/06/2026 15:34
चंद्र	13/07/2026 02:33
मंगल	23/07/2026 05:27

शनि - शुक्र - गुरु	
23/07/2026 05:27	
24/12/2026 10:39	
गुरु	12/08/2026 18:56
शनि	06/09/2026 04:58
बुध	28/09/2026 01:18
केतु	07/10/2026 01:12
शुक्र	01/11/2026 18:04
सूर्य	09/11/2026 11:08
चंद्र	22/11/2026 07:34
मंगल	01/12/2026 07:28
राहु	24/12/2026 10:39

शनि - शुक्र - शनि	
24/12/2026 10:39	
25/06/2027 13:49	
शनि	22/01/2027 10:33
बुध	17/02/2027 09:12
केतु	28/02/2027 01:35
शुक्र	30/03/2027 14:07
सूर्य	08/04/2027 17:52
चंद्र	24/04/2027 00:08
मंगल	04/05/2027 16:31
राहु	01/06/2027 03:48
गुरु	25/06/2027 13:49

शनि - शुक्र - बुध	
25/06/2027 13:49	
06/12/2027 10:21	
बुध	18/07/2027 18:55
केतु	28/07/2027 08:19
शुक्र	24/08/2027 15:45
सूर्य	01/09/2027 20:22
चंद्र	15/09/2027 12:05
मंगल	25/09/2027 01:29
राहु	19/10/2027 15:21
गुरु	10/11/2027 11:42
शनि	06/12/2027 10:21

शनि - शुक्र - केतु	
06/12/2027 10:21	
11/02/2028 21:37	
केतु	10/12/2027 08:48
शुक्र	21/12/2027 14:41
सूर्य	24/12/2027 23:39
चंद्र	30/12/2027 14:35
मंगल	03/01/2028 13:02
राहु	13/01/2028 15:56
गुरु	22/01/2028 15:50
शनि	02/02/2028 08:13
बुध	11/02/2028 21:37

शनि - सूर्य - सूर्य	
11/02/2028 21:37	
29/02/2028 06:00	
सूर्य	12/02/2028 18:26
चंद्र	14/02/2028 05:08
मंगल	15/02/2028 05:25
राहु	17/02/2028 19:53
गुरु	20/02/2028 03:24
शनि	22/02/2028 21:20
बुध	25/02/2028 08:19
केतु	26/02/2028 08:36
शुक्र	29/02/2028 06:00

शनि - सूर्य - चंद्र	
29/02/2028 06:00	
29/03/2028 03:59	
चंद्र	02/03/2028 15:50
मंगल	04/03/2028 08:19
राहु	08/03/2028 16:25
गुरु	12/03/2028 12:56
शनि	17/03/2028 02:49
बुध	21/03/2028 05:08
केतु	22/03/2028 21:37
शुक्र	27/03/2028 17:17
सूर्य	29/03/2028 03:59

शनि - सूर्य - मंगल	
29/03/2028 03:59	
18/04/2028 09:46	
मंगल	30/03/2028 08:19
राहु	02/04/2028 09:11
गुरु	05/04/2028 01:57
शनि	08/04/2028 06:52
बुध	11/04/2028 03:41
केतु	12/04/2028 08:01
शुक्र	15/04/2028 16:59
सूर्य	16/04/2028 17:17
चंद्र	18/04/2028 09:46

शनि - सूर्य - राहु	
18/04/2028 09:46	
09/06/2028 10:55	
राहु	26/04/2028 05:08
गुरु	03/05/2028 03:41
शनि	11/05/2028 09:28
बुध	18/05/2028 18:26
केतु	21/05/2028 19:18
शुक्र	30/05/2028 11:30
सूर्य	02/06/2028 01:57
चंद्र	06/06/2028 10:03
मंगल	09/06/2028 10:55

शनि - सूर्य - गुरु	
09/06/2028 10:55	
25/07/2028 17:16	
गुरु	15/06/2028 14:58
शनि	22/06/2028 22:46
बुध	29/06/2028 12:04
केतु	02/07/2028 04:50
शुक्र	09/07/2028 21:54
सूर्य	12/07/2028 05:25
चंद्र	16/07/2028 01:57
मंगल	18/07/2028 18:43
राहु	25/07/2028 17:16

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - सूर्य - शनि	
25/07/2028 17:16	
18/09/2028 15:50	
शनि	03/08/2028 10:03
बुध	11/08/2028 04:50
केतु	14/08/2028 09:45
शुक्र	23/08/2028 13:31
सूर्य	26/08/2028 07:27
चंद्र	30/08/2028 21:19
मंगल	03/09/2028 02:14
राहु	11/09/2028 08:01
गुरु	18/09/2028 15:50

शनि - सूर्य - बुध	
18/09/2028 15:50	
06/11/2028 19:35	
बुध	25/09/2028 14:58
केतु	28/09/2028 11:47
शुक्र	06/10/2028 16:24
सूर्य	09/10/2028 03:24
चंद्र	13/10/2028 05:42
मंगल	16/10/2028 02:31
राहु	23/10/2028 11:29
गुरु	30/10/2028 00:47
शनि	06/11/2028 19:35

शनि - सूर्य - केतु	
06/11/2028 19:35	
27/11/2028 01:22	
केतु	07/11/2028 23:55
शुक्र	11/11/2028 08:53
सूर्य	12/11/2028 09:10
चंद्र	14/11/2028 01:39
मंगल	15/11/2028 06:00
राहु	18/11/2028 06:52
गुरु	20/11/2028 23:38
शनि	24/11/2028 04:33
बुध	27/11/2028 01:22

शनि - सूर्य - शुक्र	
27/11/2028 01:22	
23/01/2029 21:19	
शुक्र	06/12/2028 16:42
सूर्य	09/12/2028 14:05
चंद्र	14/12/2028 09:45
मंगल	17/12/2028 18:43
राहु	26/12/2028 10:54
गुरु	03/01/2029 03:58
शनि	12/01/2029 07:44
बुध	20/01/2029 12:21
केतु	23/01/2029 21:19

शनि - चंद्र - चंद्र	
23/01/2029 21:19	
13/03/2029 01:57	
चंद्र	27/01/2029 21:42
मंगल	30/01/2029 17:10
राहु	06/02/2029 22:40
गुरु	13/02/2029 08:53
शनि	21/02/2029 00:01
बुध	27/02/2029 19:52
केतु	02/03/2029 15:20
शुक्र	10/03/2029 16:07
सूर्य	13/03/2029 01:57

शनि - चंद्र - मंगल	
13/03/2029 01:57	
15/04/2029 19:35	
मंगल	15/03/2029 01:10
राहु	20/03/2029 02:37
गुरु	24/03/2029 14:34
शनि	29/03/2029 22:46
बुध	03/04/2029 17:28
केतु	05/04/2029 16:41
शुक्र	11/04/2029 07:38
सूर्य	13/04/2029 00:07
चंद्र	15/04/2029 19:35

शनि - चंद्र - राहु	
15/04/2029 19:35	
11/07/2029 13:30	
राहु	28/04/2029 19:52
गुरु	10/05/2029 09:27
शनि	24/05/2029 03:06
बुध	05/06/2029 10:02
केतु	10/06/2029 11:29
शुक्र	24/06/2029 22:28
सूर्य	29/06/2029 06:34
चंद्र	06/07/2029 12:04
मंगल	11/07/2029 13:30

शनि - चंद्र - गुरु	
11/07/2029 13:30	
26/09/2029 16:06	
गुरु	21/07/2029 20:15
शनि	03/08/2029 01:16
बुध	13/08/2029 23:26
केतु	18/08/2029 11:23
शुक्र	31/08/2029 07:49
सूर्य	04/09/2029 04:21
चंद्र	10/09/2029 14:34
मंगल	15/09/2029 02:31
राहु	26/09/2029 16:06

शनि - चंद्र - शनि	
26/09/2029 16:06	
27/12/2029 05:42	
शनि	11/10/2029 04:03
बुध	24/10/2029 03:23
केतु	29/10/2029 11:34
शुक्र	13/11/2029 17:50
सूर्य	18/11/2029 07:43
चंद्र	25/11/2029 22:51
मंगल	01/12/2029 07:03
राहु	15/12/2029 00:41
गुरु	27/12/2029 05:42

शनि - चंद्र - बुध	
27/12/2029 05:42	
19/03/2030 03:57	
बुध	07/01/2030 20:15
केतु	12/01/2030 14:57
शुक्र	26/01/2030 06:39
सूर्य	30/01/2030 08:58
चंद्र	06/02/2030 04:49
मंगल	10/02/2030 23:31
राहु	23/02/2030 06:28
गुरु	06/03/2030 04:38
शनि	19/03/2030 03:57

शनि - चंद्र - केतु	
19/03/2030 03:57	
21/04/2030 21:36	
केतु	21/03/2030 03:11
शुक्र	26/03/2030 18:07
सूर्य	28/03/2030 10:36
चंद्र	31/03/2030 06:04
मंगल	02/04/2030 05:18
राहु	07/04/2030 06:45
गुरु	11/04/2030 18:42
शनि	17/04/2030 02:54
बुध	21/04/2030 21:36

शनि - चंद्र - शुक्र	
21/04/2030 21:36	
27/07/2030 06:51	
शुक्र	07/05/2030 23:08
सूर्य	12/05/2030 18:48
चंद्र	20/05/2030 19:34
मंगल	26/05/2030 10:30
राहु	09/06/2030 21:30
गुरु	22/06/2030 17:56
शनि	08/07/2030 00:12
बुध	21/07/2030 15:54
केतु	27/07/2030 06:51

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - चंद्र - सूर्य	
27/07/2030 06:51	
25/08/2030 04:49	
सूर्य	28/07/2030 17:32
चंद्र	31/07/2030 03:22
मंगल	01/08/2030 19:51
राहु	06/08/2030 03:57
गुरु	10/08/2030 00:29
शनि	14/08/2030 14:22
बुध	18/08/2030 16:40
केतु	20/08/2030 09:09
शुक्र	25/08/2030 04:49

शनि - मंगल - मंगल	
25/08/2030 04:49	
17/09/2030 19:34	
मंगल	26/08/2030 13:53
राहु	30/08/2030 02:53
गुरु	02/09/2030 06:27
शनि	06/09/2030 00:11
बुध	09/09/2030 08:29
केतु	10/09/2030 17:32
शुक्र	14/09/2030 16:00
सूर्य	15/09/2030 20:20
चंद्र	17/09/2030 19:34

शनि - मंगल - राहु	
17/09/2030 19:34	
17/11/2030 12:55	
राहु	26/09/2030 22:10
गुरु	05/10/2030 00:29
शनि	14/10/2030 15:13
बुध	23/10/2030 05:41
केतु	26/10/2030 18:42
शुक्र	05/11/2030 21:35
सूर्य	08/11/2030 22:27
चंद्र	13/11/2030 23:54
मंगल	17/11/2030 12:55

शनि - मंगल - गुरु	
17/11/2030 12:55	
10/01/2031 12:20	
गुरु	24/11/2030 17:38
शनि	03/12/2030 06:44
बुध	10/12/2030 22:16
केतु	14/12/2030 01:50
शुक्र	23/12/2030 01:44
सूर्य	25/12/2030 18:30
चंद्र	30/12/2030 06:27
मंगल	02/01/2031 10:01
राहु	10/01/2031 12:20

शनि - मंगल - शनि	
10/01/2031 12:20	
15/03/2031 14:39	
शनि	20/01/2031 15:54
बुध	29/01/2031 17:49
केतु	02/02/2031 11:34
शुक्र	13/02/2031 03:57
सूर्य	16/02/2031 08:52
चंद्र	21/02/2031 17:03
मंगल	25/02/2031 10:47
राहु	07/03/2031 01:32
गुरु	15/03/2031 14:39

शनि - मंगल - बुध	
15/03/2031 14:39	
11/05/2031 23:02	
बुध	23/03/2031 17:38
केतु	27/03/2031 01:55
शुक्र	05/04/2031 15:19
सूर्य	08/04/2031 12:08
चंद्र	13/04/2031 06:50
मंगल	16/04/2031 15:07
राहु	25/04/2031 05:35
गुरु	02/05/2031 21:06
शनि	11/05/2031 23:02

शनि - मंगल - केतु	
11/05/2031 23:02	
04/06/2031 13:46	
केतु	13/05/2031 08:05
शुक्र	17/05/2031 06:33
सूर्य	18/05/2031 10:53
चंद्र	20/05/2031 10:07
मंगल	21/05/2031 19:10
राहु	25/05/2031 08:11
गुरु	28/05/2031 11:45
शनि	01/06/2031 05:29
बुध	04/06/2031 13:46

शनि - मंगल - शुक्र	
04/06/2031 13:46	
11/08/2031 01:03	
शुक्र	15/06/2031 19:39
सूर्य	19/06/2031 04:37
चंद्र	24/06/2031 19:33
मंगल	28/06/2031 18:01
राहु	08/07/2031 20:54
गुरु	17/07/2031 20:48
शनि	28/07/2031 13:12
बुध	07/08/2031 02:35
केतु	11/08/2031 01:03

शनि - मंगल - सूर्य	
11/08/2031 01:03	
31/08/2031 06:50	
सूर्य	12/08/2031 01:20
चंद्र	13/08/2031 17:49
मंगल	14/08/2031 22:09
राहु	17/08/2031 23:01
गुरु	20/08/2031 15:48
शनि	23/08/2031 20:43
बुध	26/08/2031 17:32
केतु	27/08/2031 21:52
शुक्र	31/08/2031 06:50

शनि - मंगल - चंद्र	
31/08/2031 06:50	
04/10/2031 00:28	
चंद्र	03/09/2031 02:18
मंगल	05/09/2031 01:32
राहु	10/09/2031 02:58
गुरु	14/09/2031 14:56
शनि	19/09/2031 23:07
बुध	24/09/2031 17:49
केतु	26/09/2031 17:03
शुक्र	02/10/2031 07:59
सूर्य	04/10/2031 00:28

शनि - राहु - राहु	
04/10/2031 00:28	
08/03/2032 03:56	
राहु	27/10/2031 10:35
गुरु	17/11/2031 06:15
शनि	11/12/2031 23:36
बुध	03/01/2032 02:29
केतु	12/01/2032 05:05
शुक्र	07/02/2032 05:40
सूर्य	15/02/2032 01:02
चंद्र	28/02/2032 01:20
मंगल	08/03/2032 03:56

शनि - राहु - गुरु	
08/03/2032 03:56	
24/07/2032 23:01	
गुरु	26/03/2032 16:05
शनि	17/04/2032 15:30
बुध	07/05/2032 07:24
केतु	15/05/2032 09:43
शुक्र	07/06/2032 12:54
सूर्य	14/06/2032 11:27
चंद्र	26/06/2032 01:02
मंगल	04/07/2032 03:21
राहु	24/07/2032 23:01

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - राहु - शनि	
24/07/2032 23:01	
05/01/2033 18:40	
शनि	20/08/2032 01:19
बुध	12/09/2032 09:43
केतु	22/09/2032 00:27
शुक्र	19/10/2032 11:44
सूर्य	27/10/2032 17:31
चंद्र	10/11/2032 11:09
मंगल	20/11/2032 01:54
राहु	14/12/2032 19:15
गुरु	05/01/2033 18:40

शनि - राहु - बुध	
05/01/2033 18:40	
02/06/2033 05:57	
बुध	26/01/2033 16:04
केतु	04/02/2033 06:31
शुक्र	28/02/2033 20:24
सूर्य	08/03/2033 05:22
चंद्र	20/03/2033 12:18
मंगल	29/03/2033 02:46
राहु	20/04/2033 05:39
गुरु	09/05/2033 21:33
शनि	02/06/2033 05:57

शनि - राहु - केतु	
02/06/2033 05:57	
01/08/2033 23:17	
केतु	05/06/2033 18:57
शुक्र	15/06/2033 21:51
सूर्य	18/06/2033 22:43
चंद्र	24/06/2033 00:09
मंगल	27/06/2033 13:10
राहु	06/07/2033 15:46
गुरु	14/07/2033 18:05
शनि	24/07/2033 08:50
बुध	01/08/2033 23:17

शनि - राहु - शुक्र	
01/08/2033 23:17	
22/01/2034 11:08	
शुक्र	30/08/2033 21:16
सूर्य	08/09/2033 13:27
चंद्र	23/09/2033 00:27
मंगल	03/10/2033 03:20
राहु	29/10/2033 03:55
गुरु	21/11/2033 07:06
शनि	18/12/2033 18:22
बुध	12/01/2034 08:15
केतु	22/01/2034 11:08

शनि - राहु - सूर्य	
22/01/2034 11:08	
15/03/2034 12:18	
सूर्य	25/01/2034 01:36
चंद्र	29/01/2034 09:42
मंगल	01/02/2034 10:34
राहु	09/02/2034 05:56
गुरु	16/02/2034 04:29
शनि	24/02/2034 10:16
बुध	03/03/2034 19:14
केतु	06/03/2034 20:06
शुक्र	15/03/2034 12:18

शनि - राहु - चंद्र	
15/03/2034 12:18	
10/06/2034 06:13	
चंद्र	22/03/2034 17:47
मंगल	27/03/2034 19:14
राहु	09/04/2034 19:31
गुरु	21/04/2034 09:07
शनि	05/05/2034 02:45
बुध	17/05/2034 09:41
केतु	22/05/2034 11:08
शुक्र	05/06/2034 22:07
सूर्य	10/06/2034 06:13

शनि - राहु - मंगल	
10/06/2034 06:13	
09/08/2034 23:34	
मंगल	13/06/2034 19:14
राहु	22/06/2034 21:50
गुरु	01/07/2034 00:09
शनि	10/07/2034 14:54
बुध	19/07/2034 05:21
केतु	22/07/2034 18:22
शुक्र	01/08/2034 21:15
सूर्य	04/08/2034 22:07
चंद्र	09/08/2034 23:34

शनि - गुरु - गुरु	
09/08/2034 23:34	
11/12/2034 08:32	
गुरु	26/08/2034 10:22
शनि	14/09/2034 23:11
बुध	02/10/2034 10:39
केतु	09/10/2034 15:22
शुक्र	30/10/2034 04:52
सूर्य	05/11/2034 08:55
चंद्र	15/11/2034 15:40
मंगल	22/11/2034 20:23
राहु	11/12/2034 08:32

शनि - गुरु - शनि	
11/12/2034 08:32	
06/05/2035 20:40	
शनि	03/01/2035 13:15
बुध	24/01/2035 07:22
केतु	01/02/2035 20:29
शुक्र	26/02/2035 06:30
सूर्य	05/03/2035 14:18
चंद्र	17/03/2035 19:19
मंगल	26/03/2035 08:26
राहु	17/04/2035 07:51
गुरु	06/05/2035 20:40

शनि - गुरु - बुध	
06/05/2035 20:40	
14/09/2035 22:41	
बुध	25/05/2035 10:21
केतु	02/06/2035 01:52
शुक्र	23/06/2035 22:12
सूर्य	30/06/2035 11:31
चंद्र	11/07/2035 09:41
मंगल	19/07/2035 01:12
राहु	07/08/2035 17:06
गुरु	25/08/2035 04:34
शनि	14/09/2035 22:41

शनि - गुरु - केतु	
14/09/2035 22:41	
07/11/2035 22:06	
केतु	18/09/2035 02:15
शुक्र	27/09/2035 02:09
सूर्य	29/09/2035 18:56
चंद्र	04/10/2035 06:53
मंगल	07/10/2035 10:27
राहु	15/10/2035 12:45
गुरु	22/10/2035 17:29
शनि	31/10/2035 06:35
बुध	07/11/2035 22:06

शनि - गुरु - शुक्र	
07/11/2035 22:06	
10/04/2036 03:18	
शुक्र	03/12/2035 14:58
सूर्य	11/12/2035 08:02
चंद्र	24/12/2035 04:28
मंगल	02/01/2036 04:22
राहु	25/01/2036 07:33
गुरु	14/02/2036 21:03
शनि	10/03/2036 07:04
बुध	01/04/2036 03:24
केतु	10/04/2036 03:18

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - शुक्र - चंद्र - चंद्र	
19/08/2025 21:04	
27/08/2025 21:50	
चंद्र	20/08/2025 13:08
मंगल	21/08/2025 00:23
राहु	22/08/2025 05:17
गुरु	23/08/2025 07:00
शनि	24/08/2025 13:31
बुध	25/08/2025 16:50
केतु	26/08/2025 04:04
शुक्र	27/08/2025 12:12
सूर्य	27/08/2025 21:50

शनि - शुक्र - चंद्र - मंगल	
27/08/2025 21:50	
02/09/2025 12:47	
मंगल	28/08/2025 05:43
राहु	29/08/2025 01:57
गुरु	29/08/2025 19:57
शनि	30/08/2025 17:18
बुध	31/08/2025 12:25
केतु	31/08/2025 20:18
शुक्र	01/09/2025 18:47
सूर्य	02/09/2025 01:32
चंद्र	02/09/2025 12:47

शनि - शुक्र - चंद्र - राहु	
02/09/2025 12:47	
16/09/2025 23:46	
राहु	04/09/2025 16:50
गुरु	06/09/2025 15:05
शनि	08/09/2025 22:02
बुध	10/09/2025 23:11
केतु	11/09/2025 19:26
शुक्र	14/09/2025 05:16
सूर्य	14/09/2025 22:36
चंद्र	16/09/2025 03:31
मंगल	16/09/2025 23:46

शनि - शुक्र - चंद्र - गुरु	
16/09/2025 23:46	
29/09/2025 20:12	
गुरु	18/09/2025 16:53
शनि	20/09/2025 17:43
बुध	22/09/2025 13:25
केतु	23/09/2025 07:25
शुक्र	25/09/2025 10:49
सूर्य	26/09/2025 02:14
चंद्र	27/09/2025 03:56
मंगल	27/09/2025 21:56
राहु	29/09/2025 20:12

शनि - शुक्र - चंद्र - शनि	
29/09/2025 20:12	
15/10/2025 02:28	
शनि	02/10/2025 06:11
बुध	04/10/2025 10:05
केतु	05/10/2025 07:27
शुक्र	07/10/2025 20:29
सूर्य	08/10/2025 14:48
चंद्र	09/10/2025 21:19
मंगल	10/10/2025 18:41
राहु	13/10/2025 01:38
गुरु	15/10/2025 02:28

शनि - शुक्र - चंद्र - बुध	
15/10/2025 02:28	
28/10/2025 18:10	
बुध	17/10/2025 00:53
केतु	17/10/2025 20:00
शुक्र	20/10/2025 02:37
सूर्य	20/10/2025 19:01
चंद्र	21/10/2025 22:19
मंगल	22/10/2025 17:26
राहु	24/10/2025 18:35
गुरु	26/10/2025 14:17
शनि	28/10/2025 18:10

शनि - शुक्र - चंद्र - केतु	
28/10/2025 18:10	
03/11/2025 09:07	
केतु	29/10/2025 02:03
शुक्र	30/10/2025 00:32
सूर्य	30/10/2025 07:17
चंद्र	30/10/2025 18:32
मंगल	31/10/2025 02:24
राहु	31/10/2025 22:38
गुरु	01/11/2025 16:38
शनि	02/11/2025 14:00
बुध	03/11/2025 09:07

शनि - शुक्र - चंद्र - शुक्र	
03/11/2025 09:07	
19/11/2025 10:39	
शुक्र	06/11/2025 01:22
सूर्य	06/11/2025 20:39
चंद्र	08/11/2025 04:47
मंगल	09/11/2025 03:16
राहु	11/11/2025 13:06
गुरु	13/11/2025 16:30
शनि	16/11/2025 05:33
बुध	18/11/2025 12:10
केतु	19/11/2025 10:39

शनि - शुक्र - चंद्र - सूर्य	
19/11/2025 10:39	
24/11/2025 06:19	
सूर्य	19/11/2025 16:26
चंद्र	20/11/2025 02:05
मंगल	20/11/2025 08:49
राहु	21/11/2025 02:10
गुरु	21/11/2025 17:36
शनि	22/11/2025 11:54
बुध	23/11/2025 04:18
केतु	23/11/2025 11:02
शुक्र	24/11/2025 06:19

शनि - शुक्र - मंगल - मंगल	
24/11/2025 06:19	
28/11/2025 04:46	
मंगल	24/11/2025 11:50
राहु	25/11/2025 02:00
गुरु	25/11/2025 14:35
शनि	26/11/2025 05:33
बुध	26/11/2025 18:56
केतु	27/11/2025 00:26
शुक्र	27/11/2025 16:11
सूर्य	27/11/2025 20:54
चंद्र	28/11/2025 04:46

शनि - शुक्र - मंगल - राहु	
28/11/2025 04:46	
08/12/2025 07:40	
राहु	29/11/2025 17:12
गुरु	01/12/2025 01:36
शनि	02/12/2025 16:03
बुध	04/12/2025 02:28
केतु	04/12/2025 16:38
शुक्र	06/12/2025 09:07
सूर्य	06/12/2025 21:15
चंद्र	07/12/2025 17:30
मंगल	08/12/2025 07:40

शनि - शुक्र - मंगल - गुरु	
08/12/2025 07:40	
17/12/2025 07:34	
गुरु	09/12/2025 12:27
शनि	10/12/2025 22:38
बुध	12/12/2025 05:13
केतु	12/12/2025 17:49
शुक्र	14/12/2025 05:48
सूर्य	14/12/2025 16:36
चंद्र	15/12/2025 10:35
मंगल	15/12/2025 23:11
राहु	17/12/2025 07:34

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - शुक्र - मंगल - शनि	
17/12/2025 07:34	
27/12/2025 23:57	
शनि	19/12/2025 00:10
बुध	20/12/2025 12:29
केतु	21/12/2025 03:26
शुक्र	22/12/2025 22:10
सूर्य	23/12/2025 10:59
चंद्र	24/12/2025 08:21
मंगल	24/12/2025 23:19
राहु	26/12/2025 13:46
गुरु	27/12/2025 23:57

शनि - शुक्र - मंगल - बुध	
27/12/2025 23:57	
06/01/2026 13:21	
बुध	29/12/2025 08:27
केतु	29/12/2025 21:50
शुक्र	31/12/2025 12:04
सूर्य	31/12/2025 23:32
चंद्र	01/01/2026 18:39
मंगल	02/01/2026 08:02
राहु	03/01/2026 18:27
गुरु	05/01/2026 01:02
शनि	06/01/2026 13:21

शनि - शुक्र - मंगल - केतु	
06/01/2026 13:21	
10/01/2026 11:49	
केतु	06/01/2026 18:52
शुक्र	07/01/2026 10:36
सूर्य	07/01/2026 15:20
चंद्र	07/01/2026 23:12
मंगल	08/01/2026 04:43
राहु	08/01/2026 18:53
गुरु	09/01/2026 07:28
शनि	09/01/2026 22:26
बुध	10/01/2026 11:49

शनि - शुक्र - मंगल - शुक्र	
10/01/2026 11:49	
21/01/2026 17:41	
शुक्र	12/01/2026 08:47
सूर्य	12/01/2026 22:17
चंद्र	13/01/2026 20:46
मंगल	14/01/2026 12:31
राहु	16/01/2026 05:00
गुरु	17/01/2026 16:59
शनि	19/01/2026 11:43
बुध	21/01/2026 01:57
केतु	21/01/2026 17:41

शनि - शुक्र - मंगल - सूर्य	
21/01/2026 17:41	
25/01/2026 02:39	
सूर्य	21/01/2026 21:44
चंद्र	22/01/2026 04:29
मंगल	22/01/2026 09:12
राहु	22/01/2026 21:21
गुरु	23/01/2026 08:09
शनि	23/01/2026 20:58
बुध	24/01/2026 08:26
केतु	24/01/2026 13:09
शुक्र	25/01/2026 02:39

शनि - शुक्र - मंगल - चंद्र	
25/01/2026 02:39	
30/01/2026 17:36	
चंद्र	25/01/2026 13:54
मंगल	25/01/2026 21:46
राहु	26/01/2026 18:01
गुरु	27/01/2026 12:00
शनि	28/01/2026 09:22
बुध	29/01/2026 04:29
केतु	29/01/2026 12:21
शुक्र	30/01/2026 10:51
सूर्य	30/01/2026 17:36

शनि - शुक्र - राहु - राहु	
30/01/2026 17:36	
25/02/2026 18:10	
राहु	03/02/2026 15:17
गुरु	07/02/2026 02:33
शनि	11/02/2026 05:27
बुध	14/02/2026 21:56
केतु	16/02/2026 10:22
शुक्र	20/02/2026 18:28
सूर्य	22/02/2026 01:41
चंद्र	24/02/2026 05:44
मंगल	25/02/2026 18:10

शनि - शुक्र - राहु - गुरु	
25/02/2026 18:10	
20/03/2026 21:21	
गुरु	28/02/2026 20:12
शनि	04/03/2026 12:06
बुध	07/03/2026 18:45
केतु	09/03/2026 03:08
शुक्र	12/03/2026 23:40
सूर्य	14/03/2026 03:25
चंद्र	16/03/2026 01:41
मंगल	17/03/2026 10:04
राहु	20/03/2026 21:21

शनि - शुक्र - राहु - शनि	
20/03/2026 21:21	
17/04/2026 08:38	
शनि	25/03/2026 05:44
बुध	29/03/2026 03:08
केतु	30/03/2026 17:35
शुक्र	04/04/2026 07:28
सूर्य	05/04/2026 16:26
चंद्र	07/04/2026 23:22
मंगल	09/04/2026 13:50
राहु	13/04/2026 16:43
गुरु	17/04/2026 08:38

शनि - शुक्र - राहु - बुध	
17/04/2026 08:38	
11/05/2026 22:30	
बुध	20/04/2026 20:12
केतु	22/04/2026 06:36
शुक्र	26/04/2026 08:55
सूर्य	27/04/2026 14:25
चंद्र	29/04/2026 15:34
मंगल	01/05/2026 01:58
राहु	04/05/2026 18:27
गुरु	08/05/2026 01:06
शनि	11/05/2026 22:30

शनि - शुक्र - राहु - केतु	
11/05/2026 22:30	
22/05/2026 01:24	
केतु	12/05/2026 12:40
शुक्र	14/05/2026 05:09
सूर्य	14/05/2026 17:18
चंद्र	15/05/2026 13:32
मंगल	16/05/2026 03:43
राहु	17/05/2026 16:09
गुरु	19/05/2026 00:32
शनि	20/05/2026 14:59
बुध	22/05/2026 01:24

शनि - शुक्र - राहु - शुक्र	
22/05/2026 01:24	
19/06/2026 23:22	
शुक्र	26/05/2026 21:03
सूर्य	28/05/2026 07:45
चंद्र	30/05/2026 17:35
मंगल	01/06/2026 10:04
राहु	05/06/2026 18:10
गुरु	09/06/2026 14:42
शनि	14/06/2026 04:35
बुध	18/06/2026 06:53
केतु	19/06/2026 23:22

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 1 वर्ष 3 मास 9 दिन

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
23/08/1983		01/12/1984		02/12/1995		02/12/2007		01/12/2020	
01/12/1984		02/12/1995		02/12/2007		01/12/2020		02/12/2034	
	00/00/0000	सूर्य	17/12/1985	मंगल	27/02/1997	गुरु	17/05/2009	शनि	10/08/2022
	00/00/0000	मंगल	06/02/1987	गुरु	04/07/1998	शनि	11/12/2010	केतु	02/06/2024
	00/00/0000	गुरु	01/05/1988	शनि	15/12/1999	केतु	16/08/2012	चंद्र	08/05/2026
	00/00/0000	शनि	29/08/1989	केतु	03/07/2001	चंद्र	02/06/2014	बुध	26/05/2028
	00/00/0000	केतु	31/01/1991	चंद्र	28/02/2003	बुध	28/04/2016	शुक्र	29/07/2030
	00/00/0000	चंद्र	07/08/1992	बुध	01/12/2004	शुक्र	05/05/2018	सूर्य	26/11/2031
	23/08/1983	बुध	19/03/1994	शुक्र	12/10/2006	सूर्य	29/07/2019	मंगल	08/05/2033
बुध	01/12/1984	शुक्र	02/12/1995	सूर्य	02/12/2007	मंगल	01/12/2020	गुरु	02/12/2034

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
02/12/2034		02/12/2049		02/12/2065		02/12/2082	
02/12/2049		02/12/2065		02/12/2082		23/08/2099	
केतु	09/11/2036	चंद्र	16/02/2052	बुध	30/05/2068	शुक्र	17/09/2085
चंद्र	05/12/2038	बुध	21/06/2054	शुक्र	18/01/2071	सूर्य	02/06/2087
बुध	15/02/2041	शुक्र	14/12/2056	सूर्य	29/08/2072	मंगल	13/04/2089
शुक्र	15/06/2043	सूर्य	21/06/2058	मंगल	02/06/2074	गुरु	19/04/2091
सूर्य	16/11/2044	मंगल	16/02/2060	गुरु	28/04/2076	शनि	21/06/2093
मंगल	05/06/2046	गुरु	02/12/2061	शनि	17/05/2078	केतु	19/10/2095
गुरु	09/02/2048	शनि	07/11/2063	केतु	28/07/2080	चंद्र	13/04/2098
शनि	02/12/2049	केतु	02/12/2065	चंद्र	02/12/2082	बुध	23/08/2099

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
23/08/1983		01/12/1984		17/12/1985		06/02/1987		01/05/1988	
01/12/1984		17/12/1985		06/02/1987		01/05/1988		29/08/1989	
	00/00/0000	सूर्य	06/01/1985	मंगल	29/01/1986	गुरु	28/03/1987	शनि	29/06/1988
	00/00/0000	मंगल	15/02/1985	गुरु	17/03/1986	शनि	22/05/1987	केतु	30/08/1988
	00/00/0000	गुरु	30/03/1985	शनि	06/05/1986	केतु	19/07/1987	चंद्र	05/11/1988
	23/08/1983	शनि	15/05/1985	केतु	29/06/1986	चंद्र	19/09/1987	बुध	15/01/1989
गुरु	24/11/1983	केतु	03/07/1985	चंद्र	25/08/1986	बुध	24/11/1987	शुक्र	01/04/1989
शनि	19/03/1984	चंद्र	24/08/1985	बुध	25/10/1986	शुक्र	02/02/1988	सूर्य	17/05/1989
केतु	21/07/1984	बुध	19/10/1985	शुक्र	29/12/1986	सूर्य	16/03/1988	मंगल	06/07/1989
चंद्र	01/12/1984	शुक्र	17/12/1985	सूर्य	06/02/1987	मंगल	01/05/1988	गुरु	29/08/1989

सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल	
29/08/1989		31/01/1991		07/08/1992		19/03/1994		02/12/1995	
31/01/1991		07/08/1992		19/03/1994		02/12/1995		27/02/1997	
केतु	04/11/1989	चंद्र	17/04/1991	बुध	01/11/1992	शुक्र	23/06/1994	मंगल	18/01/1996
चंद्र	15/01/1990	बुध	07/07/1991	शुक्र	31/01/1993	सूर्य	21/08/1994	गुरु	09/03/1996
बुध	01/04/1990	शुक्र	01/10/1991	सूर्य	28/03/1993	मंगल	25/10/1994	शनि	03/05/1996
शुक्र	21/06/1990	सूर्य	23/11/1991	मंगल	28/05/1993	गुरु	03/01/1995	केतु	30/06/1996
सूर्य	09/08/1990	मंगल	19/01/1992	गुरु	02/08/1993	शनि	19/03/1995	चंद्र	01/09/1996
मंगल	02/10/1990	गुरु	21/03/1992	शनि	12/10/1993	केतु	08/06/1995	बुध	06/11/1996
गुरु	29/11/1990	शनि	27/05/1992	केतु	27/12/1993	चंद्र	02/09/1995	शुक्र	15/01/1997
शनि	31/01/1991	केतु	07/08/1992	चंद्र	19/03/1994	बुध	02/12/1995	सूर्य	27/02/1997

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध	
27/02/1997		04/07/1998		15/12/1999		03/07/2001		28/02/2003	
04/07/1998		15/12/1999		03/07/2001		28/02/2003		01/12/2004	
गुरु	24/04/1997	शनि	06/09/1998	केतु	26/02/2000	चंद्र	25/09/2001	बुध	02/06/2003
शनि	22/06/1997	केतु	13/11/1998	चंद्र	14/05/2000	बुध	22/12/2001	शुक्र	10/09/2003
केतु	24/08/1997	चंद्र	25/01/1999	बुध	05/08/2000	शुक्र	26/03/2002	सूर्य	10/11/2003
चंद्र	31/10/1997	बुध	12/04/1999	शुक्र	01/11/2000	सूर्य	23/05/2002	मंगल	15/01/2004
बुध	11/01/1998	शुक्र	03/07/1999	सूर्य	25/12/2000	मंगल	24/07/2002	गुरु	27/03/2004
शुक्र	28/03/1998	सूर्य	23/08/1999	मंगल	22/02/2001	गुरु	30/09/2002	शनि	13/06/2004
सूर्य	14/05/1998	मंगल	16/10/1999	गुरु	26/04/2001	शनि	12/12/2002	केतु	04/09/2004
मंगल	04/07/1998	गुरु	15/12/1999	शनि	03/07/2001	केतु	28/02/2003	चंद्र	01/12/2004

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
01/12/2004		12/10/2006		02/12/2007		17/05/2009		11/12/2010	
12/10/2006		02/12/2007		17/05/2009		11/12/2010		16/08/2012	
शुक्र	17/03/2005	सूर्य	21/11/2006	गुरु	31/01/2008	शनि	25/07/2009	केतु	01/03/2011
सूर्य	20/05/2005	मंगल	03/01/2007	शनि	04/04/2008	केतु	07/10/2009	चंद्र	24/05/2011
मंगल	30/07/2005	गुरु	18/02/2007	केतु	12/06/2008	चंद्र	26/12/2009	बुध	22/08/2011
गुरु	14/10/2005	शनि	10/04/2007	चंद्र	24/08/2008	बुध	19/03/2010	शुक्र	26/11/2011
शनि	04/01/2006	केतु	02/06/2007	बुध	10/11/2008	शुक्र	16/06/2010	सूर्य	23/01/2012
केतु	02/04/2006	चंद्र	30/07/2007	शुक्र	01/02/2009	सूर्य	10/08/2010	मंगल	26/03/2012
चंद्र	05/07/2006	बुध	29/09/2007	सूर्य	23/03/2009	मंगल	08/10/2010	गुरु	03/06/2012
बुध	12/10/2006	शुक्र	02/12/2007	मंगल	17/05/2009	गुरु	11/12/2010	शनि	16/08/2012

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
16/08/2012		02/06/2014		28/04/2016		05/05/2018		29/07/2019	
02/06/2014		28/04/2016		05/05/2018		29/07/2019		01/12/2020	
चंद्र	15/11/2012	बुध	12/09/2014	शुक्र	20/08/2016	सूर्य	17/06/2018	मंगल	18/09/2019
बुध	19/02/2013	शुक्र	29/12/2014	सूर्य	29/10/2016	मंगल	02/08/2018	गुरु	12/11/2019
शुक्र	31/05/2013	सूर्य	05/03/2015	मंगल	13/01/2017	गुरु	22/09/2018	शनि	10/01/2020
सूर्य	01/08/2013	मंगल	16/05/2015	गुरु	06/04/2017	शनि	15/11/2018	केतु	14/03/2020
मंगल	08/10/2013	गुरु	02/08/2015	शनि	04/07/2017	केतु	12/01/2019	चंद्र	21/05/2020
गुरु	20/12/2013	शनि	25/10/2015	केतु	07/10/2017	चंद्र	15/03/2019	बुध	01/08/2020
शनि	10/03/2014	केतु	23/01/2016	चंद्र	17/01/2018	बुध	20/05/2019	शुक्र	16/10/2020
केतु	02/06/2014	चंद्र	28/04/2016	बुध	05/05/2018	शुक्र	29/07/2019	सूर्य	01/12/2020

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
01/12/2020		10/08/2022		02/06/2024		08/05/2026		26/05/2028	
10/08/2022		02/06/2024		08/05/2026		26/05/2028		29/07/2030	
शनि	14/02/2021	केतु	04/11/2022	चंद्र	07/09/2024	बुध	26/08/2026	शुक्र	27/09/2028
केतु	05/05/2021	चंद्र	03/02/2023	बुध	19/12/2024	शुक्र	20/12/2026	सूर्य	11/12/2028
चंद्र	29/07/2021	बुध	11/05/2023	शुक्र	08/04/2025	सूर्य	01/03/2027	मंगल	03/03/2029
बुध	27/10/2021	शुक्र	22/08/2023	सूर्य	14/06/2025	मंगल	18/05/2027	गुरु	31/05/2029
शुक्र	31/01/2022	सूर्य	23/10/2023	मंगल	26/08/2025	गुरु	10/08/2027	शनि	04/09/2029
सूर्य	30/03/2022	मंगल	31/12/2023	गुरु	13/11/2025	शनि	08/11/2027	केतु	15/12/2029
मंगल	02/06/2022	गुरु	14/03/2024	शनि	06/02/2026	केतु	13/02/2028	चंद्र	04/04/2030
गुरु	10/08/2022	शनि	02/06/2024	केतु	08/05/2026	चंद्र	26/05/2028	बुध	29/07/2030

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र	
29/07/2030		26/11/2031		08/05/2033		02/12/2034		09/11/2036	
26/11/2031		08/05/2033		02/12/2034		09/11/2036		05/12/2038	
सूर्य	13/09/2030	मंगल	19/01/2032	गुरु	11/07/2033	केतु	03/03/2035	चंद्र	22/02/2037
मंगल	02/11/2030	गुरु	19/03/2032	शनि	18/09/2033	चंद्र	09/06/2035	बुध	12/06/2037
गुरु	26/12/2030	शनि	22/05/2032	केतु	01/12/2033	बुध	21/09/2035	शुक्र	08/10/2037
शनि	23/02/2031	केतु	29/07/2032	चंद्र	18/02/2034	शुक्र	09/01/2036	सूर्य	18/12/2037
केतु	27/04/2031	चंद्र	10/10/2032	बुध	13/05/2034	सूर्य	16/03/2036	मंगल	06/03/2038
चंद्र	02/07/2031	बुध	27/12/2032	शुक्र	10/08/2034	मंगल	28/05/2036	गुरु	30/05/2038
बुध	12/09/2031	शुक्र	19/03/2033	सूर्य	04/10/2034	गुरु	16/08/2036	शनि	29/08/2038
शुक्र	26/11/2031	सूर्य	08/05/2033	मंगल	02/12/2034	शनि	09/11/2036	केतु	05/12/2038

केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु	
05/12/2038		15/02/2041		15/06/2043		16/11/2044		05/06/2046	
15/02/2041		15/06/2043		16/11/2044		05/06/2046		09/02/2048	
बुध	02/04/2039	शुक्र	27/06/2041	सूर्य	03/08/2043	मंगल	13/01/2045	गुरु	13/08/2046
शुक्र	04/08/2039	सूर्य	15/09/2041	मंगल	26/09/2043	गुरु	18/03/2045	शनि	26/10/2046
सूर्य	19/10/2039	मंगल	12/12/2041	गुरु	23/11/2043	शनि	25/05/2045	केतु	14/01/2047
मंगल	10/01/2040	गुरु	18/03/2042	शनि	25/01/2044	केतु	06/08/2045	चंद्र	08/04/2047
गुरु	09/04/2040	शनि	28/06/2042	केतु	01/04/2044	चंद्र	24/10/2045	बुध	07/07/2047
शनि	15/07/2040	केतु	16/10/2042	चंद्र	12/06/2044	बुध	15/01/2046	शुक्र	11/10/2047
केतु	27/10/2040	चंद्र	10/02/2043	बुध	27/08/2044	शुक्र	13/04/2046	सूर्य	08/12/2047
चंद्र	15/02/2041	बुध	15/06/2043	शुक्र	16/11/2044	सूर्य	05/06/2046	मंगल	09/02/2048

केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
09/02/2048		02/12/2049		16/02/2052		21/06/2054		14/12/2056	
02/12/2049		16/02/2052		21/06/2054		14/12/2056		21/06/2058	
शनि	29/04/2048	चंद्र	23/03/2050	बुध	20/06/2052	शुक्र	09/11/2054	सूर्य	04/02/2057
केतु	24/07/2048	बुध	19/07/2050	शुक्र	31/10/2052	सूर्य	03/02/2055	मंगल	03/04/2057
चंद्र	23/10/2048	शुक्र	21/11/2050	सूर्य	20/01/2053	मंगल	08/05/2055	गुरु	04/06/2057
बुध	28/01/2049	सूर्य	05/02/2051	मंगल	19/04/2053	गुरु	17/08/2055	शनि	10/08/2057
शुक्र	10/05/2049	मंगल	30/04/2051	गुरु	24/07/2053	शनि	05/12/2055	केतु	20/10/2057
सूर्य	12/07/2049	गुरु	29/07/2051	शनि	04/11/2053	केतु	31/03/2056	चंद्र	05/01/2058
मंगल	18/09/2049	शनि	03/11/2051	केतु	23/02/2054	चंद्र	03/08/2056	बुध	27/03/2058
गुरु	02/12/2049	केतु	16/02/2052	चंद्र	21/06/2054	बुध	14/12/2056	शुक्र	21/06/2058

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध	
21/06/2058		16/02/2060		02/12/2061		07/11/2063		02/12/2065	
16/02/2060		02/12/2061		07/11/2063		02/12/2065		30/05/2068	
मंगल	23/08/2058	गुरु	29/04/2060	शनि	25/02/2062	केतु	13/02/2064	बुध	14/04/2066
गुरु	29/10/2058	शनि	17/07/2060	केतु	27/05/2062	चंद्र	27/05/2064	शुक्र	02/09/2066
शनि	10/01/2059	केतु	10/10/2060	चंद्र	01/09/2062	बुध	15/09/2064	सूर्य	27/11/2066
केतु	30/03/2059	चंद्र	08/01/2061	बुध	14/12/2062	शुक्र	10/01/2065	मंगल	02/03/2067
चंद्र	21/06/2059	बुध	14/04/2061	शुक्र	02/04/2063	सूर्य	22/03/2065	गुरु	12/06/2067
बुध	17/09/2059	शुक्र	25/07/2061	सूर्य	08/06/2063	मंगल	09/06/2065	शनि	29/09/2067
शुक्र	20/12/2059	सूर्य	25/09/2061	मंगल	20/08/2063	गुरु	01/09/2065	केतु	25/01/2068
सूर्य	16/02/2060	मंगल	02/12/2061	गुरु	07/11/2063	शनि	02/12/2065	चंद्र	30/05/2068

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि	
30/05/2068		18/01/2071		29/08/2072		02/06/2074		28/04/2076	
18/01/2071		29/08/2072		02/06/2074		28/04/2076		17/05/2078	
शुक्र	26/10/2068	सूर्य	15/03/2071	मंगल	03/11/2072	गुरु	19/08/2074	शनि	27/07/2076
सूर्य	25/01/2069	मंगल	15/05/2071	गुरु	14/01/2073	शनि	11/11/2074	केतु	01/11/2076
मंगल	05/05/2069	गुरु	20/07/2071	शनि	02/04/2073	केतु	09/02/2075	चंद्र	13/02/2077
गुरु	21/08/2069	शनि	29/09/2071	केतु	24/06/2073	चंद्र	16/05/2075	बुध	03/06/2077
शनि	15/12/2069	केतु	14/12/2071	चंद्र	20/09/2073	बुध	26/08/2075	शुक्र	27/09/2077
केतु	19/04/2070	चंद्र	04/03/2072	बुध	24/12/2073	शुक्र	12/12/2075	सूर्य	07/12/2077
चंद्र	30/08/2070	बुध	29/05/2072	शुक्र	02/04/2074	सूर्य	16/02/2076	मंगल	22/02/2078
बुध	18/01/2071	शुक्र	29/08/2072	सूर्य	02/06/2074	मंगल	28/04/2076	गुरु	17/05/2078

बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल	
17/05/2078		28/07/2080		02/12/2082		17/09/2085		02/06/2087	
28/07/2080		02/12/2082		17/09/2085		02/06/2087		13/04/2089	
केतु	29/08/2078	चंद्र	23/11/2080	शुक्र	09/05/2083	सूर्य	15/11/2085	मंगल	12/08/2087
चंद्र	18/12/2078	बुध	29/03/2081	सूर्य	14/08/2083	मंगल	19/01/2086	गुरु	27/10/2087
बुध	15/04/2079	शुक्र	09/08/2081	मंगल	27/11/2083	गुरु	29/03/2086	शनि	17/01/2088
शुक्र	17/08/2079	सूर्य	29/10/2081	गुरु	21/03/2084	शनि	13/06/2086	केतु	14/04/2088
सूर्य	01/11/2079	मंगल	26/01/2082	शनि	22/07/2084	केतु	01/09/2086	चंद्र	17/07/2088
मंगल	23/01/2080	गुरु	02/05/2082	केतु	01/12/2084	चंद्र	26/11/2086	बुध	25/10/2088
गुरु	22/04/2080	शनि	13/08/2082	चंद्र	20/04/2085	बुध	26/02/2087	शुक्र	07/02/2089
शनि	28/07/2080	केतु	02/12/2082	बुध	17/09/2085	शुक्र	02/06/2087	सूर्य	13/04/2089

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 3 मास 29 दिन

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
23/08/1983		22/12/1983		22/12/1995		22/08/2006		23/04/2019	
22/12/1983		22/12/1995		22/08/2006		23/04/2019		22/08/2030	
	00/00/0000	राहु	10/10/1985	गुरु	25/05/1997	शनि	24/08/2008	बुध	29/11/2020
	00/00/0000	गुरु	17/05/1987	शनि	31/01/1999	बुध	10/06/2010	केतु	29/07/2021
	00/00/0000	शनि	10/04/1989	बुध	05/08/2000	केतु	07/03/2011	शुक्र	18/06/2023
	00/00/0000	बुध	22/12/1990	केतु	21/03/2001	शुक्र	16/04/2013	सूर्य	11/01/2024
	00/00/0000	केतु	04/09/1991	शुक्र	30/12/2002	सूर्य	03/12/2013	चंद्र	21/12/2024
	00/00/0000	शुक्र	03/09/1993	सूर्य	13/07/2003	चंद्र	24/12/2014	मंगल	20/08/2025
	00/00/0000	सूर्य	10/04/1994	चंद्र	01/06/2004	मंगल	20/09/2015	राहु	03/05/2027
	23/08/1983	चंद्र	10/04/1995	मंगल	15/01/2005	राहु	14/08/2017	गुरु	05/11/2028
चंद्र	22/12/1983	मंगल	22/12/1995	राहु	22/08/2006	गुरु	23/04/2019	शनि	22/08/2030

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
22/08/2030		23/04/2035		22/08/2048		22/08/2052		23/04/2059	
23/04/2035		22/08/2048		22/08/2052		23/04/2059		23/08/2063	
केतु	30/11/2030	शुक्र	12/07/2037	सूर्य	03/11/2048	चंद्र	13/03/2053	मंगल	31/07/2059
शुक्र	10/09/2031	सूर्य	13/03/2038	चंद्र	04/03/2049	मंगल	02/08/2053	राहु	12/04/2060
सूर्य	04/12/2031	चंद्र	23/04/2039	मंगल	29/05/2049	राहु	02/08/2054	गुरु	25/11/2060
चंद्र	24/04/2032	मंगल	01/02/2040	राहु	03/01/2050	गुरु	22/06/2055	शनि	22/08/2061
मंगल	01/08/2032	राहु	31/01/2042	गुरु	17/07/2050	शनि	12/07/2056	बुध	20/04/2062
राहु	14/04/2033	गुरु	12/11/2043	शनि	05/03/2051	बुध	22/06/2057	केतु	29/07/2062
गुरु	27/11/2033	शनि	22/12/2045	बुध	28/09/2051	केतु	11/11/2057	शुक्र	09/05/2063
शनि	24/08/2034	बुध	12/11/2047	केतु	22/12/2051	शुक्र	22/12/2058	सूर्य	02/08/2063
बुध	23/04/2035	केतु	22/08/2048	शुक्र	22/08/2052	सूर्य	23/04/2059	चंद्र	23/08/2063

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
23/08/1983		22/12/1983		10/10/1985		17/05/1987		10/04/1989	
22/12/1983		10/10/1985		17/05/1987		10/04/1989		22/12/1990	
	00/00/0000	राहु	30/03/1984	गुरु	26/12/1985	शनि	04/09/1987	बुध	07/07/1989
	23/08/1983	गुरु	25/06/1984	शनि	29/03/1986	बुध	11/12/1987	केतु	12/08/1989
राहु	13/09/1983	शनि	07/10/1984	बुध	20/06/1986	केतु	21/01/1988	शुक्र	24/11/1989
गुरु	01/10/1983	बुध	09/01/1985	केतु	24/07/1986	शुक्र	15/05/1988	सूर्य	25/12/1989
शनि	24/10/1983	केतु	16/02/1985	शुक्र	29/10/1986	सूर्य	19/06/1988	चंद्र	14/02/1990
बुध	13/11/1983	शुक्र	06/06/1985	सूर्य	28/11/1986	चंद्र	16/08/1988	मंगल	23/03/1990
केतु	21/11/1983	सूर्य	08/07/1985	चंद्र	15/01/1987	मंगल	25/09/1988	राहु	24/06/1990
शुक्र	15/12/1983	चंद्र	01/09/1985	मंगल	18/02/1987	राहु	07/01/1989	गुरु	15/09/1990
सूर्य	22/12/1983	मंगल	10/10/1985	राहु	17/05/1987	गुरु	10/04/1989	शनि	22/12/1990

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
22/12/1990		04/09/1991		03/09/1993		10/04/1994		10/04/1995	
04/09/1991		03/09/1993		10/04/1994		10/04/1995		22/12/1995	
केतु	06/01/1991	शुक्र	03/01/1992	सूर्य	14/09/1993	चंद्र	11/05/1994	मंगल	25/04/1995
शुक्र	17/02/1991	सूर्य	09/02/1992	चंद्र	02/10/1993	मंगल	01/06/1994	राहु	03/06/1995
सूर्य	02/03/1991	चंद्र	10/04/1992	मंगल	15/10/1993	राहु	26/07/1994	गुरु	07/07/1995
चंद्र	23/03/1991	मंगल	22/05/1992	राहु	17/11/1993	गुरु	12/09/1994	शनि	16/08/1995
मंगल	07/04/1991	राहु	09/09/1992	गुरु	16/12/1993	शनि	09/11/1994	बुध	22/09/1995
राहु	16/05/1991	गुरु	15/12/1992	शनि	20/01/1994	बुध	31/12/1994	केतु	06/10/1995
गुरु	19/06/1991	शनि	10/04/1993	बुध	20/02/1994	केतु	21/01/1995	शुक्र	18/11/1995
शनि	29/07/1991	बुध	22/07/1993	केतु	05/03/1994	शुक्र	23/03/1995	सूर्य	01/12/1995
बुध	04/09/1991	केतु	03/09/1993	शुक्र	10/04/1994	सूर्य	10/04/1995	चंद्र	22/12/1995

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
22/12/1995		25/05/1997		31/01/1999		05/08/2000		21/03/2001	
25/05/1997		31/01/1999		05/08/2000		21/03/2001		30/12/2002	
गुरु	29/02/1996	शनि	30/08/1997	बुध	20/04/1999	केतु	19/08/2000	शुक्र	07/07/2001
शनि	22/05/1996	बुध	26/11/1997	केतु	22/05/1999	शुक्र	26/09/2000	सूर्य	08/08/2001
बुध	03/08/1996	केतु	01/01/1998	शुक्र	22/08/1999	सूर्य	07/10/2000	चंद्र	01/10/2001
केतु	03/09/1996	शुक्र	13/04/1998	सूर्य	18/09/1999	चंद्र	26/10/2000	मंगल	08/11/2001
शुक्र	28/11/1996	सूर्य	14/05/1998	चंद्र	03/11/1999	मंगल	08/11/2000	राहु	14/02/2002
सूर्य	24/12/1996	चंद्र	05/07/1998	मंगल	06/12/1999	राहु	12/12/2000	गुरु	11/05/2002
चंद्र	05/02/1997	मंगल	10/08/1998	राहु	26/02/2000	गुरु	11/01/2001	शनि	22/08/2002
मंगल	08/03/1997	राहु	10/11/1998	गुरु	10/05/2000	शनि	16/02/2001	बुध	22/11/2002
राहु	25/05/1997	गुरु	31/01/1999	शनि	05/08/2000	बुध	21/03/2001	केतु	30/12/2002

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
30/12/2002		13/07/2003		01/06/2004		15/01/2005		22/08/2006	
13/07/2003		01/06/2004		15/01/2005		22/08/2006		24/08/2008	
सूर्य	09/01/2003	चंद्र	09/08/2003	मंगल	15/06/2004	राहु	12/04/2005	शनि	16/12/2006
चंद्र	25/01/2003	मंगल	28/08/2003	राहु	19/07/2004	गुरु	29/06/2005	बुध	30/03/2007
मंगल	05/02/2003	राहु	15/10/2003	गुरु	18/08/2004	शनि	30/09/2005	केतु	12/05/2007
राहु	07/03/2003	गुरु	28/11/2003	शनि	23/09/2004	बुध	22/12/2005	शुक्र	11/09/2007
गुरु	02/04/2003	शनि	18/01/2004	बुध	25/10/2004	केतु	25/01/2006	सूर्य	17/10/2007
शनि	02/05/2003	बुध	04/03/2004	केतु	08/11/2004	शुक्र	02/05/2006	चंद्र	17/12/2007
बुध	30/05/2003	केतु	23/03/2004	शुक्र	15/12/2004	सूर्य	31/05/2006	मंगल	29/01/2008
केतु	10/06/2003	शुक्र	16/05/2004	सूर्य	27/12/2004	चंद्र	19/07/2006	राहु	18/05/2008
शुक्र	13/07/2003	सूर्य	01/06/2004	चंद्र	15/01/2005	मंगल	22/08/2006	गुरु	24/08/2008

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
24/08/2008		10/06/2010		07/03/2011		16/04/2013		03/12/2013	
10/06/2010		07/03/2011		16/04/2013		03/12/2013		24/12/2014	
बुध	25/11/2008	केतु	26/06/2010	शुक्र	13/07/2011	सूर्य	28/04/2013	चंद्र	04/01/2014
केतु	02/01/2009	शुक्र	10/08/2010	सूर्य	21/08/2011	चंद्र	17/05/2013	मंगल	27/01/2014
शुक्र	21/04/2009	सूर्य	23/08/2010	चंद्र	24/10/2011	मंगल	30/05/2013	राहु	26/03/2014
सूर्य	24/05/2009	चंद्र	15/09/2010	मंगल	08/12/2011	राहु	04/07/2013	गुरु	16/05/2014
चंद्र	17/07/2009	मंगल	01/10/2010	राहु	02/04/2012	गुरु	04/08/2013	शनि	16/07/2014
मंगल	25/08/2009	राहु	10/11/2010	गुरु	14/07/2012	शनि	10/09/2013	बुध	09/09/2014
राहु	01/12/2009	गुरु	16/12/2010	शनि	13/11/2012	बुध	12/10/2013	केतु	01/10/2014
गुरु	26/02/2010	शनि	28/01/2011	बुध	02/03/2013	केतु	26/10/2013	शुक्र	05/12/2014
शनि	10/06/2010	बुध	07/03/2011	केतु	16/04/2013	शुक्र	03/12/2013	सूर्य	24/12/2014

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
24/12/2014		20/09/2015		14/08/2017		23/04/2019		29/11/2020	
20/09/2015		14/08/2017		23/04/2019		29/11/2020		29/07/2021	
मंगल	09/01/2015	राहु	02/01/2016	गुरु	04/11/2017	बुध	15/07/2019	केतु	13/12/2020
राहु	18/02/2015	गुरु	03/04/2016	शनि	10/02/2018	केतु	18/08/2019	शुक्र	22/01/2021
गुरु	26/03/2015	शनि	22/07/2016	बुध	08/05/2018	शुक्र	24/11/2019	सूर्य	03/02/2021
शनि	08/05/2015	बुध	29/10/2016	केतु	13/06/2018	सूर्य	23/12/2019	चंद्र	24/02/2021
बुध	15/06/2015	केतु	08/12/2016	शुक्र	24/09/2018	चंद्र	10/02/2020	मंगल	10/03/2021
केतु	01/07/2015	शुक्र	03/04/2017	सूर्य	25/10/2018	मंगल	15/03/2020	राहु	15/04/2021
शुक्र	15/08/2015	सूर्य	07/05/2017	चंद्र	15/12/2018	राहु	11/06/2020	गुरु	17/05/2021
सूर्य	28/08/2015	चंद्र	04/07/2017	मंगल	20/01/2019	गुरु	28/08/2020	शनि	24/06/2021
चंद्र	20/09/2015	मंगल	14/08/2017	राहु	23/04/2019	शनि	29/11/2020	बुध	29/07/2021

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
29/07/2021		18/06/2023		11/01/2024		21/12/2024		20/08/2025	
18/06/2023		11/01/2024		21/12/2024		20/08/2025		03/05/2027	
शुक्र	21/11/2021	सूर्य	29/06/2023	चंद्र	09/02/2024	मंगल	04/01/2025	राहु	21/11/2025
सूर्य	25/12/2021	चंद्र	16/07/2023	मंगल	29/02/2024	राहु	10/02/2025	गुरु	12/02/2026
चंद्र	20/02/2022	मंगल	28/07/2023	राहु	21/04/2024	गुरु	14/03/2025	शनि	21/05/2026
मंगल	02/04/2022	राहु	28/08/2023	गुरु	06/06/2024	शनि	21/04/2025	बुध	17/08/2026
राहु	14/07/2022	गुरु	25/09/2023	शनि	31/07/2024	बुध	25/05/2025	केतु	22/09/2026
गुरु	14/10/2022	शनि	28/10/2023	बुध	18/09/2024	केतु	08/06/2025	शुक्र	04/01/2027
शनि	31/01/2023	बुध	26/11/2023	केतु	08/10/2024	शुक्र	19/07/2025	सूर्य	04/02/2027
बुध	09/05/2023	केतु	08/12/2023	शुक्र	04/12/2024	सूर्य	31/07/2025	चंद्र	28/03/2027
केतु	18/06/2023	शुक्र	11/01/2024	सूर्य	21/12/2024	चंद्र	20/08/2025	मंगल	03/05/2027

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
03/05/2027		05/11/2028		22/08/2030		30/11/2030		10/09/2031	
05/11/2028		22/08/2030		30/11/2030		10/09/2031		04/12/2031	
गुरु	15/07/2027	शनि	16/02/2029	केतु	28/08/2030	शुक्र	16/01/2031	सूर्य	14/09/2031
शनि	11/10/2027	बुध	20/05/2029	शुक्र	13/09/2030	सूर्य	30/01/2031	चंद्र	21/09/2031
बुध	28/12/2027	केतु	28/06/2029	सूर्य	18/09/2030	चंद्र	23/02/2031	मंगल	26/09/2031
केतु	29/01/2028	शुक्र	15/10/2029	चंद्र	27/09/2030	मंगल	11/03/2031	राहु	09/10/2031
शुक्र	30/04/2028	सूर्य	17/11/2029	मंगल	03/10/2030	राहु	23/04/2031	गुरु	20/10/2031
सूर्य	28/05/2028	चंद्र	10/01/2030	राहु	17/10/2030	गुरु	31/05/2031	शनि	03/11/2031
चंद्र	13/07/2028	मंगल	17/02/2030	गुरु	31/10/2030	शनि	15/07/2031	बुध	15/11/2031
मंगल	14/08/2028	राहु	27/05/2030	शनि	15/11/2030	बुध	24/08/2031	केतु	20/11/2031
राहु	05/11/2028	गुरु	22/08/2030	बुध	30/11/2030	केतु	10/09/2031	शुक्र	04/12/2031

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
04/12/2031		24/04/2032		01/08/2032		14/04/2033		27/11/2033	
24/04/2032		01/08/2032		14/04/2033		27/11/2033		24/08/2034	
चंद्र	16/12/2031	मंगल	30/04/2032	राहु	09/09/2032	गुरु	14/05/2033	शनि	09/01/2034
मंगल	24/12/2031	राहु	15/05/2032	गुरु	13/10/2032	शनि	19/06/2033	बुध	16/02/2034
राहु	14/01/2032	गुरु	28/05/2032	शनि	22/11/2032	बुध	21/07/2033	केतु	04/03/2034
गुरु	02/02/2032	शनि	13/06/2032	बुध	28/12/2032	केतु	04/08/2033	शुक्र	18/04/2034
शनि	25/02/2032	बुध	27/06/2032	केतु	12/01/2033	शुक्र	11/09/2033	सूर्य	01/05/2034
बुध	16/03/2032	केतु	03/07/2032	शुक्र	24/02/2033	सूर्य	22/09/2033	चंद्र	24/05/2034
केतु	24/03/2032	शुक्र	19/07/2032	सूर्य	09/03/2033	चंद्र	11/10/2033	मंगल	09/06/2034
शुक्र	17/04/2032	सूर्य	24/07/2032	चंद्र	30/03/2033	मंगल	24/10/2033	राहु	19/07/2034
सूर्य	24/04/2032	चंद्र	01/08/2032	मंगल	14/04/2033	राहु	27/11/2033	गुरु	24/08/2034

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
24/08/2034		23/04/2035		12/07/2037		13/03/2038		23/04/2039	
23/04/2035		12/07/2037		13/03/2038		23/04/2039		01/02/2040	
बुध	27/09/2034	शुक्र	05/09/2035	सूर्य	24/07/2037	चंद्र	16/04/2038	मंगल	09/05/2039
केतु	11/10/2034	सूर्य	15/10/2035	चंद्र	14/08/2037	मंगल	09/05/2038	राहु	21/06/2039
शुक्र	21/11/2034	चंद्र	22/12/2035	मंगल	28/08/2037	राहु	09/07/2038	गुरु	29/07/2039
सूर्य	03/12/2034	मंगल	07/02/2036	राहु	03/10/2037	गुरु	01/09/2038	शनि	12/09/2039
चंद्र	23/12/2034	राहु	08/06/2036	गुरु	05/11/2037	शनि	05/11/2038	बुध	22/10/2039
मंगल	06/01/2035	गुरु	24/09/2036	शनि	14/12/2037	बुध	01/01/2039	केतु	07/11/2039
राहु	11/02/2035	शनि	31/01/2037	बुध	17/01/2038	केतु	25/01/2039	शुक्र	25/12/2039
गुरु	15/03/2035	बुध	26/05/2037	केतु	31/01/2038	शुक्र	02/04/2039	सूर्य	08/01/2040
शनि	23/04/2035	केतु	12/07/2037	शुक्र	13/03/2038	सूर्य	23/04/2039	चंद्र	01/02/2040

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
01/02/2040		31/01/2042		12/11/2043		22/12/2045		12/11/2047	
31/01/2042		12/11/2043		22/12/2045		12/11/2047		22/08/2048	
राहु	20/05/2040	गुरु	28/04/2042	शनि	13/03/2044	बुध	29/03/2046	केतु	28/11/2047
गुरु	26/08/2040	शनि	09/08/2042	बुध	30/06/2044	केतु	09/05/2046	शुक्र	14/01/2048
शनि	19/12/2040	बुध	09/11/2042	केतु	14/08/2044	शुक्र	01/09/2046	सूर्य	29/01/2048
बुध	02/04/2041	केतु	16/12/2042	शुक्र	20/12/2044	सूर्य	05/10/2046	चंद्र	21/02/2048
केतु	14/05/2041	शुक्र	04/04/2043	सूर्य	28/01/2045	चंद्र	02/12/2046	मंगल	09/03/2048
शुक्र	13/09/2041	सूर्य	06/05/2043	चंद्र	02/04/2045	मंगल	11/01/2047	राहु	21/04/2048
सूर्य	20/10/2041	चंद्र	29/06/2043	मंगल	17/05/2045	राहु	24/04/2047	गुरु	28/05/2048
चंद्र	20/12/2041	मंगल	06/08/2043	राहु	10/09/2045	गुरु	25/07/2047	शनि	12/07/2048
मंगल	31/01/2042	राहु	12/11/2043	गुरु	22/12/2045	शनि	12/11/2047	बुध	22/08/2048

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
22/08/2048		03/11/2048		04/03/2049		29/05/2049		03/01/2050	
03/11/2048		04/03/2049		29/05/2049		03/01/2050		17/07/2050	
सूर्य	25/08/2048	चंद्र	13/11/2048	मंगल	09/03/2049	राहु	01/07/2049	गुरु	29/01/2050
चंद्र	31/08/2048	मंगल	20/11/2048	राहु	22/03/2049	गुरु	30/07/2049	शनि	01/03/2050
मंगल	05/09/2048	राहु	08/12/2048	गुरु	03/04/2049	शनि	02/09/2049	बुध	28/03/2050
राहु	16/09/2048	गुरु	24/12/2048	शनि	16/04/2049	बुध	03/10/2049	केतु	09/04/2050
गुरु	25/09/2048	शनि	13/01/2049	बुध	28/04/2049	केतु	16/10/2049	शुक्र	11/05/2050
शनि	07/10/2048	बुध	30/01/2049	केतु	03/05/2049	शुक्र	22/11/2049	सूर्य	21/05/2050
बुध	17/10/2048	केतु	06/02/2049	शुक्र	17/05/2049	सूर्य	03/12/2049	चंद्र	06/06/2050
केतु	21/10/2048	शुक्र	26/02/2049	सूर्य	22/05/2049	चंद्र	21/12/2049	मंगल	17/06/2050
शुक्र	03/11/2048	सूर्य	04/03/2049	चंद्र	29/05/2049	मंगल	03/01/2050	राहु	17/07/2050

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
17/07/2050		05/03/2051		28/09/2051		22/12/2051		22/08/2052	
05/03/2051		28/09/2051		22/12/2051		22/08/2052		13/03/2053	
शनि	22/08/2050	बुध	03/04/2051	केतु	03/10/2051	शुक्र	01/02/2052	चंद्र	08/09/2052
बुध	24/09/2050	केतु	15/04/2051	शुक्र	17/10/2051	सूर्य	13/02/2052	मंगल	19/09/2052
केतु	07/10/2050	शुक्र	20/05/2051	सूर्य	21/10/2051	चंद्र	04/03/2052	राहु	20/10/2052
शुक्र	15/11/2050	सूर्य	30/05/2051	चंद्र	28/10/2051	मंगल	18/03/2052	गुरु	16/11/2052
सूर्य	27/11/2050	चंद्र	16/06/2051	मंगल	02/11/2051	राहु	24/04/2052	शनि	18/12/2052
चंद्र	16/12/2050	मंगल	28/06/2051	राहु	15/11/2051	गुरु	26/05/2052	बुध	16/01/2053
मंगल	29/12/2050	राहु	30/07/2051	गुरु	27/11/2051	शनि	04/07/2052	केतु	28/01/2053
राहु	02/02/2051	गुरु	26/08/2051	शनि	10/12/2051	बुध	07/08/2052	शुक्र	02/03/2053
गुरु	05/03/2051	शनि	28/09/2051	बुध	22/12/2051	केतु	22/08/2052	सूर्य	13/03/2053

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
13/03/2053		02/08/2053		02/08/2054		22/06/2055		12/07/2056	
02/08/2053		02/08/2054		22/06/2055		12/07/2056		22/06/2057	
मंगल	21/03/2053	राहु	25/09/2053	गुरु	14/09/2054	शनि	23/08/2055	बुध	30/08/2056
राहु	11/04/2053	गुरु	13/11/2053	शनि	05/11/2054	बुध	16/10/2055	केतु	19/09/2056
गुरु	30/04/2053	शनि	10/01/2054	बुध	21/12/2054	केतु	08/11/2055	शुक्र	16/11/2056
शनि	23/05/2053	बुध	03/03/2054	केतु	08/01/2055	शुक्र	11/01/2056	सूर्य	03/12/2056
बुध	12/06/2053	केतु	24/03/2054	शुक्र	04/03/2055	सूर्य	30/01/2056	चंद्र	01/01/2057
केतु	20/06/2053	शुक्र	24/05/2054	सूर्य	20/03/2055	चंद्र	02/03/2056	मंगल	21/01/2057
शुक्र	14/07/2053	सूर्य	11/06/2054	चंद्र	16/04/2055	मंगल	25/03/2056	राहु	13/03/2057
सूर्य	21/07/2053	चंद्र	12/07/2054	मंगल	05/05/2055	राहु	22/05/2056	गुरु	28/04/2057
चंद्र	02/08/2053	मंगल	02/08/2054	राहु	22/06/2055	गुरु	12/07/2056	शनि	22/06/2057

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
22/06/2057		11/11/2057		22/12/2058		23/04/2059		31/07/2059	
11/11/2057		22/12/2058		23/04/2059		31/07/2059		12/04/2060	
केतु	30/06/2057	शुक्र	18/01/2058	सूर्य	28/12/2058	मंगल	28/04/2059	राहु	07/09/2059
शुक्र	24/07/2057	सूर्य	07/02/2058	चंद्र	07/01/2059	राहु	13/05/2059	गुरु	11/10/2059
सूर्य	31/07/2057	चंद्र	13/03/2058	मंगल	14/01/2059	गुरु	27/05/2059	शनि	21/11/2059
चंद्र	12/08/2057	मंगल	05/04/2058	राहु	01/02/2059	शनि	11/06/2059	बुध	27/12/2059
मंगल	20/08/2057	राहु	05/06/2058	गुरु	18/02/2059	बुध	25/06/2059	केतु	11/01/2060
राहु	10/09/2057	गुरु	29/07/2058	शनि	09/03/2059	केतु	01/07/2059	शुक्र	23/02/2060
गुरु	29/09/2057	शनि	02/10/2058	बुध	26/03/2059	शुक्र	18/07/2059	सूर्य	07/03/2060
शनि	22/10/2057	बुध	28/11/2058	केतु	02/04/2059	सूर्य	23/07/2059	चंद्र	28/03/2060
बुध	11/11/2057	केतु	22/12/2058	शुक्र	23/04/2059	चंद्र	31/07/2059	मंगल	12/04/2060

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 13 वर्ष 1 मास 11 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
23/08/1983		04/10/1996		04/10/2008		04/10/2029		05/10/2035	
04/10/1996		04/10/2008		04/10/2029		05/10/2035		04/10/2050	
	00/00/0000	राहु	03/02/1998	शुक्र	03/11/2012	सूर्य	03/02/2030	चंद्र	03/11/2037
	23/08/1983	शुक्र	04/06/2000	सूर्य	03/01/2014	चंद्र	04/12/2030	मंगल	14/12/2038
शुक्र	27/11/1986	सूर्य	03/02/2001	चंद्र	04/12/2016	मंगल	15/05/2031	बुध	25/04/2041
सूर्य	18/12/1987	चंद्र	04/10/2002	मंगल	25/06/2018	बुध	24/04/2032	शनि	14/09/2042
चंद्र	08/08/1990	मंगल	25/08/2003	बुध	14/10/2021	शनि	13/11/2032	गुरु	05/05/2045
मंगल	04/01/1992	बुध	15/07/2005	शनि	24/09/2023	गुरु	04/12/2033	राहु	04/01/2047
बुध	31/12/1994	शनि	25/08/2006	गुरु	05/06/2027	राहु	04/08/2034	शुक्र	04/12/2049
शनि	04/10/1996	गुरु	04/10/2008	राहु	04/10/2029	शुक्र	05/10/2035	सूर्य	04/10/2050

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
04/10/2050		04/10/2058		05/10/2075		04/10/2085	
04/10/2058		05/10/2075		04/10/2085		00/00/0000	
मंगल	09/05/2051	बुध	08/06/2061	शनि	07/09/2076	गुरु	06/02/2089
बुध	11/08/2052	शनि	04/01/2063	गुरु	11/06/2078	राहु	19/03/2091
शनि	08/05/2053	गुरु	31/12/2065	राहु	22/07/2079	शुक्र	23/08/2091
गुरु	04/10/2054	राहु	21/11/2067	शुक्र	01/07/2081		00/00/0000
राहु	25/08/2055	शुक्र	12/03/2071	सूर्य	20/01/2082		00/00/0000
शुक्र	15/03/2057	सूर्य	20/02/2072	चंद्र	12/06/2083		00/00/0000
सूर्य	24/08/2057	चंद्र	02/07/2074	मंगल	08/03/2084		00/00/0000
चंद्र	04/10/2058	मंगल	05/10/2075	बुध	04/10/2085		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
23/08/1983		27/11/1986		18/12/1987		08/08/1990		04/01/1992	
27/11/1986		18/12/1987		08/08/1990		04/01/1992		31/12/1994	
शुक्र	06/12/1983	सूर्य	19/12/1986	चंद्र	30/04/1988	मंगल	15/09/1990	बुध	24/06/1992
सूर्य	19/02/1984	चंद्र	10/02/1987	मंगल	10/07/1988	बुध	05/12/1990	शनि	03/10/1992
चंद्र	25/08/1984	मंगल	11/03/1987	बुध	09/12/1988	शनि	21/01/1991	गुरु	13/04/1993
मंगल	03/12/1984	बुध	11/05/1987	शनि	08/03/1989	गुरु	22/04/1991	राहु	12/08/1993
बुध	03/07/1985	शनि	15/06/1987	गुरु	25/08/1989	राहु	18/06/1991	शुक्र	13/03/1994
शनि	05/11/1985	गुरु	22/08/1987	राहु	10/12/1989	शुक्र	26/09/1991	सूर्य	13/05/1994
गुरु	30/06/1986	राहु	04/10/1987	शुक्र	15/06/1990	सूर्य	24/10/1991	चंद्र	11/10/1994
राहु	27/11/1986	शुक्र	18/12/1987	सूर्य	08/08/1990	चंद्र	04/01/1992	मंगल	31/12/1994

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
31/12/1994		04/10/1996		03/02/1998		04/06/2000		03/02/2001	
04/10/1996		03/02/1998		04/06/2000		03/02/2001		04/10/2002	
शनि	01/03/1995	राहु	27/11/1996	शुक्र	18/07/1998	सूर्य	18/06/2000	चंद्र	28/04/2001
गुरु	22/06/1995	शुक्र	02/03/1997	सूर्य	04/09/1998	चंद्र	21/07/2000	मंगल	12/06/2001
राहु	01/09/1995	सूर्य	29/03/1997	चंद्र	31/12/1998	मंगल	08/08/2000	बुध	16/09/2001
शुक्र	04/01/1996	चंद्र	04/06/1997	मंगल	04/03/1999	बुध	16/09/2000	शनि	11/11/2001
सूर्य	09/02/1996	मंगल	10/07/1997	बुध	16/07/1999	शनि	08/10/2000	गुरु	26/02/2002
चंद्र	08/05/1996	बुध	25/09/1997	शनि	03/10/1999	गुरु	20/11/2000	राहु	05/05/2002
मंगल	25/06/1996	शनि	09/11/1997	गुरु	01/03/2000	राहु	17/12/2000	शुक्र	31/08/2002
बुध	04/10/1996	गुरु	03/02/1998	राहु	04/06/2000	शुक्र	03/02/2001	सूर्य	04/10/2002

राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र	
04/10/2002		25/08/2003		15/07/2005		25/08/2006		04/10/2008	
25/08/2003		15/07/2005		25/08/2006		04/10/2008		03/11/2012	
मंगल	28/10/2002	बुध	12/12/2003	शनि	21/08/2005	गुरु	07/01/2007	शुक्र	21/07/2009
बुध	18/12/2002	शनि	13/02/2004	गुरु	01/11/2005	राहु	03/04/2007	सूर्य	12/10/2009
शनि	17/01/2003	गुरु	14/06/2004	राहु	16/12/2005	शुक्र	31/08/2007	चंद्र	07/05/2010
गुरु	16/03/2003	राहु	29/08/2004	शुक्र	05/03/2006	सूर्य	13/10/2007	मंगल	25/08/2010
राहु	21/04/2003	शुक्र	11/01/2005	सूर्य	27/03/2006	चंद्र	28/01/2008	बुध	17/04/2011
शुक्र	23/06/2003	सूर्य	18/02/2005	चंद्र	23/05/2006	मंगल	25/03/2008	शनि	02/09/2011
सूर्य	11/07/2003	चंद्र	25/05/2005	मंगल	22/06/2006	बुध	24/07/2008	गुरु	21/05/2012
चंद्र	25/08/2003	मंगल	15/07/2005	बुध	25/08/2006	शनि	04/10/2008	राहु	03/11/2012

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि	
03/11/2012		03/01/2014		04/12/2016		25/06/2018		14/10/2021	
03/01/2014		04/12/2016		25/06/2018		14/10/2021		24/09/2023	
सूर्य	27/11/2012	चंद्र	31/05/2014	मंगल	15/01/2017	बुध	01/01/2019	शनि	19/12/2021
चंद्र	25/01/2013	मंगल	18/08/2014	बुध	14/04/2017	शनि	23/04/2019	गुरु	23/04/2022
मंगल	26/02/2013	बुध	02/02/2015	शनि	06/06/2017	गुरु	21/11/2019	राहु	11/07/2022
बुध	04/05/2013	शनि	12/05/2015	गुरु	14/09/2017	राहु	03/04/2020	शुक्र	26/11/2022
शनि	12/06/2013	गुरु	15/11/2015	राहु	16/11/2017	शुक्र	24/11/2020	सूर्य	04/01/2023
गुरु	26/08/2013	राहु	12/03/2016	शुक्र	06/03/2018	सूर्य	30/01/2021	चंद्र	13/04/2023
राहु	12/10/2013	शुक्र	05/10/2016	सूर्य	07/04/2018	चंद्र	17/07/2021	मंगल	05/06/2023
शुक्र	03/01/2014	सूर्य	04/12/2016	चंद्र	25/06/2018	मंगल	14/10/2021	बुध	24/09/2023

शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
24/09/2023		05/06/2027		04/10/2029		03/02/2030		04/12/2030	
05/06/2027		04/10/2029		03/02/2030		04/12/2030		15/05/2031	
गुरु	19/05/2024	राहु	07/09/2027	सूर्य	11/10/2029	चंद्र	17/03/2030	मंगल	16/12/2030
राहु	16/10/2024	शुक्र	20/02/2028	चंद्र	28/10/2029	मंगल	09/04/2030	बुध	11/01/2031
शुक्र	05/07/2025	सूर्य	08/04/2028	मंगल	06/11/2029	बुध	27/05/2030	शनि	26/01/2031
सूर्य	18/09/2025	चंद्र	04/08/2028	बुध	25/11/2029	शनि	24/06/2030	गुरु	23/02/2031
चंद्र	24/03/2026	मंगल	06/10/2028	शनि	06/12/2029	गुरु	16/08/2030	राहु	13/03/2031
मंगल	02/07/2026	बुध	17/02/2029	गुरु	28/12/2029	राहु	19/09/2030	शुक्र	14/04/2031
बुध	31/01/2027	शनि	07/05/2029	राहु	10/01/2030	शुक्र	17/11/2030	सूर्य	23/04/2031
शनि	05/06/2027	गुरु	04/10/2029	शुक्र	03/02/2030	सूर्य	04/12/2030	चंद्र	15/05/2031

सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र	
15/05/2031		24/04/2032		13/11/2032		04/12/2033		04/08/2034	
24/04/2032		13/11/2032		04/12/2033		04/08/2034		05/10/2035	
बुध	09/07/2031	शनि	13/05/2032	गुरु	20/01/2033	राहु	31/12/2033	शुक्र	26/10/2034
शनि	10/08/2031	गुरु	18/06/2032	राहु	04/03/2033	शुक्र	16/02/2034	सूर्य	19/11/2034
गुरु	09/10/2031	राहु	10/07/2032	शुक्र	18/05/2033	सूर्य	02/03/2034	चंद्र	17/01/2035
राहु	17/11/2031	शुक्र	19/08/2032	सूर्य	08/06/2033	चंद्र	05/04/2034	मंगल	18/02/2035
शुक्र	23/01/2032	सूर्य	30/08/2032	चंद्र	01/08/2033	मंगल	23/04/2034	बुध	26/04/2035
सूर्य	11/02/2032	चंद्र	27/09/2032	मंगल	30/08/2033	बुध	31/05/2034	शनि	04/06/2035
चंद्र	30/03/2032	मंगल	12/10/2032	बुध	29/10/2033	शनि	23/06/2034	गुरु	18/08/2035
मंगल	24/04/2032	बुध	13/11/2032	शनि	04/12/2033	गुरु	04/08/2034	राहु	05/10/2035

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
05/10/2035	
03/11/2037	
चंद्र	18/01/2036
मंगल	15/03/2036
बुध	12/07/2036
शनि	21/09/2036
गुरु	02/02/2037
राहु	27/04/2037
शुक्र	22/09/2037
सूर्य	03/11/2037

चंद्र - मंगल	
03/11/2037	
14/12/2038	
मंगल	04/12/2037
बुध	05/02/2038
शनि	15/03/2038
गुरु	25/05/2038
राहु	09/07/2038
शुक्र	26/09/2038
सूर्य	19/10/2038
चंद्र	14/12/2038

चंद्र - बुध	
14/12/2038	
25/04/2041	
बुध	29/04/2039
शनि	18/07/2039
गुरु	17/12/2039
राहु	21/03/2040
शुक्र	05/09/2040
सूर्य	23/10/2040
चंद्र	20/02/2041
मंगल	25/04/2041

चंद्र - शनि	
25/04/2041	
14/09/2042	
शनि	11/06/2041
गुरु	08/09/2041
राहु	03/11/2041
शुक्र	10/02/2042
सूर्य	10/03/2042
चंद्र	20/05/2042
मंगल	26/06/2042
बुध	14/09/2042

चंद्र - गुरु	
14/09/2042	
05/05/2045	
गुरु	03/03/2043
राहु	18/06/2043
शुक्र	22/12/2043
सूर्य	14/02/2044
चंद्र	26/06/2044
मंगल	06/09/2044
बुध	05/02/2045
शनि	05/05/2045

चंद्र - राहु	
05/05/2045	
04/01/2047	
राहु	11/07/2045
शुक्र	07/11/2045
सूर्य	11/12/2045
चंद्र	05/03/2046
मंगल	19/04/2046
बुध	24/07/2046
शनि	18/09/2046
गुरु	04/01/2047

चंद्र - शुक्र	
04/01/2047	
04/12/2049	
शुक्र	30/07/2047
सूर्य	27/09/2047
चंद्र	22/02/2048
मंगल	11/05/2048
बुध	25/10/2048
शनि	01/02/2049
गुरु	08/08/2049
राहु	04/12/2049

चंद्र - सूर्य	
04/12/2049	
04/10/2050	
सूर्य	21/12/2049
चंद्र	01/02/2050
मंगल	24/02/2050
बुध	13/04/2050
शनि	11/05/2050
गुरु	03/07/2050
राहु	06/08/2050
शुक्र	04/10/2050

मंगल - मंगल	
04/10/2050	
09/05/2051	
मंगल	20/10/2050
बुध	23/11/2050
शनि	13/12/2050
गुरु	20/01/2051
राहु	14/02/2051
शुक्र	28/03/2051
सूर्य	09/04/2051
चंद्र	09/05/2051

मंगल - बुध	
09/05/2051	
11/08/2052	
बुध	20/07/2051
शनि	01/09/2051
गुरु	21/11/2051
राहु	11/01/2052
शुक्र	09/04/2052
सूर्य	05/05/2052
चंद्र	08/07/2052
मंगल	11/08/2052

मंगल - शनि	
11/08/2052	
08/05/2053	
शनि	05/09/2052
गुरु	22/10/2052
राहु	21/11/2052
शुक्र	13/01/2053
सूर्य	28/01/2053
चंद्र	07/03/2053
मंगल	27/03/2053
बुध	08/05/2053

मंगल - गुरु	
08/05/2053	
04/10/2054	
गुरु	07/08/2053
राहु	03/10/2053
शुक्र	11/01/2054
सूर्य	08/02/2054
चंद्र	21/04/2054
मंगल	29/05/2054
बुध	18/08/2054
शनि	04/10/2054

मंगल - राहु	
04/10/2054	
25/08/2055	
राहु	09/11/2054
शुक्र	11/01/2055
सूर्य	30/01/2055
चंद्र	16/03/2055
मंगल	09/04/2055
बुध	30/05/2055
शनि	29/06/2055
गुरु	25/08/2055

मंगल - शुक्र	
25/08/2055	
15/03/2057	
शुक्र	13/12/2055
सूर्य	14/01/2056
चंद्र	02/04/2056
मंगल	14/05/2056
बुध	11/08/2056
शनि	03/10/2056
गुरु	11/01/2057
राहु	15/03/2057

मंगल - सूर्य	
15/03/2057	
24/08/2057	
सूर्य	24/03/2057
चंद्र	16/04/2057
मंगल	28/04/2057
बुध	23/05/2057
शनि	07/06/2057
गुरु	06/07/2057
राहु	24/07/2057
शुक्र	24/08/2057

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु	
24/08/2057		04/10/2058		08/06/2061		04/01/2063		31/12/2065	
04/10/2058		08/06/2061		04/01/2063		31/12/2065		21/11/2067	
चंद्र	20/10/2057	बुध	07/03/2059	शनि	31/07/2061	गुरु	15/07/2063	राहु	18/03/2066
मंगल	19/11/2057	शनि	06/06/2059	गुरु	09/11/2061	राहु	13/11/2063	शुक्र	30/07/2066
बुध	22/01/2058	गुरु	25/11/2059	राहु	12/01/2062	शुक्र	13/06/2064	सूर्य	06/09/2066
शनि	28/02/2058	राहु	12/03/2060	शुक्र	04/05/2062	सूर्य	12/08/2064	चंद्र	11/12/2066
गुरु	11/05/2058	शुक्र	18/09/2060	सूर्य	05/06/2062	चंद्र	11/01/2065	मंगल	31/01/2067
राहु	25/06/2058	सूर्य	12/11/2060	चंद्र	23/08/2062	मंगल	02/04/2065	बुध	20/05/2067
शुक्र	12/09/2058	चंद्र	27/03/2061	मंगल	05/10/2062	बुध	21/09/2065	शनि	22/07/2067
सूर्य	04/10/2058	मंगल	08/06/2061	बुध	04/01/2063	शनि	31/12/2065	गुरु	21/11/2067

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि	
21/11/2067		12/03/2071		20/02/2072		02/07/2074		05/10/2075	
12/03/2071		20/02/2072		02/07/2074		05/10/2075		07/09/2076	
शुक्र	13/07/2068	सूर्य	31/03/2071	चंद्र	19/06/2072	मंगल	05/08/2074	शनि	05/11/2075
सूर्य	18/09/2068	चंद्र	18/05/2071	मंगल	22/08/2072	बुध	16/10/2074	गुरु	03/01/2076
चंद्र	04/03/2069	मंगल	13/06/2071	बुध	05/01/2073	शनि	28/11/2074	राहु	10/02/2076
मंगल	02/06/2069	बुध	06/08/2071	शनि	25/03/2073	गुरु	17/02/2075	शुक्र	16/04/2076
बुध	09/12/2069	शनि	07/09/2071	गुरु	24/08/2073	राहु	09/04/2075	सूर्य	04/05/2076
शनि	31/03/2070	गुरु	07/11/2071	राहु	28/11/2073	शुक्र	07/07/2075	चंद्र	20/06/2076
गुरु	29/10/2070	राहु	15/12/2071	शुक्र	15/05/2074	सूर्य	02/08/2075	मंगल	15/07/2076
राहु	12/03/2071	शुक्र	20/02/2072	सूर्य	02/07/2074	चंद्र	05/10/2075	बुध	07/09/2076

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
07/09/2076		11/06/2078		22/07/2079		01/07/2081		20/01/2082	
11/06/2078		22/07/2079		01/07/2081		20/01/2082		12/06/2083	
गुरु	29/12/2076	राहु	26/07/2078	शुक्र	07/12/2079	सूर्य	13/07/2081	चंद्र	01/04/2082
राहु	10/03/2077	शुक्र	13/10/2078	सूर्य	16/01/2080	चंद्र	10/08/2081	मंगल	08/05/2082
शुक्र	13/07/2077	सूर्य	05/11/2078	चंद्र	23/04/2080	मंगल	25/08/2081	बुध	27/07/2082
सूर्य	18/08/2077	चंद्र	31/12/2078	मंगल	15/06/2080	बुध	26/09/2081	शनि	12/09/2082
चंद्र	15/11/2077	मंगल	30/01/2079	बुध	05/10/2080	शनि	15/10/2081	गुरु	10/12/2082
मंगल	02/01/2078	बुध	04/04/2079	शनि	09/12/2080	गुरु	19/11/2081	राहु	05/02/2083
बुध	13/04/2078	शनि	12/05/2079	गुरु	13/04/2081	राहु	12/12/2081	शुक्र	14/05/2083
शनि	11/06/2078	गुरु	22/07/2079	राहु	01/07/2081	शुक्र	20/01/2082	सूर्य	12/06/2083

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : पिंगला 0 वर्ष 1 मास 21 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
23/08/1983		14/10/1983		14/10/1986		14/10/1990		14/10/1995	
14/10/1983		14/10/1986		14/10/1990		14/10/1995		14/10/2001	
00/00/0000	धांय	13/01/1984	भ्राम	25/03/1987	भद्रि	24/06/1991	उल्क	13/10/1996
00/00/0000	भ्राम	14/05/1984	भद्रि	14/10/1987	उल्क	24/04/1992	सिद्ध	13/12/1997
00/00/0000	भद्रि	13/10/1984	उल्क	14/06/1988	सिद्ध	14/04/1993	संक	14/04/1999
00/00/0000	उल्क	14/04/1985	सिद्ध	25/03/1989	संक	25/05/1994	मंग	14/06/1999
00/00/0000	सिद्ध	13/11/1985	संक	12/02/1990	मंग	15/07/1994	पिंग	14/10/1999
23/08/1983	संक	15/07/1986	मंग	25/03/1990	पिंग	24/10/1994	धांय	14/04/2000
संक 24/09/1983	मंग	14/08/1986	पिंग	14/06/1990	धांय	25/03/1995	भ्राम	13/12/2000
मंग 14/10/1983	पिंग	14/10/1986	धांय	14/10/1990	भ्राम	14/10/1995	भद्रि	14/10/2001

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
14/10/2001		13/10/2008		13/10/2016		14/10/2017		14/10/2019	
13/10/2008		13/10/2016		14/10/2017		14/10/2019		14/10/2022	
सिद्ध 23/02/2003	संक	25/07/2010	मंग	23/10/2016	पिंग	23/11/2017	धांय	13/01/2020
संक 13/09/2004	मंग	14/10/2010	पिंग	13/11/2016	धांय	23/01/2018	भ्राम	14/05/2020
मंग 23/11/2004	पिंग	25/03/2011	धांय	13/12/2016	भ्राम	14/04/2018	भद्रि	13/10/2020
पिंग 14/04/2005	धांय	24/11/2011	भ्राम	23/01/2017	भद्रि	25/07/2018	उल्क	14/04/2021
धांय 13/11/2005	भ्राम	13/10/2012	भद्रि	15/03/2017	उल्क	23/11/2018	सिद्ध	13/11/2021
भ्राम 24/08/2006	भद्रि	23/11/2013	उल्क	14/05/2017	सिद्ध	14/04/2019	संक	15/07/2022
भद्रि 14/08/2007	उल्क	25/03/2015	सिद्ध	24/07/2017	संक	24/09/2019	मंग	14/08/2022
उल्क 13/10/2008	सिद्ध	13/10/2016	संक	14/10/2017	मंग	14/10/2019	पिंग	14/10/2022

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
14/10/2022		14/10/2026		14/10/2031		14/10/2037		13/10/2044	
14/10/2026		14/10/2031		14/10/2037		13/10/2044		13/10/2052	
भ्राम	25/03/2023	भद्रि	24/06/2027	उल्क	13/10/2032	सिद्ध	23/02/2039	संक	25/07/2046
भद्रि	14/10/2023	उल्क	24/04/2028	सिद्ध	13/12/2033	संक	13/09/2040	मंग	14/10/2046
उल्क	14/06/2024	सिद्ध	14/04/2029	संक	14/04/2035	मंग	23/11/2040	पिंग	25/03/2047
सिद्ध	25/03/2025	संक	25/05/2030	मंग	14/06/2035	पिंग	14/04/2041	धांय	24/11/2047
संक	12/02/2026	मंग	15/07/2030	पिंग	14/10/2035	धांय	13/11/2041	भ्राम	13/10/2048
मंग	25/03/2026	पिंग	24/10/2030	धांय	14/04/2036	भ्राम	24/08/2042	भद्रि	23/11/2049
पिंग	14/06/2026	धांय	25/03/2031	भ्राम	13/12/2036	भद्रि	14/08/2043	उल्क	25/03/2051
धांय	14/10/2026	भ्राम	14/10/2031	भद्रि	14/10/2037	उल्क	13/10/2044	सिद्ध	13/10/2052

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
13/10/2052		14/10/2053		14/10/2055		14/10/2058		14/10/2062	
14/10/2053		14/10/2055		14/10/2058		14/10/2062		14/10/2067	
मंग	23/10/2052	पिंग	23/11/2053	धांय	13/01/2056	भ्राम	25/03/2059	भद्रि	24/06/2063
पिंग	13/11/2052	धांय	23/01/2054	भ्राम	14/05/2056	भद्रि	14/10/2059	उल्क	24/04/2064
धांय	13/12/2052	भ्राम	14/04/2054	भद्रि	13/10/2056	उल्क	14/06/2060	सिद्ध	14/04/2065
भ्राम	23/01/2053	भद्रि	25/07/2054	उल्क	14/04/2057	सिद्ध	25/03/2061	संक	25/05/2066
भद्रि	15/03/2053	उल्क	23/11/2054	सिद्ध	13/11/2057	संक	12/02/2062	मंग	15/07/2066
उल्क	14/05/2053	सिद्ध	14/04/2055	संक	15/07/2058	मंग	25/03/2062	पिंग	24/10/2066
सिद्ध	24/07/2053	संक	24/09/2055	मंग	14/08/2058	पिंग	14/06/2062	धांय	25/03/2067
संक	14/10/2053	मंग	14/10/2055	पिंग	14/10/2058	धांय	14/10/2062	भ्राम	14/10/2067

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
14/10/2067		14/10/2073		13/10/2080		13/10/2088		14/10/2089	
14/10/2073		13/10/2080		13/10/2088		14/10/2089		00/00/0000	
उल्क	13/10/2068	सिद्ध	23/02/2075	संक	25/07/2082	मंग	23/10/2088	पिंग	23/11/2089
सिद्ध	13/12/2069	संक	13/09/2076	मंग	14/10/2082	पिंग	13/11/2088	धांय	23/01/2090
संक	14/04/2071	मंग	23/11/2076	पिंग	25/03/2083	धांय	13/12/2088	भ्राम	14/04/2090
मंग	14/06/2071	पिंग	14/04/2077	धांय	24/11/2083	भ्राम	23/01/2089	भद्रि	25/07/2090
पिंग	14/10/2071	धांय	13/11/2077	भ्राम	13/10/2084	भद्रि	15/03/2089	उल्क	23/11/2090
धांय	14/04/2072	भ्राम	24/08/2078	भद्रि	23/11/2085	उल्क	14/05/2089	सिद्ध	14/04/2091
भ्राम	13/12/2072	भद्रि	14/08/2079	उल्क	25/03/2087	सिद्ध	24/07/2089	संक	23/08/2091
भद्रि	14/10/2073	उल्क	13/10/2080	सिद्ध	13/10/2088	संक	14/10/2089		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय		भद्रि - भद्रि	
25/03/2025		12/02/2026		25/03/2026		14/06/2026		14/10/2026	
12/02/2026		25/03/2026		14/06/2026		14/10/2026		24/06/2027	
संक	05/06/2025	मंग	13/02/2026	पिंग	29/03/2026	धांय	24/06/2026	भद्रि	18/11/2026
मंग	14/06/2025	पिंग	16/02/2026	धांय	05/04/2026	भ्राम	08/07/2026	उल्क	30/12/2026
पिंग	02/07/2025	धांय	19/02/2026	भ्राम	14/04/2026	भद्रि	25/07/2026	सिद्ध	18/02/2027
धांय	29/07/2025	भ्राम	24/02/2026	भद्रि	25/04/2026	उल्क	14/08/2026	संक	15/04/2027
भ्राम	03/09/2025	भद्रि	01/03/2026	उल्क	09/05/2026	सिद्ध	07/09/2026	मंग	22/04/2027
भद्रि	18/10/2025	उल्क	08/03/2026	सिद्ध	25/05/2026	संक	04/10/2026	पिंग	06/05/2027
उल्क	11/12/2025	सिद्ध	16/03/2026	संक	12/06/2026	मंग	07/10/2026	धांय	27/05/2027
सिद्ध	12/02/2026	संक	25/03/2026	मंग	14/06/2026	पिंग	14/10/2026	भ्राम	24/06/2027

भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग	
24/06/2027		24/04/2028		14/04/2029		25/05/2030		15/07/2030	
24/04/2028		14/04/2029		25/05/2030		15/07/2030		24/10/2030	
उल्क	14/08/2027	सिद्ध	02/07/2028	संक	13/07/2029	मंग	26/05/2030	पिंग	20/07/2030
सिद्ध	12/10/2027	संक	19/09/2028	मंग	24/07/2029	पिंग	29/05/2030	धांय	29/07/2030
संक	19/12/2027	मंग	29/09/2028	पिंग	16/08/2029	धांय	02/06/2030	भ्राम	09/08/2030
मंग	27/12/2027	पिंग	18/10/2028	धांय	19/09/2029	भ्राम	08/06/2030	भद्रि	23/08/2030
पिंग	13/01/2028	धांय	17/11/2028	भ्राम	03/11/2029	भद्रि	15/06/2030	उल्क	09/09/2030
धांय	08/02/2028	भ्राम	26/12/2028	भद्रि	29/12/2029	उल्क	23/06/2030	सिद्ध	29/09/2030
भ्राम	13/03/2028	भद्रि	14/02/2029	उल्क	07/03/2030	सिद्ध	03/07/2030	संक	21/10/2030
भद्रि	24/04/2028	उल्क	14/04/2029	सिद्ध	25/05/2030	संक	15/07/2030	मंग	24/10/2030

भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक	
24/10/2030		25/03/2031		14/10/2031		13/10/2032		13/12/2033	
25/03/2031		14/10/2031		13/10/2032		13/12/2033		14/04/2035	
धांय	06/11/2030	भ्राम	17/04/2031	उल्क	14/12/2031	सिद्ध	04/01/2033	संक	01/04/2034
भ्राम	23/11/2030	भद्रि	15/05/2031	सिद्ध	23/02/2032	संक	09/04/2033	मंग	14/04/2034
भद्रि	14/12/2030	उल्क	18/06/2031	संक	14/05/2032	मंग	21/04/2033	पिंग	11/05/2034
उल्क	08/01/2031	सिद्ध	27/07/2031	मंग	24/05/2032	पिंग	14/05/2033	धांय	21/06/2034
सिद्ध	07/02/2031	संक	10/09/2031	पिंग	14/06/2032	धांय	19/06/2033	भ्राम	14/08/2034
संक	12/03/2031	मंग	16/09/2031	धांय	14/07/2032	भ्राम	05/08/2033	भद्रि	21/10/2034
मंग	17/03/2031	पिंग	27/09/2031	भ्राम	24/08/2032	भद्रि	03/10/2033	उल्क	10/01/2035
पिंग	25/03/2031	धांय	14/10/2031	भद्रि	13/10/2032	उल्क	13/12/2033	सिद्ध	14/04/2035

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि	
14/04/2035		14/06/2035		14/10/2035		14/04/2036		13/12/2036	
14/06/2035		14/10/2035		14/04/2036		13/12/2036		14/10/2037	
मंग	16/04/2035	पिंग	21/06/2035	धांय	29/10/2035	भ्राम	11/05/2036	भद्रि	24/01/2037
पिंग	20/04/2035	धांय	01/07/2035	भ्राम	19/11/2035	भद्रि	14/06/2036	उल्क	16/03/2037
धांय	25/04/2035	भ्राम	15/07/2035	भद्रि	14/12/2035	उल्क	24/07/2036	सिद्ध	14/05/2037
भ्राम	01/05/2035	भद्रि	01/08/2035	उल्क	13/01/2036	सिद्ध	10/09/2036	संक	21/07/2037
भद्रि	10/05/2035	उल्क	21/08/2035	सिद्ध	18/02/2036	संक	03/11/2036	मंग	29/07/2037
उल्क	20/05/2035	सिद्ध	14/09/2035	संक	29/03/2036	मंग	09/11/2036	पिंग	15/08/2037
सिद्ध	01/06/2035	संक	11/10/2035	मंग	04/04/2036	पिंग	23/11/2036	धांय	10/09/2037
संक	14/06/2035	मंग	14/10/2035	पिंग	14/04/2036	धांय	13/12/2036	भ्राम	14/10/2037

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
14/10/2037		23/02/2039		13/09/2040		23/11/2040		14/04/2041	
23/02/2039		13/09/2040		23/11/2040		14/04/2041		13/11/2041	
सिद्ध	18/01/2038	संक	29/06/2039	मंग	15/09/2040	पिंग	01/12/2040	धांय	02/05/2041
संक	09/05/2038	मंग	15/07/2039	पिंग	19/09/2040	धांय	13/12/2040	भ्राम	25/05/2041
मंग	23/05/2038	पिंग	15/08/2039	धांय	25/09/2040	भ्राम	28/12/2040	भद्रि	24/06/2041
पिंग	19/06/2038	धांय	02/10/2039	भ्राम	03/10/2040	भद्रि	17/01/2041	उल्क	29/07/2041
धांय	31/07/2038	भ्राम	04/12/2039	भद्रि	12/10/2040	उल्क	10/02/2041	सिद्ध	09/09/2041
भ्राम	24/09/2038	भद्रि	21/02/2040	उल्क	24/10/2040	सिद्ध	09/03/2041	संक	26/10/2041
भद्रि	02/12/2038	उल्क	25/05/2040	सिद्ध	07/11/2040	संक	10/04/2041	मंग	01/11/2041
उल्क	23/02/2039	सिद्ध	13/09/2040	संक	23/11/2040	मंग	14/04/2041	पिंग	13/11/2041

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
13/11/2041		24/08/2042		14/08/2043		13/10/2044		25/07/2046	
24/08/2042		14/08/2043		13/10/2044		25/07/2046		14/10/2046	
भ्राम	15/12/2041	भद्रि	12/10/2042	उल्क	24/10/2043	संक	07/03/2045	मंग	27/07/2046
भद्रि	23/01/2042	उल्क	11/12/2042	सिद्ध	15/01/2044	मंग	25/03/2045	पिंग	31/07/2046
उल्क	11/03/2042	सिद्ध	18/02/2043	संक	19/04/2044	पिंग	30/04/2045	धांय	07/08/2046
सिद्ध	06/05/2042	संक	08/05/2043	मंग	01/05/2044	धांय	23/06/2045	भ्राम	16/08/2046
संक	08/07/2042	मंग	17/05/2043	पिंग	24/05/2044	भ्राम	03/09/2045	भद्रि	27/08/2046
मंग	16/07/2042	पिंग	06/06/2043	धांय	29/06/2044	भद्रि	02/12/2045	उल्क	10/09/2046
पिंग	31/07/2042	धांय	06/07/2043	भ्राम	15/08/2044	उल्क	20/03/2046	सिद्ध	26/09/2046
धांय	24/08/2042	भ्राम	14/08/2043	भद्रि	13/10/2044	सिद्ध	25/07/2046	संक	14/10/2046

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 5 वर्ष 4 मास 7 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : धनिष्ठा - 4 अपसव्य
देह : वृश्चिक जीव : मीन

मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
23/08/1983		**29/12/1988**		**29/12/2004**		**30/12/2011**		**30/12/2021**	
29/12/1988		**29/12/2004**		**30/12/2011**		**30/12/2021**		**29/12/2028**	
	00/00/0000	वृष	22/07/1991	मेष	26/06/2005	धनु	29/12/2012	वृश्चि	27/06/2022
	00/00/0000	मेष	03/09/1992	धनु	09/03/2006	वृश्चि	11/09/2013	तुला	10/08/2023
	23/08/1983	धनु	11/04/1994	वृश्चि	04/09/2006	तुला	18/04/2015	कन्या	27/03/2024
धनु	11/10/1983	वृश्चि	25/05/1995	तुला	18/10/2007	कन्या	12/03/2016	सिंह	02/08/2024
वृश्चि	28/05/1984	तुला	15/12/1997	कन्या	04/06/2008	सिंह	11/09/2016	कर्क	20/01/2026
तुला	05/11/1985	कन्या	25/05/1999	सिंह	10/10/2008	कर्क	18/10/2018	मिथु	08/09/2026
कन्या	28/08/1986	सिंह	12/03/2000	कर्क	31/03/2010	मिथु	12/09/2019	वृष	22/10/2027
सिंह	08/02/1987	कर्क	22/07/2003	मिथु	16/11/2010	वृष	18/04/2021	मेष	18/04/2028
कर्क	29/12/1988	मिथु	29/12/2004	वृष	30/12/2011	मेष	30/12/2021	धनु	29/12/2028

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
29/12/2028		**29/12/2044**		**30/12/2053**		**30/12/2058**		**30/12/2079**	
29/12/2044		**30/12/2053**		**30/12/2058**		**30/12/2079**		**00/00/0000**	
तुला	22/07/2031	कन्या	21/10/2045	सिंह	31/03/2054	कर्क	29/05/2063	मिथु	21/10/2080
कन्या	29/12/2032	सिंह	04/04/2046	कर्क	18/04/2055	मिथु	18/04/2065	वृष	31/03/2082
सिंह	18/10/2033	कर्क	23/02/2048	मिथु	30/09/2055	वृष	27/08/2068	मेष	16/11/2082
कर्क	26/02/2037	मिथु	15/12/2048	वृष	18/07/2056	मेष	15/02/2070	धनु	23/08/2083
मिथु	06/08/2038	वृष	25/05/2050	मेष	23/11/2056	धनु	23/03/2072		00/00/0000
वृष	26/02/2041	मेष	10/01/2051	धनु	24/05/2057	वृश्चि	11/09/2073		00/00/0000
मेष	11/04/2042	धनु	05/12/2051	वृश्चि	29/09/2057	तुला	20/01/2077		00/00/0000
धनु	16/11/2043	वृश्चि	22/07/2052	तुला	18/07/2058	कन्या	12/12/2078		00/00/0000
वृश्चि	29/12/2044	तुला	30/12/2053	कन्या	30/12/2058	सिंह	30/12/2079		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - धनु	
02/08/2024		20/01/2026		08/09/2026		22/10/2027		18/04/2028	
20/01/2026		08/09/2026		22/10/2027		18/04/2028		29/12/2028	
कर्क	22/11/2024	मिथु	10/02/2026	वृष	12/11/2026	मेष	03/11/2027	धनु	13/05/2028
मिथु	10/01/2025	वृष	19/03/2026	मेष	11/12/2026	धनु	21/11/2027	वृश्चि	31/05/2028
वृष	06/04/2025	मेष	04/04/2026	धनु	21/01/2027	वृश्चि	04/12/2027	तुला	11/07/2028
मेष	13/05/2025	धनु	27/04/2026	वृश्चि	18/02/2027	तुला	01/01/2028	कन्या	03/08/2028
धनु	06/07/2025	वृश्चि	13/05/2026	तुला	25/04/2027	कन्या	17/01/2028	सिंह	16/08/2028
वृश्चि	12/08/2025	तुला	19/06/2026	कन्या	01/06/2027	सिंह	26/01/2028	कर्क	09/10/2028
तुला	06/11/2025	कन्या	10/07/2026	सिंह	21/06/2027	कर्क	04/03/2028	मिथु	01/11/2028
कन्या	25/12/2025	सिंह	21/07/2026	कर्क	15/09/2027	मिथु	20/03/2028	वृष	11/12/2028
सिंह	20/01/2026	कर्क	08/09/2026	मिथु	22/10/2027	वृष	18/04/2028	मेष	29/12/2028

तुला - तुला		तुला - कन्या		तुला - सिंह		तुला - कर्क		तुला - मिथु	
29/12/2028		22/07/2031		29/12/2032		18/10/2033		26/02/2037	
22/07/2031		29/12/2032		18/10/2033		26/02/2037		06/08/2038	
तुला	28/05/2029	कन्या	08/09/2031	सिंह	13/01/2033	कर्क	02/07/2034	मिथु	14/04/2037
कन्या	20/08/2029	सिंह	04/10/2031	कर्क	15/03/2033	मिथु	21/10/2034	वृष	07/07/2037
सिंह	06/10/2029	कर्क	22/01/2032	मिथु	11/04/2033	वृष	05/05/2035	मेष	13/08/2037
कर्क	20/04/2030	मिथु	10/03/2032	वृष	27/05/2033	मेष	30/07/2035	धनु	05/10/2037
मिथु	13/07/2030	वृष	02/06/2032	मेष	17/06/2033	धनु	30/11/2035	वृश्चि	10/11/2037
वृष	10/12/2030	मेष	09/07/2032	धनु	16/07/2033	वृश्चि	24/02/2036	तुला	03/02/2038
मेष	13/02/2031	धनु	30/08/2032	वृश्चि	05/08/2033	तुला	07/09/2036	कन्या	22/03/2038
धनु	18/05/2031	वृश्चि	06/10/2032	तुला	21/09/2033	कन्या	26/12/2036	सिंह	17/04/2038
वृश्चि	22/07/2031	तुला	29/12/2032	कन्या	18/10/2033	सिंह	26/02/2037	कर्क	06/08/2038

तुला - वृष		तुला - मेष		तुला - धनु		तुला - वृश्चि		कन्या - कन्या	
06/08/2038		26/02/2041		11/04/2042		16/11/2043		29/12/2044	
26/02/2041		11/04/2042		16/11/2043		29/12/2044		21/10/2045	
वृष	02/01/2039	मेष	26/03/2041	धनु	08/06/2042	वृश्चि	15/12/2043	कन्या	25/01/2045
मेष	09/03/2039	धनु	06/05/2041	वृश्चि	19/07/2042	तुला	18/02/2044	सिंह	09/02/2045
धनु	10/06/2039	वृश्चि	04/06/2041	तुला	21/10/2042	कन्या	26/03/2044	कर्क	12/04/2045
वृश्चि	15/08/2039	तुला	08/08/2041	कन्या	12/12/2042	सिंह	16/04/2044	मिथु	09/05/2045
तुला	11/01/2040	कन्या	14/09/2041	सिंह	11/01/2043	कर्क	11/07/2044	वृष	25/06/2045
कन्या	05/04/2040	सिंह	05/10/2041	कर्क	13/05/2043	मिथु	16/08/2044	मेष	16/07/2045
सिंह	21/05/2040	कर्क	30/12/2041	मिथु	05/07/2043	वृष	21/10/2044	धनु	14/08/2045
कर्क	04/12/2040	मिथु	04/02/2042	वृष	06/10/2043	मेष	18/11/2044	वृश्चि	04/09/2045
मिथु	26/02/2041	वृष	11/04/2042	मेष	16/11/2043	धनु	29/12/2044	तुला	21/10/2045

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - सिंह		कन्या - कर्क		कन्या - मिथु		कन्या - वृष		कन्या - मेष	
21/10/2045		04/04/2046		23/02/2048		15/12/2048		25/05/2050	
04/04/2046		23/02/2048		15/12/2048		25/05/2050		10/01/2051	
सिंह	29/10/2045	कर्क	27/08/2046	मिथु	20/03/2048	वृष	09/03/2049	मेष	10/06/2050
कर्क	03/12/2045	मिथु	28/10/2046	वृष	07/05/2048	मेष	15/04/2049	धनु	03/07/2050
मिथु	18/12/2045	वृष	15/02/2047	मेष	28/05/2048	धनु	06/06/2049	वृश्चि	19/07/2050
वृष	13/01/2046	मेष	04/04/2047	धनु	26/06/2048	वृश्चि	13/07/2049	तुला	25/08/2050
मेष	25/01/2046	धनु	12/06/2047	वृश्चि	17/07/2048	तुला	05/10/2049	कन्या	14/09/2050
धनु	10/02/2046	वृश्चि	31/07/2047	तुला	02/09/2048	कन्या	22/11/2049	सिंह	26/09/2050
वृश्चि	21/02/2046	तुला	18/11/2047	कन्या	29/09/2048	सिंह	18/12/2049	कर्क	13/11/2050
तुला	20/03/2046	कन्या	19/01/2048	सिंह	14/10/2048	कर्क	07/04/2050	मिथु	04/12/2050
कन्या	04/04/2046	सिंह	23/02/2048	कर्क	15/12/2048	मिथु	25/05/2050	वृष	10/01/2051

कन्या - धनु		कन्या - वृश्चि		कन्या - तुला		सिंह - सिंह		सिंह - कर्क	
10/01/2051		05/12/2051		22/07/2052		30/12/2053		31/03/2054	
05/12/2051		22/07/2052		30/12/2053		31/03/2054		18/04/2055	
धनु	12/02/2051	वृश्चि	21/12/2051	तुला	14/10/2052	सिंह	03/01/2054	कर्क	19/06/2054
वृश्चि	07/03/2051	तुला	26/01/2052	कन्या	30/11/2052	कर्क	22/01/2054	मिथु	24/07/2054
तुला	28/04/2051	कन्या	16/02/2052	सिंह	26/12/2052	मिथु	31/01/2054	वृष	23/09/2054
कन्या	28/05/2051	सिंह	28/02/2052	कर्क	16/04/2053	वृष	14/02/2054	मेष	20/10/2054
सिंह	13/06/2051	कर्क	16/04/2052	मिथु	02/06/2053	मेष	21/02/2054	धनु	28/11/2054
कर्क	21/08/2051	मिथु	07/05/2052	वृष	25/08/2053	धनु	02/03/2054	वृश्चि	24/12/2054
मिथु	20/09/2051	वृष	13/06/2052	मेष	01/10/2053	वृश्चि	08/03/2054	तुला	24/02/2055
वृष	12/11/2051	मेष	29/06/2052	धनु	23/11/2053	तुला	23/03/2054	कन्या	30/03/2055
मेष	05/12/2051	धनु	22/07/2052	वृश्चि	30/12/2053	कन्या	31/03/2054	सिंह	18/04/2055

सिंह - मिथु		सिंह - वृष		सिंह - मेष		सिंह - धनु		सिंह - वृश्चि	
18/04/2055		30/09/2055		18/07/2056		23/11/2056		24/05/2057	
30/09/2055		18/07/2056		23/11/2056		24/05/2057		29/09/2057	
मिथु	03/05/2055	वृष	16/11/2055	मेष	27/07/2056	धनु	11/12/2056	वृश्चि	02/06/2057
वृष	29/05/2055	मेष	06/12/2055	धनु	09/08/2056	वृश्चि	24/12/2056	तुला	23/06/2057
मेष	10/06/2055	धनु	04/01/2056	वृश्चि	18/08/2056	तुला	22/01/2057	कन्या	04/07/2057
धनु	26/06/2055	वृश्चि	25/01/2056	तुला	07/09/2056	कन्या	08/02/2057	सिंह	11/07/2057
वृश्चि	08/07/2055	तुला	11/03/2056	कन्या	19/09/2056	सिंह	17/02/2057	कर्क	07/08/2057
तुला	03/08/2055	कन्या	07/04/2056	सिंह	25/09/2056	कर्क	27/03/2057	मिथु	18/08/2057
कन्या	18/08/2055	सिंह	21/04/2056	कर्क	22/10/2056	मिथु	12/04/2057	वृष	08/09/2057
सिंह	26/08/2055	कर्क	22/06/2056	मिथु	02/11/2056	वृष	12/05/2057	मेष	16/09/2057
कर्क	30/09/2055	मिथु	18/07/2056	वृष	23/11/2056	मेष	24/05/2057	धनु	29/09/2057

चर दशा

भोग्य दशा काल : कुम्भ 9 वर्ष 0 मास 0 दिन

कुम्भ 9 वर्ष	
23/08/1983	
23/08/1992	
मीन	23/05/1984
मेष	21/02/1985
वृष	22/11/1985
मिथु	23/08/1986
कर्क	24/05/1987
सिंह	22/02/1988
कन्या	22/11/1988
तुला	23/08/1989
वृश्चि	24/05/1990
धनु	22/02/1991
मक	23/11/1991
कुंभ	23/08/1992

मीन 4 वर्ष	
23/08/1992	
23/08/1996	
मेष	22/12/1992
वृष	23/04/1993
मिथु	23/08/1993
कर्क	23/12/1993
सिंह	23/04/1994
कन्या	23/08/1994
तुला	23/12/1994
वृश्चि	24/04/1995
धनु	23/08/1995
मक	23/12/1995
कुंभ	23/04/1996
मीन	23/08/1996

मेष 3 वर्ष	
23/08/1996	
23/08/1999	
वृष	22/11/1996
मिथु	21/02/1997
कर्क	23/05/1997
सिंह	23/08/1997
कन्या	22/11/1997
तुला	21/02/1998
वृश्चि	24/05/1998
धनु	23/08/1998
मक	22/11/1998
कुंभ	22/02/1999
मीन	24/05/1999
मेष	23/08/1999

वृष 3 वर्ष	
23/08/1999	
23/08/2002	
मेष	23/11/1999
मीन	22/02/2000
कुंभ	23/05/2000
मक	23/08/2000
धनु	22/11/2000
वृश्चि	21/02/2001
तुला	23/05/2001
कन्या	23/08/2001
सिंह	22/11/2001
कर्क	21/02/2002
मिथु	24/05/2002
वृष	23/08/2002

मिथुन 3 वर्ष	
23/08/2002	
23/08/2005	
वृष	22/11/2002
मेष	22/02/2003
मीन	24/05/2003
कुंभ	23/08/2003
मक	23/11/2003
धनु	22/02/2004
वृश्चि	23/05/2004
तुला	23/08/2004
कन्या	22/11/2004
सिंह	21/02/2005
कर्क	23/05/2005
मिथु	23/08/2005

कर्क 5 वर्ष	
23/08/2005	
23/08/2010	
मिथु	22/01/2006
वृष	23/06/2006
मेष	22/11/2006
मीन	24/04/2007
कुंभ	23/09/2007
मक	22/02/2008
धनु	23/07/2008
वृश्चि	22/12/2008
तुला	23/05/2009
कन्या	23/10/2009
सिंह	24/03/2010
कर्क	23/08/2010

सिंह 12 वर्ष	
23/08/2010	
23/08/2022	
कन्या	23/08/2011
तुला	23/08/2012
वृश्चि	23/08/2013
धनु	23/08/2014
मक	23/08/2015
कुंभ	23/08/2016
मीन	23/08/2017
मेष	23/08/2018
वृष	23/08/2019
मिथु	23/08/2020
कर्क	23/08/2021
सिंह	23/08/2022

कन्या 12 वर्ष	
23/08/2022	
23/08/2034	
तुला	23/08/2023
वृश्चि	23/08/2024
धनु	23/08/2025
मक	23/08/2026
कुंभ	23/08/2027
मीन	23/08/2028
मेष	23/08/2029
वृष	23/08/2030
मिथु	23/08/2031
कर्क	23/08/2032
सिंह	23/08/2033
कन्या	23/08/2034

तुला 10 वर्ष	
23/08/2034	
23/08/2044	
वृश्चि	23/06/2035
धनु	23/04/2036
मक	21/02/2037
कुंभ	23/12/2037
मीन	23/10/2038
मेष	23/08/2039
वृष	23/06/2040
मिथु	23/04/2041
कर्क	21/02/2042
सिंह	23/12/2042
कन्या	23/10/2043
तुला	23/08/2044

वृश्चिक 8 वर्ष	
23/08/2044	
23/08/2052	
तुला	23/04/2045
कन्या	23/12/2045
सिंह	23/08/2046
कर्क	24/04/2047
मिथु	23/12/2047
वृष	23/08/2048
मेष	23/04/2049
मीन	23/12/2049
कुंभ	23/08/2050
मक	24/04/2051
धनु	23/12/2051
वृश्चि	23/08/2052

धनु 11 वर्ष	
23/08/2052	
23/08/2063	
वृश्चि	23/07/2053
तुला	23/06/2054
कन्या	24/05/2055
सिंह	23/04/2056
कर्क	24/03/2057
मिथु	21/02/2058
वृष	22/01/2059
मेष	23/12/2059
मीन	22/11/2060
कुंभ	23/10/2061
मक	22/09/2062
धनु	23/08/2063

मकर 3 वर्ष	
23/08/2063	
23/08/2066	
धनु	23/11/2063
वृश्चि	22/02/2064
तुला	23/05/2064
कन्या	23/08/2064
सिंह	22/11/2064
कर्क	21/02/2065
मिथु	23/05/2065
वृष	23/08/2065
मेष	22/11/2065
मीन	21/02/2066
कुंभ	24/05/2066
मक	23/08/2066

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - मक		कन्या - कुंभ		कन्या - मीन		कन्या - मेष		कन्या - वृष	
23/08/2025		23/08/2026		23/08/2027		23/08/2028		23/08/2029	
23/08/2026		23/08/2027		23/08/2028		23/08/2029		23/08/2030	
धनु	22/09/2025	मीन	22/09/2026	मेष	23/09/2027	वृष	22/09/2028	मेष	22/09/2029
वृश्चि	23/10/2025	मेष	23/10/2026	वृष	23/10/2027	मिथु	22/10/2028	मीन	23/10/2029
तुला	22/11/2025	वृष	22/11/2026	मिथु	23/11/2027	कर्क	22/11/2028	कुंभ	22/11/2029
कन्या	23/12/2025	मिथु	23/12/2026	कर्क	23/12/2027	सिंह	22/12/2028	मक	23/12/2029
सिंह	22/01/2026	कर्क	22/01/2027	सिंह	22/01/2028	कन्या	22/01/2029	धनु	22/01/2030
कर्क	21/02/2026	सिंह	22/02/2027	कन्या	22/02/2028	तुला	21/02/2029	वृश्चि	21/02/2030
मिथु	24/03/2026	कन्या	24/03/2027	तुला	23/03/2028	वृश्चि	24/03/2029	तुला	24/03/2030
वृष	23/04/2026	तुला	24/04/2027	वृश्चि	23/04/2028	धनु	23/04/2029	कन्या	23/04/2030
मेष	24/05/2026	वृश्चि	24/05/2027	धनु	23/05/2028	मक	23/05/2029	सिंह	24/05/2030
मीन	23/06/2026	धनु	23/06/2027	मक	23/06/2028	कुंभ	23/06/2029	कर्क	23/06/2030
कुंभ	24/07/2026	मक	24/07/2027	कुंभ	23/07/2028	मीन	23/07/2029	मिथु	24/07/2030
मक	23/08/2026	कुंभ	23/08/2027	मीन	23/08/2028	मेष	23/08/2029	वृष	23/08/2030

कन्या - मिथु		कन्या - कर्क		कन्या - सिंह		कन्या - कन्या		तुला - वृश्चि	
23/08/2030		23/08/2031		23/08/2032		23/08/2033		23/08/2034	
23/08/2031		23/08/2032		23/08/2033		23/08/2034		23/06/2035	
वृष	22/09/2030	मिथु	23/09/2031	कन्या	22/09/2032	तुला	22/09/2033	तुला	17/09/2034
मेष	23/10/2030	वृष	23/10/2031	तुला	22/10/2032	वृश्चि	23/10/2033	कन्या	13/10/2034
मीन	22/11/2030	मेष	23/11/2031	वृश्चि	22/11/2032	धनु	22/11/2033	सिंह	07/11/2034
कुंभ	23/12/2030	मीन	23/12/2031	धनु	22/12/2032	मक	23/12/2033	कर्क	03/12/2034
मक	22/01/2031	कुंभ	22/01/2032	मक	22/01/2033	कुंभ	22/01/2034	मिथु	28/12/2034
धनु	22/02/2031	मक	22/02/2032	कुंभ	21/02/2033	मीन	21/02/2034	वृष	22/01/2035
वृश्चि	24/03/2031	धनु	23/03/2032	मीन	24/03/2033	मेष	24/03/2034	मेष	17/02/2035
तुला	24/04/2031	वृश्चि	23/04/2032	मेष	23/04/2033	वृष	23/04/2034	मीन	14/03/2035
कन्या	24/05/2031	तुला	23/05/2032	वृष	23/05/2033	मिथु	24/05/2034	कुंभ	08/04/2035
सिंह	23/06/2031	कन्या	23/06/2032	मिथु	23/06/2033	कर्क	23/06/2034	मक	04/05/2035
कर्क	24/07/2031	सिंह	23/07/2032	कर्क	23/07/2033	सिंह	24/07/2034	धनु	29/05/2035
मिथु	23/08/2031	कर्क	23/08/2032	सिंह	23/08/2033	कन्या	23/08/2034	वृश्चि	23/06/2035

तुला - धनु		तुला - मक		तुला - कुंभ		तुला - मीन		तुला - मेष	
23/06/2035		23/04/2036		21/02/2037		23/12/2037		23/10/2038	
23/04/2036		21/02/2037		23/12/2037		23/10/2038		23/08/2039	
वृश्चि	19/07/2035	धनु	18/05/2036	मीन	19/03/2037	मेष	17/01/2038	वृष	17/11/2038
तुला	13/08/2035	वृश्चि	13/06/2036	मेष	13/04/2037	वृष	11/02/2038	मिथु	13/12/2038
कन्या	08/09/2035	तुला	08/07/2036	वृष	08/05/2037	मिथु	09/03/2038	कर्क	07/01/2039
सिंह	03/10/2035	कन्या	02/08/2036	मिथु	03/06/2037	कर्क	03/04/2038	सिंह	01/02/2039
कर्क	28/10/2035	सिंह	28/08/2036	कर्क	28/06/2037	सिंह	28/04/2038	कन्या	27/02/2039
मिथु	23/11/2035	कर्क	22/09/2036	सिंह	23/07/2037	कन्या	24/05/2038	तुला	24/03/2039
वृष	18/12/2035	मिथु	17/10/2036	कन्या	18/08/2037	तुला	18/06/2038	वृश्चि	18/04/2039
मेष	12/01/2036	वृष	12/11/2036	तुला	12/09/2037	वृश्चि	13/07/2038	धनु	14/05/2039
मीन	07/02/2036	मेष	07/12/2036	वृश्चि	07/10/2037	धनु	08/08/2038	मक	08/06/2039
कुंभ	03/03/2036	मीन	01/01/2037	धनु	02/11/2037	मक	02/09/2038	कुंभ	04/07/2039
मक	28/03/2036	कुंभ	27/01/2037	मक	27/11/2037	कुंभ	28/09/2038	मीन	29/07/2039
धनु	23/04/2036	मक	21/02/2037	कुंभ	23/12/2037	मीन	23/10/2038	मेष	23/08/2039

चर दशा - प्रत्यन्तर

तुला - वृष		तुला - मिथु		तुला - कर्क		तुला - सिंह		तुला - कन्या	
23/08/2039		23/06/2040		23/04/2041		21/02/2042		23/12/2042	
23/06/2040		23/04/2041		21/02/2042		23/12/2042		23/10/2043	
मेष	18/09/2039	वृष	18/07/2040	मिथु	18/05/2041	कन्या	19/03/2042	तुला	17/01/2043
मीन	13/10/2039	मेष	12/08/2040	वृष	13/06/2041	तुला	13/04/2042	वृश्चि	12/02/2043
कुंभ	07/11/2039	मीन	07/09/2040	मेष	08/07/2041	वृश्चि	09/05/2042	धनु	09/03/2043
मक	03/12/2039	कुंभ	02/10/2040	मीन	03/08/2041	धनु	03/06/2042	मक	03/04/2043
धनु	28/12/2039	मक	28/10/2040	कुंभ	28/08/2041	मक	28/06/2042	कुंभ	29/04/2043
वृश्चि	22/01/2040	धनु	22/11/2040	मक	22/09/2041	कुंभ	24/07/2042	मीन	24/05/2043
तुला	17/02/2040	वृश्चि	17/12/2040	धनु	18/10/2041	मीन	18/08/2042	मेष	18/06/2043
कन्या	13/03/2040	तुला	12/01/2041	वृश्चि	12/11/2041	मेष	12/09/2042	वृष	14/07/2043
सिंह	08/04/2040	कन्या	06/02/2041	तुला	07/12/2041	वृष	08/10/2042	मिथु	08/08/2043
कर्क	03/05/2040	सिंह	03/03/2041	कन्या	02/01/2042	मिथु	02/11/2042	कर्क	02/09/2043
मिथु	28/05/2040	कर्क	29/03/2041	सिंह	27/01/2042	कर्क	27/11/2042	सिंह	28/09/2043
वृष	23/06/2040	मिथु	23/04/2041	कर्क	21/02/2042	सिंह	23/12/2042	कन्या	23/10/2043

तुला - तुला		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क	
23/10/2043		23/08/2044		23/04/2045		23/12/2045		23/08/2046	
23/08/2044		23/04/2045		23/12/2045		23/08/2046		24/04/2047	
वृश्चि	18/11/2043	वृश्चि	12/09/2044	तुला	13/05/2045	कन्या	12/01/2046	मिथु	12/09/2046
धनु	13/12/2043	धनु	02/10/2044	वृश्चि	03/06/2045	तुला	01/02/2046	वृष	03/10/2046
मक	07/01/2044	मक	22/10/2044	धनु	23/06/2045	वृश्चि	21/02/2046	मेष	23/10/2046
कुंभ	02/02/2044	कुंभ	12/11/2044	मक	13/07/2045	धनु	14/03/2046	मीन	12/11/2046
मीन	27/02/2044	मीन	02/12/2044	कुंभ	03/08/2045	मक	03/04/2046	कुंभ	03/12/2046
मेष	23/03/2044	मेष	22/12/2044	मीन	23/08/2045	कुंभ	23/04/2046	मक	23/12/2046
वृष	18/04/2044	वृष	12/01/2045	मेष	12/09/2045	मीन	14/05/2046	धनु	12/01/2047
मिथु	13/05/2044	मिथु	01/02/2045	वृष	02/10/2045	मेष	03/06/2046	वृश्चि	01/02/2047
कर्क	07/06/2044	कर्क	21/02/2045	मिथु	23/10/2045	वृष	23/06/2046	तुला	22/02/2047
सिंह	03/07/2044	सिंह	13/03/2045	कर्क	12/11/2045	मिथु	13/07/2046	कन्या	14/03/2047
कन्या	28/07/2044	कन्या	03/04/2045	सिंह	02/12/2045	कर्क	03/08/2046	सिंह	03/04/2047
तुला	23/08/2044	तुला	23/04/2045	कन्या	23/12/2045	सिंह	23/08/2046	कर्क	24/04/2047

वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ	
24/04/2047		23/12/2047		23/08/2048		23/04/2049		23/12/2049	
23/12/2047		23/08/2048		23/04/2049		23/12/2049		23/08/2050	
वृष	14/05/2047	मेष	12/01/2048	वृष	12/09/2048	मेष	13/05/2049	मीन	12/01/2050
मेष	03/06/2047	मीन	02/02/2048	मिथु	02/10/2048	वृष	03/06/2049	मेष	01/02/2050
मीन	23/06/2047	कुंभ	22/02/2048	कर्क	22/10/2048	मिथु	23/06/2049	वृष	21/02/2050
कुंभ	14/07/2047	मक	13/03/2048	सिंह	12/11/2048	कर्क	13/07/2049	मिथु	14/03/2050
मक	03/08/2047	धनु	03/04/2048	कन्या	02/12/2048	सिंह	03/08/2049	कर्क	03/04/2050
धनु	23/08/2047	वृश्चि	23/04/2048	तुला	22/12/2048	कन्या	23/08/2049	सिंह	23/04/2050
वृश्चि	13/09/2047	तुला	13/05/2048	वृश्चि	12/01/2049	तुला	12/09/2049	कन्या	14/05/2050
तुला	03/10/2047	कन्या	02/06/2048	धनु	01/02/2049	वृश्चि	02/10/2049	तुला	03/06/2050
कन्या	23/10/2047	सिंह	23/06/2048	मक	21/02/2049	धनु	23/10/2049	वृश्चि	23/06/2050
सिंह	12/11/2047	कर्क	13/07/2048	कुंभ	13/03/2049	मक	12/11/2049	धनु	13/07/2050
कर्क	03/12/2047	मिथु	02/08/2048	मीन	03/04/2049	कुंभ	02/12/2049	मक	03/08/2050
मिथु	23/12/2047	वृष	23/08/2048	मेष	23/04/2049	मीन	23/12/2049	कुंभ	23/08/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 5, 9, 7
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	91%	भाग्योदय, कम खर्च, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	78%	दम्पति, सुख, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	73%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	64%	सुख, दम्पति
माणिक्य	सूर्य	53%	दम्पति
लहसुनिया	केतु	47%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	44%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, व्यावसायिक हानि
पन्ना	बुध	38%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
मोती	चंद्र	31%	रोग, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

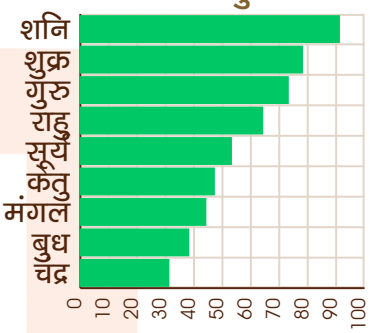

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	21/02/1984	60%	44%	59%	12%	80%	78%	91%	52%	55%
राहु	20/02/2002	32%	6%	19%	38%	73%	84%	97%	77%	22%
गुरु	20/02/2018	60%	44%	53%	12%	86%	66%	91%	64%	47%
शनि	20/02/2037	32%	6%	19%	50%	73%	84%	100%	70%	22%
बुध	20/02/2054	60%	6%	44%	56%	73%	84%	91%	64%	47%
केतु	20/02/2061	32%	6%	53%	38%	73%	84%	78%	52%	61%
शुक्र	20/02/2081	32%	6%	44%	50%	73%	91%	97%	70%	55%
सूर्य	20/02/2087	66%	44%	53%	38%	80%	66%	78%	52%	22%
चंद्र	20/02/2097	60%	53%	44%	50%	73%	78%	91%	52%	22%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज, गोमेद एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया, मूंगा, पन्ना व मोती रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से

आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंड़ली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु दवितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते है। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न धारण करने से आपके साहस भाव में वृद्धि होगी। सरकारी पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। प्रशासनिक व्यक्तियों के द्वार आपका हित साधन हो सकता है। यह रत्न आपको माता से सुख देगा। भ्रम की स्थिति दूर होगी। आपके पास भौतिक सुख-सुविधाओं का भंड़ार हो सकता है। विदेश प्रवास अनुकूल होगा। नौकरी के क्षेत्र में राहु ग्रह की शुभता प्राप्त होगी। गोमेद रत्न आजीविका क्षेत्र में शुभता बनाये रखेगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आपके स्वाभिमान भाव में वृद्धि होगी। आपकी कठोरता में कमी होगी। माणिक्य रत्न आपको स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है। सूर्य रत्न धारण करने से आपके वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित होगा। लाभ और उन्नति प्राप्त करने के लिए आपको अपनी अनुशासन योग्यता में कमी करनी होगी। यह रत्न स्वतंत्र व्यापार में अधिकार क्षमता बढ़ायेगा। माणिक्य रत्न की शुभता आपमें निस्वार्थ भावना का विकास करेगी।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य

जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते है। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण कर आप की बौद्धिक योग्यता में कमी आ सकती है। रत्न प्रभाव से आपकी दार्शनिक प्रवृति का ह्रास हो सकता है। दूसरों के लिए आपमें ईर्ष्या का भाव आ सकता है। अयोग्य पात्र को भी आप आश्रय दे सकते है। जीवन में आपको उत्तम संपदा की कमी हो सकती है। आपके कारण स्वजनों को भी कष्ट हो सकता है। लहसुनिया रत्न आपके दुर्भाग्य में वृद्धि कर सकता है। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में दुर्घटनाएं दे सकता है। इस रत्न के कारण आपके पिता से अच्छे संबंधों में कमी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके विरोधियों को बढ़ा सकता है। यात्राओं की अधिकता से कष्ट दे सकता है। आप मानसिक रूप से असंतुष्ट रह सकते हैं।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको प्रसिद्धि की

प्रतिकूलता, विद्वानों से शत्रुता, तकनीकी विषयों में अरुचि हो सकती है। अत्यधिक साहस, जोखिम लेने का स्वभाव आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। विरोधियों से कष्ट आपके लिए बने रहेंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बाधित कर सकता है। प्रतियोगिताओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न आपको अधीनस्थों के द्वारा पीड़ित कर सकता है। माता के सुख में कमी के योग बन सकते है। मूंगा रत्न आपको रक्त प्रवाह से संबंधित रोग दे सकता है। शक्ति का दुरुपयोग आपके द्वारा हो सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपको भाई बहन, बंधु-बांधव, पिता, समाज और पद प्रतिष्ठा से संबंधित कष्ट दे सकता है। रत्न धारण करने के बाद अत्यधिक जोश एवं उत्साह वृद्धि से आपके कार्यक्षेत्र में परेशानियां उत्पन्न हो सकती है। मूंगा रत्न से आप अत्यधिक उत्साही होकर जोखिम पूर्ण कार्यक्षेत्रों से लाभ प्राप्ति के लिए अग्रसर हो सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपकी नेतृत्व योग्यता का ह्रास हो सकता है। सेवकों और सहोदरों के कारण आजीविका क्षेत्र से प्रतिकूल फल प्राप्त हो सकते है। मूंगा रत्न धारण से आपको तकनीकी विषयों में सुरुचि की कमी हो सकती है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते है। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती हैं। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिषक और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बुद्धि, ज्ञान, संतान और जीवनशैली संबंधी परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको शिक्षा क्षेत्र में योग्यता की कमी दे सकता है। जीवनशैली को सुधारने में बुद्धि का सहयोग आपको नहीं मिल पाएगा। रत्न प्रभाव से चिंतकों और विचारकों का सानिंध्य आपको नहीं मिल पाएगा। पन्ना रत्न आपको शारीरिक, मानसिक और आर्थिक पक्ष से कमजोर कर सकता है। अष्टमेश का रत्न होने के कारण रत्न धारण पर जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता, उत्तम नियोजन कुशलता का ह्रास करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके व्यवहार की सौम्यता में कमी होगी। आपको सामाजिक स्तर पर घूलने मिलने में समय लग सकता है। मोती रत्न के प्रभाव से आप अत्यधिक संवेदनशील और अव्यवहारिक हो सकते है। यथार्थ

परिस्थितियों का सामना करने में आपको अ0सहजता रहेगी। इस रत्न से आपका स्वभाव सदैव चिंतित रहने वाला हो सकता है। सृजनात्मक और रचनात्मक कार्यों में आपको अरुचि की स्थिति बन सकती है। आपकी लोकप्रियता के लिए भी यह रत्न सही नहीं होगा। मानसिक अशांति के चलते जीवन के अन्य विषयों में एकाग्रता की कमी का अनुभव आपको हो सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते है। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(20/02/2018 - 20/02/2037)

शनि की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(20/02/2037 - 20/02/2054)

बुध की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(20/02/2054 - 20/02/2061)

केतु की दशा में आपका हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(20/02/2061 - 20/02/2081)

शुक्र की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(20/02/2081 - 20/02/2087)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(20/02/2087 - 20/02/2097)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, मोती, गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल

प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

मंगल - 21/02/1984

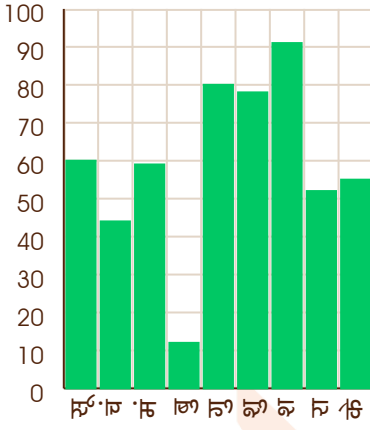

राहु - 20/02/2002

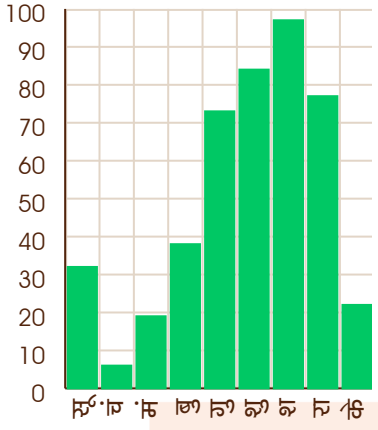

गुरु - 20/02/2018

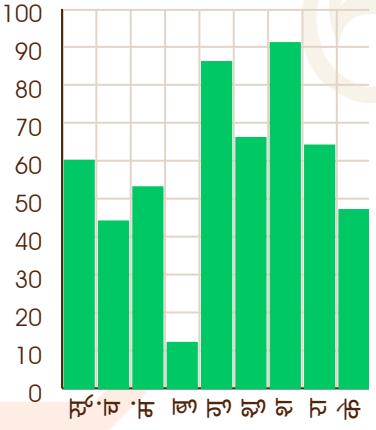

शनि - 20/02/2037

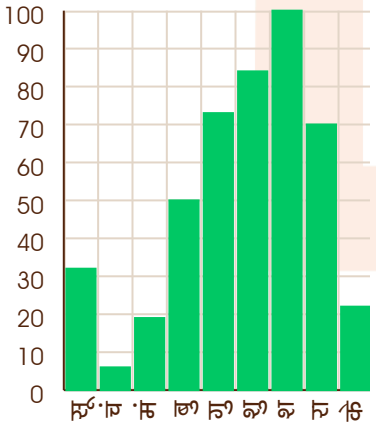

बुध - 20/02/2054

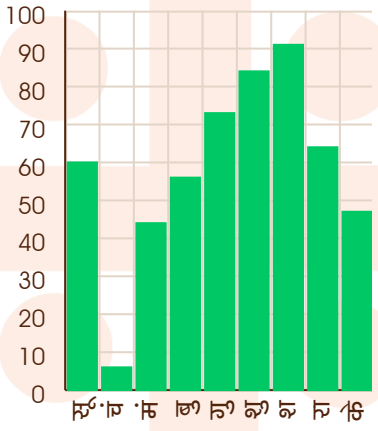

केतु - 20/02/2061

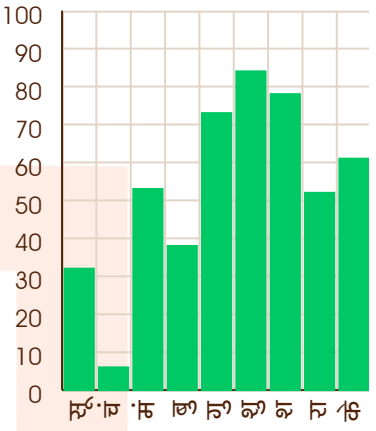

शुक्र - 20/02/2081

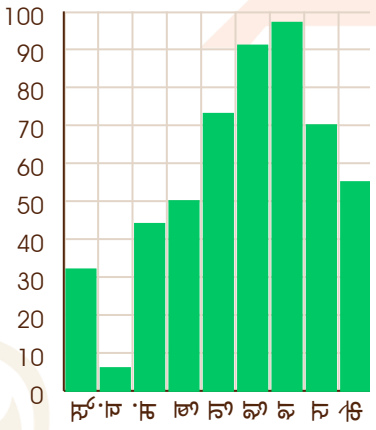

सूर्य - 20/02/2087

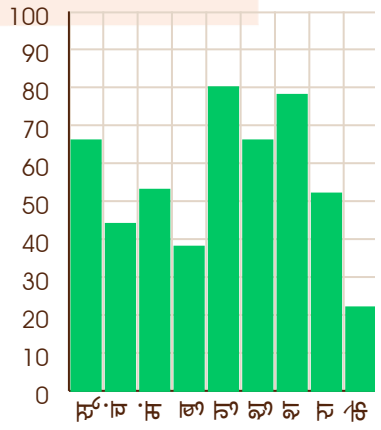

चन्द्र - 20/02/2097

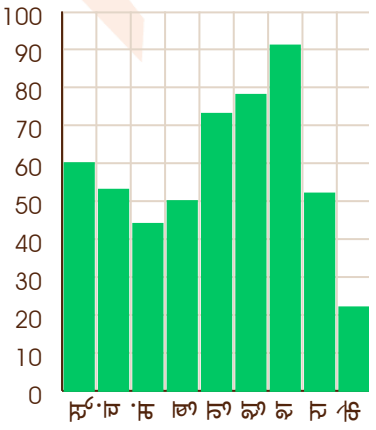

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये एमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 4, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराक्रमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराक्रमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्ण रूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप घर-द्वार जमीन-जायदाद, चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर थोड़ा बहुत कठिनाईयाँ आती हैं और उससे जातक को बेवजह चिन्ता कभी-कभी घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है।

माता से कोई न कोई किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों से भी कोई न कोई परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं। जिसमें थोड़ा बहुत नुकसान उठाने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक समय-समय मानसिक रूप से परेशान रहता है। कार्य के क्षेत्र में अनेक विघ्न आते हैं। पर वे सब विघ्न कालान्तर में स्वतः नष्ट हो जाते हैं। बहुत सारे कामों को एक साथ करने के कारण कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं हो पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का आर्थिक संतुलन थोड़ा बहुत बिगड़ जाता है, जिस कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। लेकिन इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जातक के व्यवसाय, नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में बहुत सफलताएँ प्राप्त होती हैं एवं सामाजिक पद प्रतिष्ठा भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 23 है। दो एवं तीन के योग से आपका मूलांक 5 होता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह को माना गया है। अंक दो का स्वामी चन्द्र तथा अंक तीन का गुरु है। अतः आपके जीवन पर मूलांक स्वामी बुध अंक स्वामी चन्द्र तथा गुरु तीनों का सम्मिलित प्रभाव दर्शनीय होगा।

मूलांक पाँच के प्रभाव से आपकी रुचि नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक रहेगी। बुध वाणिज्य का दाता है। यदि नौकरी भी करेंगे तो कॉमर्शियल विभाग, वित्त प्रधान कार्यों में रुचि रखेंगे। आप प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से समाप्त करेंगे। रोजगार का चुनाव आप ऐसा ही करेंगे जहाँ कार्य शीघ्रता से एवं कम मेहनत करने पर अधिक लाभ प्राप्त होता हो। मानसिक स्थिति चंचल होने से क्रोध आपको जल्दी आयेगा, लेकिन उसी गति से शान्त हो जायेगा। बुद्धि का अधिक प्रयोग करने के कारण वृद्धावस्था में आपको स्नायुवेग के रोगों की संभावना रहेगी। चन्द्र प्रभाव से शीतरोग एवं गुरु प्रभाव से पीलिया जैसे उदर रोगों का सामना करना पड़ेगा।

चद्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी। बौद्धिक स्तर उच्च होगा। समाज में घुल-मिल जाने की कला में आप निपुण रहेंगे। सामाजिक ख्याति आपकी उच्चकोटि की रहेगी एवं मुखिया इत्यादि का सामाजिक पद विभिन्न क्षेत्रों में मिलेगा। आपको अपनी मानसिक चंचलता पर नियंत्रण रखना भविष्य के लिये लाभ दायक रहेगा।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 7 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा मूलांक 5 और भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक या भाग्यांक का मिलाजुला फल प्राप्त होगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी व्यावसायिक कल्पना शक्ति अच्छी होगी एवं आप अपने रोजगार में एक सफल व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। आप अधिक मात्रा में धन संग्रह करने मे असमर्थ रहेंगे। आपका अधिक समय धनार्जन की अपेक्षा जनता की भलाई करने में व्यतीत होगा। जीवन में आप एक संषर्घशील, कर्मठ व्यक्ति के रूप में अपनी छवि स्थापित करेंगे। आपका सामाजिक स्तर काफी अच्छा रहेगा एवं दूर-दूर के लोगों से आपके संबंध बनेंगे। आपके

जीवन में यात्रा योग काफी अधिक रहेगा तथा यात्राओं से आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। कई यात्राएं आपके जीवन में अविस्मरणीय छाप छोड़ जाएंगी। आपका कार्यक्षेत्र परिवर्तनशील रहेगा एवं पुरानी प्रथाओं को नये रूप में पेश करने में आप सफल रहेंगे। आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 43 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 7 की 2 एवं 6 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 5, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, मई, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंकों से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 5, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 5, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें आपके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी। इन तारीखों में आपके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहेगा।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना आपके लिए प्रतिकूल है। अतः आप इन तिथियों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार-व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपके सफल मित्र साबित होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

कोई भी महिला जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से आप स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक के अनुसार आपके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये आपके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहेंगे। हो सके तो आप इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि आप अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

शुभ वाहन नं

अगर आप स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। आपका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः आपके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। आपके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तभी आपके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा आप चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत कर के, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे आप सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगी तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगी। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र – ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधवार के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्रा, पफल, षट्रास भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में कुंभ लग्न में हुआ था। आपके जन्म लग्न के समय मेदिनीय क्षितिज पर वृषभ राशि का नवमांश एवं तुला राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। आपके जन्मकालिक ज्यातिषीय आकृति से यह निर्दिष्ट हो रहा है कि यदि आप अपने जीवन में विश्वसनीयता बनाए रखें तब आप उत्तम मानवीय स्वाभावानुकूल जीवन, आनंददायक, धन, प्रसन्नता से युक्त समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

आप व्यक्तिगत रूप से सर्वोतम प्रकार के नेता जो मानवीय विश्वसनीयता से युक्त अन्य लोगों के मददगार, आदर्श एवं उदार चरित्र के प्राणी के रूप में उभर कर समाज का प्रतिनिधित्व करेंगे।

आप उदारता हेतु समर्थ होकर धन संपत्ति का संचय कर सकेंगे। आप मात्र मेधावी ही नहीं हैं। आप सर्वथा धन बनाने के करतब और चालाकी के जानकार हैं। आपमें ऐसी सक्षमता है कि स्पष्ट रूप से धन संपन्न होने के सभी तथ्यों का अच्छी प्रकार मूल्यांकन कर लेते हैं। आप अपने अंतर्ज्ञान पूर्ण शक्ति को लाभ जनित उपयोग कर आप लाभदायक परिणाम प्राप्त कर सकते हो।

आप उत्तम प्रकार के गुणों से युक्त है। आप चाहें तो अच्छे प्रकार के कार्य व्यवसाय तथा पर्यटन कार्य, औषधि, पब्लिक कंपनी के कार्य, औषधि की दुकान या निर्माण कार्य वकालत पेशा, ज्योतिषीय कार्य, धर्म दर्शन के कार्य अथवा भाषा के कार्यादि कर सकते हैं।

आप सामान्यतया अच्छे मिलनसार व्यक्ति हैं। कभी-कभी आप सहजता पूर्वक आवरण में छिप जाते हैं तथा एकांत प्रियता को प्रस्तुत करते हैं। आप किसी अवसर पर सुरक्षित हो जाते हैं। तब आपके मित्र एवं व्यावसायिक सहयोगी को आपके साथ किसी प्रकार के व्यवहार में दिक्कतें उत्पन्न हो जाती है। आपके लिए आवश्यक है कि आप इस विशेषता को त्याग दें। परंतु आप सदैव वाचालिक प्रवृति से दूसरों को प्रभावित करते हैं तथा अपनी व्यंगात्मक विनोद प्रियता से लोगों के मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। आप अपने मित्रों की बड़ी मंडली के साथ अच्छा संबंध रखते हैं। मात्र कुछ समय आपके कुछ मित्रगण गोल माल करते हैं तो उन्हें विश्वास नहीं करने योग्य समझ कर उसे बाहर निकाल कर बहिष्कृत कर देते हैं।

आप किसी के भी पीछे की आधार स्तंभ का सर्वप्रथम अध्ययन कर गोल माल नहीं करने वाला समझ कर अपने से निकटता का संबंध स्थापित कर लेते हैं।

आप विपरीत योनि के प्रति संभोगात्मक प्रवति से सहजतापूर्वक प्रभावित होने वाले प्राणी हैं। आप निश्चित रूप से अपने जीवन में कोई जीवन संगी (प्रेमिका) अवश्य बनाएंगे। कुंभ राशीय प्रभाव से आपका वैचारिक मतैक्यता उनसे हो सकती है जिनका जन्म मिथुन अथवा तुला लग्न में जन्म हुआ हो।

एक बार आपका वैवाहिक जीवन सुव्यवस्थित एवं प्रतिबंधित हो जाना संभाव्य है। आप प्रसन्नतम पारिवारिक जीवन बिता सकेंगे। आप अपनी पत्नी एवं अपने प्यारी संतान

से युक्त होकर आपकी इच्छा का विस्तार होगा तथा अपने कार्य प्रणाली एवं उद्देश्य के अनुसार आपका नाम और आपकी प्रसिद्धि मिलेगी। आप सर्वथा पूर्ण निर्मित एवं व्यवस्थित भवन प्राप्त कर सकेंगे।

आप एक सामाजिक प्राणी हैं तथा यदा कदा अपने मित्रों को आमंत्रित कर अपने घर पर बुलाना पसंद करते हैं।

आपका स्वास्थ्य स्पष्ट रूप से अच्छा रहेगा परंतु कतिपय संभावित रोगादि की संभावनाओं के विरूद्ध सुरक्षात्मक कदम उठाना उत्तम होगा। कालांतर में रोगादि से प्रभावित होने की अशुभ संकट की आशंका है। आपके समक्ष हृदय की धड़कन, आंत्र शोथ एवं हार्नियां रोगादि की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

आपके लिए अंकों में अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक अनुकूल प्रतीत होता है। परंतु अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक अनुपयुक्त हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, लाल, पीला एवं क्रीम रंग उत्तम है। परंतु रंग नारंगी, हरा एवं नीला रंग आपके हित त्याज्य एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल एवं अत्यधिक लाभकारी दिन बुधवार शनिवार एवं शुक्रवार का दिन हैं। शेष रविवार, मंगलवार, एवं सोमवार का दिन आपके लिए बाधित एवं प्रतिकूल दिन हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलशाली एवं चंचल होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। स्वभाव से ये प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारधारा के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में स्नेह तथा सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है। धार्मिकता के भाव की इनमें अल्पता रहती है तथा आधुनिकता की पूर्ण छाप रहती है। साहित्य एवं कला में रूचि के साथ साथ ये उच्च कोटि के वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी प्रकार का ये भेद भाव नहीं करते हैं। अध्ययन के प्रति भी इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं। साथ ही अवसरानुकूल ये नेतृत्व को भी प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। ये भावुक नहीं होते तथा बुद्धि के द्वारा ही अपने समस्त कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य एवं वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ होते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली व्यक्ति होंगे परन्तु मन में स्थिरता के भाव का अभाव रहेगा। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को सम्पन्न करके सफलता प्राप्त करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपकी दृष्टि भी सूक्ष्म होगी तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करते हुए सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि की आप अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के व्यक्ति होंगे फलतः कार्य क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करके उनमें सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य आप सम्मानित प्रतिष्ठित एवं यशस्वी व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। साथ ही कला या हस्त कला के क्षेत्र में भी आप प्रतिष्ठा एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं ।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा इच्छित मात्रा में धन वैभव एवं ऐश्वर्य को अर्जित करने में समर्थ होंगे। इससे आपके सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी। साथ ही भौतिक सुख संसाधनों को भी आप अपनी योग्यता एवं विद्वता से प्राप्त करेंगे। मध्यमवस्था में आप परिश्रम पूर्वक उपलब्धियां अर्जित करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कार्य

कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे इससे आपको मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी मित्र एवं बन्धु वर्ग में आपका आदर रहेगा तथा उनसे आप समयानुसार लाभ एवं सहयोग अर्जित करते रहेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभवित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उददे्श्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्यों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोंरजन करेंगे । दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तको को पढ़ने में आपकी रूचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा राहु भी मित्रराशि में स्थित होकर चतुर्थ भाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको आवश्यक मात्रा में सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख- संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होंगे लेकिन इनको अर्जित करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इसमें विलम्ब भी हो सकता है। लेकिन अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से आप सामाजिक स्तर भी बनाएं रखेंगे तथा समाज में आपको यथोचित मान- सम्मान भी प्राप्त होगा।

आपको जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा नाना या नानी से भी न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति कर सकते है। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी स्वयं के परिश्रम एवं पराक्रम से भी प्रचुर मात्रा में सम्पत्ति से लाभ होगा परंतु विवादित सम्पत्ति से आपको दूर ही रहना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

आपका आवास मध्यम होगा परंतु आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा एवं आवश्यक रूप से भौतिक उपकरणों से भी सुसजित रहेगा। घर की स्वच्छता एवं आकर्षण का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर भी किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी लोग यद्यपि बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे परंतु आपसी संबंधों में मधुरता के भाव का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त वाहन की आपको अवश्य प्राप्ति होगी परंतु इसमें किंचित विलम्ब हो सकता है।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार के सदस्यों का पूर्ण पालन-पोषण करेंगी। परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा पारिवारिक जन भी उनसे सहमत होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। परिवार में शान्ति एवं समृद्धि बनाएं रखने में उनका महत्व पूर्ण योगदान होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में इच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में स्नातक परीक्षा उतीर्ण करना आपके लिए काफी श्रमसाध्य कार्य होगा। अतः यदि आप स्नातक डिग्री के अपेक्षा किसी तकनीकी शिक्षा में डिप्लोमा आदि करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी जिससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे।

चतुर्थ भाव में नैसर्गिक पापी ग्रह राहु के प्रभाव से मध्यावस्था में आप रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी का सामना कर सकते है। अतः यदि आप प्रारंभ से ही ऐसे पदार्थो का सेवन न करें जिनसे रक्तचाप या हृदय प्रभावित होता हो तो आपकी उपरोक्त परेशानी में कमी

आएगी तथा सामान्य समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः पथ्यापथ्य का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी जिससे आप अवसरानुकूल वांछित लाभ एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से शीघ्र एवं सुगमता से सम्पन्न करेंगे फलतः अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे तथा आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मिथुन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा आपका प्रेम भावनात्मक आकर्षण से युक्त होगा। इस क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी यत्नपूर्वक पालन करेंगे एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका दाम्पत्य जविन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर पुत्र एवं कन्या दोंनो की प्राप्ति होगी आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में समान्यतया तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृति स्वछन्द एवं स्वतन्त्र होगी। अतः यदा-कदा वे बिना माता-पिता की सलाह से भी कोई कार्य सम्पन्न कर सकते है लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता भाव बना रहेंगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूरी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा प्रारंभ से ही वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे जिससे वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में नित्य योग्य सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त वे विनम्र सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य-कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान में भी वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते है अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते है। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रूचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा शुक्र भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है परन्तु शुक्र के प्रभाव से आधुनिक विचारधारा से युक्त बुद्धिमान शिक्षित एवं व्यवहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी परन्तु यदा कदा तेजस्विता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही स्वाभिमान का भाव भी उनमें विद्यमान होगा लेकिन वह एक व्यावहारिक महिला होंगी। अतः सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। वह आधुनिक विचारधारा की महिला होंगी परन्तु अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदरता से युक्त गौरवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक लगेगा। सौन्दर्य को बनाएं रखने के लिए वह सौन्दर्य प्रसाधनों का भी मुक्त भाव से प्रयोग करेंगी तथा आधुनिक वस्त्रों एवं परिधानों से सुज्जित होंगी। शुक्र के प्रभाव से संगीत एवं कला के प्रति भी रूचिशील होंगी एवं पाश्चात्य संस्कृति का भी अनुसरण करेंगी।

सप्तम भाव में शुक्र के प्रभाव से आपका विवाह किसी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा साथ ही प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण तथा प्रेम का भाव रहेगा एक दूसरे के मनोभावों का आप आदर करेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे परस्पर विश्वास एवं समानता के भाव में वृद्धि होगी। इस प्रकार आपके दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता होगी एवं वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी सामान्य एवं समृद्ध परिवार से होगा एवं सामाजिक रूप से भी वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा जीवन में उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही आप भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे एवं महत्वपूर्ण अवसरों पर उनकी सलाह भी लेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण सेवा भाव होगा एवं माता पिता के समान उनकी सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार तथा मृदुवाणी से प्रभावित एवं प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथा योग्य सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको लाभ होगा। यदि किसी महिला से साझेदारी की जाए तो इससे उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्प्रज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकाशं कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा ।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिषठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मो का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबधी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उददे्श्य की पूर्ति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबधी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी मंगल हैं। साथ ही केतु भी दशमभाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि जलतत्व एवं केतु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा इससे आप स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही समयानुसार इसमें आप परिवर्तन भी करेंगे जिससे आपको तात्कालिक लाभ मिलेगा लेकिन अनावश्यक परिवर्तनों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में वृश्चिक राशिस्थ केतु के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र, वायुसेना, एयरलाइंस, विद्युत इंजीनियरी रासायनिक क्षेत्र उर्जा एवं शक्ति विभाग, होटल, प्रबंधक या कर्मचारी, तथा राजनीति शुभ एवं अनुकूल रहेगी । इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा इसमें आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्र में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए लोहे का कार्य खनिज पदार्थ, विद्युत उपकरणों का उत्पादन, जमीन जायदाद संबंधी व्यापार या क्रय विक्रय, ट्रैवल एजेंसी, खेती बागवानी, पेट्रोल पम्प एवं शराब का व्यापार शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही इन क्षेत्रों या वस्तुओं का व्यापार करके आप नवीन आयाम भी स्थापित कर सकते हैं। अतः व्यापारिक दृष्टि से उपरोक्त क्षेत्रों में ही चुनाव करना श्रेय कर रहेगा।

दशमभाव में केतु के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप किसी सम्मानित या अधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में भी आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि रहेगी। साथ ही किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी पदाधिकारी या सदस्य हो सकते है जिससे आपको मान सम्मान की प्राप्ति होगी लेकिन उपरोक्त मान सम्मान एवं प्रसिद्धि जीवन में आपको विलम्ब से प्राप्त होगी लेकिन इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी, परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे एवं उसमें उन्हें वांछित सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा दीक्षा का वे पूर्ण प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी एक परिश्रमी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे जिससे पिता के सम्मान में भी वृद्धि होगी लेकिन आपके परस्पर सबंधों में मधुरता कम ही होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन होंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यो में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः आपको आपस में

सामंजस्य स्थापित करके रहना चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ्य तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षांओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यो से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरूष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेंगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरनुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

नक्षत्रफल

आप धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, गण राक्षस, नाड़ी मध्य, योनि सिंह तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गे" अक्षर से होगा।

आपका चालचलन अच्छा रहेगा तथा सामान्यतया सदाचार का आप यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। व्यवहार कुशलता की आपमें प्रधानता रहेगी तथा अपनी बातों से अन्यजनों सहमत करवाने में भी आप को सफलता मिलेगी। अतः समाज में आप एक सम्माननीय तथा आदरणीय व्यक्ति समझे जाएंगे। धनवैभव से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रसिद्ध रहेंगे साथ ही आपके अर्न्तमन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप जीवन में अनुपालन भी करते रहेंगे। इस प्रवृति से आपको समाज में दूर दूर तक ख्याति भी प्राप्त होगी। साथ ही आप एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति भी होंगे एवं समाज के सभी वर्गों में आपका पूर्ण प्रभाव स्थापित रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप स्वभाविक रूप से आशावादी व्यक्ति होंगे तथा निराशा की भावना से सर्वदा दूर ही रहेंगे। अतः आप अल्प मात्रा में मानसिक कष्टों की प्राप्ति करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त प्रकार के सुख संसाधनों से सुसम्पन्न रहकर उनका उपभोग भी करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आपकी स्वभाविक रूचि रहेगी एवं इसका आप परिश्रमपूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं संगीत के क्षेत्र में विशेष सफलता एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आप अपने परिवार तथा बन्धुवर्ग में भी विशेष आदरणीय रहेंगे एवं अन्य सभी लोग आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के सोने के गहनों तथा अन्य बहुमूल्य रत्नादि से भी आप सुसम्पन्न हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त कई लोगों के ऊपर आपका प्रभाव रहेगा एवं इनके मध्य आप परम सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आप प्रारम्भ से ही दानशील प्रवृति से भी युक्त रहेंगे तथा समाज में जरूरतमन्द लोगों के लिए इस प्रवृति का पालन भी करते रहेंगे। आप में शौर्य गुणों की भी प्रधानता रहेगी तथा साहस एवं निर्भय होकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धन के प्रति भी आप का स्वभाव लालची रहेगा जिससे आप को यदा कदा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

कुम्भ राशि में जन्म होने के कारण आपकी नाक ऊंची होगी तथा मस्तक एवं मुख भाग विस्तृताकार होंगे। साथ ही हाथ, पैर तथा कमर में भी स्थूलता विद्यमान रहेगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता आकर्षक रहेगी परन्तु यदा कदा इसमें कोमलता का अभाव भी दृष्टिगोचर होगा। आप में आलस का भी प्रभाव रहेगा। शिल्प या चित्रकारी में आप निपुण रहेंगे तथा इस

क्षेत्र में सफलता तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

नाना प्रकार के कार्यों को करने में आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों का भी आपको ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में भी आप समाज में सम्माननीय रहेंगे। आपमें क्रोध की प्रवृतियों का आभाव होगा एवं स्वभाव से ही शान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी आप नित्य सफल रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप के मन में कभी कभी कठोरकर्मों को करने की प्रवृति उत्पन्न होगी एवथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इनमें आप अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आप यात्रा करने तथा घूमने फिरने के लिए विशेष रूचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगे। धन के प्रति आप में लालच का भाव रहेगा। साथ ही अन्य जनों के धन प्राप्ति की भी कामना रखेंगे एवं जीवन में यत्नपूर्वक इसके लिए तत्पर भी रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति विषम रहेगी एवं इसमें हानि वृद्धि नित्य होती रहेगी। इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्यों के लेपन के प्रति तथा पुष्पादि के लिए भी आप नित्य रूचिशील रहेंगे समय समय पर इनका उपभोग करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप उच्च श्रेणी के विद्वान होंगे तथा समाज में आपका यश व्याप्त रहेगा परन्तु आप अन्य विद्वानों को यथोचित आदर प्रदान नहीं करेंगे। इसके साथ ही आप में सुशीलता का भाव भी मध्यम रूप से ही विद्यमान रहेगा।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन में प्रायः विजय एवं सफलता क्रम से अर्जित करते रहेंगे एवं चरित्र से निर्मल होने के कारण आप अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय रहेंगे। धन सम्पत्ति में भी आप सम्पन्न रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति का भाव रहेगा एवं इनकी सेवा करने के लिए आप नित्य तत्पर भी रहेंगे। महिलावर्ग में भी आप

लोकप्रिय रहेंगे एवं उनके पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका परिवार विस्तृत रहेगा तथा अपने जाति या वर्ग के कल्याणकारी कार्यों को सिद्ध करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा जिससे आप बन्धुवर्ग में लोकप्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के सद्मित्रों से सुशोभित होकर उनका जीवन में यत्नपूर्वक अनुपालन करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आप की गर्दन लम्बी रहेगी तथा नसे भी शरीर से स्पष्ट रूप से दिखाई देंगी। इसके अतिरिक्त अन्य महिलाओं से आपके सामाजिक तथा मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे। मित्रों से आपका विशेष स्नेह रहेगा एवं उनको सहायता तथा सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्परता का परिचय देंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप में नैसर्गिक रूप से दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी अतः आप समय समय पर यथाशक्ति अपनी इस प्रवृति का भी अनुपालन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी कार्य करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आप में कृतज्ञता का सद्गुण भी रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर भी आप उनका पूर्ण उपकार स्वीकार करेंगे एवं उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के वाहन आदि से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके नेत्रों की सुन्दरता दर्शनीय रहेगी एवं बुद्धि भी छल रहित शुद्ध तथा सरलता से युक्त रहेगी। धन एवं विद्या को प्राप्त करने के लिए सतत परिश्रम तथा प्रयत्न करते रहेंगे एवं अपने अच्छे कार्यों के द्वारा समाज में ख्याति एवं सम्मान भी अर्जित करेंगे। साथ ही आप विशेष धनार्जन स्वपरिश्रम तथा बल से ही सम्पन्न करेंगे एवं साहस तथा निर्भयता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न तथा सिद्ध करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने वाली होगी। आप में कोमलता का भाव अल्प रूप में रहेगा परन्तु आप एक साहसी पुरूष होंगे अतः साहस पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। सत्य ही आप में क्रोध की भी अधिकता रहेगी एवं छोटी छोटी बातों पर उत्तेजित होते रहेंगे। शारीरिक बल का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद भी चलता रहेगा। फलतः समाज में अधिकांश लोगों के साथ आपका वैमनस्य रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप प्रमेह तथा उन्माद रोगों से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकेंगे। साथ ही आपका सौन्दर्य भी मध्यम ही रहेगा। आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कटु शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति पूर्ण रूप से धार्मिक रहेगी एवं समस्त धार्मिक कार्यकलापों का आप निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। आपके कार्य प्रायः अच्छे ही होंगे तथा आपके कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे आप में सद्गुणों की भी बहुलता रहेगी तथा आप जीवन में पूर्ण रूपेण इनसे सुसम्पन्न रहकर समाज में पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही अपने परिवार तथा कुल की उन्नति के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा इसको समृद्धि प्रदान करने में अपना प्रमुख योगदान प्रदान करेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए चैत्रमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रानक्षत्र, गंडयोग, वणिज करण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मार्च से 19 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र गंडयोग, वणिजकरण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव कुबेर की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। साथ ही शनि के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 19000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपकी समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा शारीरिक व्याकुलता में भी न्यूनता आएगी। साथ ही सर्वत्र अशुभ प्रभाव समाप्त होंगे एवं शुभ प्रभावों में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटी-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाना।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप सरकारी पद पर हैं तो आपका मिजाज गर्म होगा। जो आपको लाभ देगा। आपके पारिवारिक संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके जन्म से पहले मां-बाप की आर्थिक स्थिति खराब परंतु जन्म के बाद ठीक हुई होगी। पराई ममता या दूसरी स्त्री साथ देगी। शरीर पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपका परिवार ठीक रहेगा। आपकी औलाद के पास धन रहेगा। आपके हौसले बुलंद रहेंगे। आप आला किस्म के मर्द होंगे। आपको बिना यत्न बुजुर्गों का धन मिलेगा। आपके ससुराल वालों से संबंध अच्छे रहेंगे। आप धन की खूब बचत करेंगे। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी, आपका पत्नी के अतिरिक्त और भी औरतों से संबंध हो सकते हैं या दो विवाह भी हो सकते है। आपकी लड़की अच्छे घर में ब्याही जाएगी। भागीदारी के कामों से लाभ मिलेगा। आपकी ज्योतिष, कर्मकांड में रुचि रहेगी। अंत समय में आप अपने घर पर ही मौजूद रहेंगे।

यदि आपने भागीदार से झगड़ा किया, धन के लिए ससुराल वालों को तंग किया, झूठ-झूठ में विश्वास रखा, सरकार का टैक्स चुराया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से ससुराल के खानदान का समय बिगड़ जाएगा। पत्नी अस्वस्थ्य हो सकती है। 25 वर्ष तक स्त्री का सुख मंदा रहेगा। यदि आप नौकरी या व्यापार करते हैं स्वभाव गर्म होगा तो हानि होगी। सरकारी विभाग में नौकरी हैं तो गर्म स्वभाव रखना आपकी आदत होगी। कभी-कभी नर संतान से परेशानी रहेगी या आपके परिवार में लड़का नंगा या पागल हो सकता है। । यदि आप चोरी-ठगी करेंगे तो आर्थिक स्थिति खराब होती जायेगी। ज्यादा गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामदी बर्बादी की निशानी हो सकती है। आपके पैर में कुछ तकलीफ होगी। पत्नी से झगड़ा, जुदाई या तलाक हो, ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नौकरी करते हैं या दुकानदार हैं तो गर्म मिजाज न रहें।
2. सरकारी विभाग में नौकर हैं तो गर्म मिजाज रखें।

उपाय :

1. घर से काम पर जाते समय चीनी खाकर पानी पीकर जायें।
2. रात को रोटी पकाने के बाद गैस-चूल्हा या चूल्हे की आग दूध के छींटे देकर बुझावें। वह गैस चूल्हा या चूल्हा/सूर्योदय से पहले न जलावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से आपका जन्म आपके माता-पिता की तपस्या के बाद हुआ होगा या भगवान की मिन्नतें-मन्नतें मांग कर या

आपके जन्म से पहले कई बहनों का जन्म हुआ होगा। आप सबको वशीभूत कर लेते हैं। आप शांत स्वभाव के सुंदर और सफेद कपड़े पहनने के शौकीन हैं। आप विभिन्न भाषाओं के विद्वान होंगे। आपको पैतृक मकान का सुख मिलेगा। आपको जीवन भर संपत्ति की कमी महसूस नहीं होगी। 28 वर्ष की उम्र में विवाह हो तो जीवन भर सुख मिलेगा। पराई अमानत पास रह जायेगी जिससे अमीर हो जाऐंगे। जब तक माता जीवित रहेंगी धन-दौलत का अभाव नहीं रहेगा। लंबी उम्र के मालिक होंगे। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आपके जन्म के बाद पिता की माली-हालत अच्छी होगी। लम्बी आयु, कारोबार तथा धन लाभ के लिए शुभ होगा। बुढ़ापा उत्तम रहेगा। 24 या 27 साल की उम्र में अगर सफर करें तो सफर से वापस घर आकर मां का आशीर्वाद लेने से माता की आयु बढ़ेगी। 24 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

यदि आपने 24 वर्ष आयु से पहले मकान बनाया होगा, 28 वर्ष आयु में विवाह किया हो, आपने नौकरानी से झगड़ा या गाय को कष्ट दिया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से पानी में डूबने का भय, मानसिक रोग, पुत्र सुख का अभाव, अति चिन्ता रहना, शारीरिक कमजोरी, आंख की पुतली खराब होना, घर में बाग-बगीचा हो तो उजड़ा सा रहेगा, आपको दिल की बिमारियां हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. माता या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. चांदी के गिलास में दूध-पानी आदि पियें।
2. बट के वृक्ष को कभी-कभी पानी डालें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल छठे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आपका जन्म बड़ी मिन्नतें-मन्नतें मांग कर हुआ होगा या आपके संतान देरी से पैदा होगी या बुढ़ापे में औलाद का सुख मिलेगा। आप मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। अच्छे उच्चाधिकारी होंगे। आपके भाग्य की रक्षा होगी। आप साधू-सन्यासी विचार के प्राणी हैं। आप धर्मवीर और ईश्वर पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति होंगे। आपको दूसरों से दोस्ती करना, पढ़ाई-लिखाई का काम करना, राग विद्या या अपने भाषण, प्रवचन से धन कमाना शुभ रहेगा। आपकी लेखन कला जानदार होगी। आपकी भाग्योन्नति होगी। आपकी औलाद पर किसी प्रकार का बुरा असर नहीं पड़ेगा। आप अपनी कमाई का हिस्सा छोटे भाइयों को दें तो अच्छा रहेगा। आपके दुश्मन कम होंगे या दुश्मन आप से दबे रहेंगे, ऐसी उम्मीद है। आप स्वस्थ्य और प्रसन्न रहेंगे। विवाह के बाद तरक्की होगी। साहुकारी लाभ देगा।

यदि आपने भाई से शत्रुता रखी, मंदे राग गाने को शौक रखा, पशुओं से संबंधित काम किया, परिवार में भाइयों में दूसरा नंबर हुआ तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके भाई का नुकसान होने की आशंका है। आप शारीरिक दृष्टि से कमजोर होंगे। आपको अचानक हानि भी उठानी पड़ सकती है। संतान का सुख कम ही मिलेगा या बच्चा गोद लेना पड़ सकता है। आपकी मनोदशा दूषित रहेगी। आप खुद दुःख झेलेंगे परंतु दूसरे को तकलीफ नहीं देंगे। आपकी भाई से शत्रुता आपको हानि देगी। आपके भाई की माली हालात कमजोर होगी। आपको माता का सुख कम मिलने की शंका है। पशुओं से संबंधित व्यापार से हानि होगी। आपको सरकारी विभाग द्वारा परेशानी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई से झगड़ा न करें।
2. खुशी के समय मीठा न बांटें, यदि मीठा बांटना हो तो साथ में नमक जरुर बांटें।

उपाय :

1. 9 मन (360 किलो) गेहूं हर समय घर में रखें।
2. भैंसे को चारा खिलायें या मजदूर पेशा आदमी की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको परिश्रम करते रहना पड़ेगा। आप गुप्त विद्या के जानकार या गुप्त विद्या से लगाव रखने वाले हैं। 34 वर्ष के बाद समय अच्छा हो जाएगा। राजदरबार से सम्मान मिलेगा, ससुराल से लाभ मिलेगा।

यदि आपके घर में लाल, गुलाबी, महरून आदि रंग के कोरे कपड़े होंगे या मिट्टी का कोरा बर्तन होगा घर की सीढ़ियां टूटी हुई होंगी, परस्त्री संबंध रखेंगे तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपका धन रोग-बीमारी में बहुत खर्च होगा। गुप्त रूप से तबाह होते रहेंगे। कुछ हानिकारक समय आ सकता है। आपको काफी सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए अन्यथा जेल भी जाना पड़ सकता है। अस्पताल, वीरान अथवा घर से बाहर समय बिताना पड़ सकता है। नौकरी या व्यवसाय में अचानक बाधा आ सकती है। आय में आधे की क्षति हो जाएगी जो समझ में नहीं आएगी। दंत या नाड़ियों में बीमारी हो सकती है। पत्नी का मारक योग या दो पत्नी रखेगे। धन-दौलत भी खतरे में पड़ सकती है। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। 32 से 34 वर्ष की आयु में धनाभाव के कारण अन्य स्रोत में रुकावट ही होगी। 16 से 21 वर्ष तक की आयु का समय एकदम बेकार रहेगा। उम्र के 34 वर्ष तक अच्छा विकास नहीं होगा। धन-सम्पत्ति पर बुरा असर पड़ेगा। आलस्य के कारण उल्टा प्रभाव पड़ेगा और आर्थिक नुकसान होगा। जीवन में दीमक लग जाएगा अर्थात् आपके सुख के साधन खराब हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लाल, गुलाबी, महरुन रंग के कोरे कपड़े न रखें।
2. घर में धर्म स्थान की जगह न बदलें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. काला अंडरवियर पहनें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन निर्वाह के लिए आपको अकेले ही संघर्ष करना पड़ेगा। आप अपने पराक्रम से यशस्वी होंगे। आपको सोने, चांदी, कपड़े के काम में खूब लाभ होगा। कपड़े या दलाली के कामों से यश और अधिक धन मिलेगा। आप जीवन के 29वें वर्ष से सुख की ओर अग्रसर होंगे। आपको अपने लिए संघर्षरत रहना पड़ सकता है। आपको पिता की तरफ से जितना सहयोग चाहिए उतना सहयोग नहीं मिलेगा। दस्तकारी के कामों में खूब धन मिलेगा। आप धर्म में विश्वास रख कर नेकी के काम करेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। आप सरकारी विभाग से संबंधित यात्रा से हीरे-मोती पैदा करेंगे। विदेश की यात्रा से भी भरपूर लाभ मिलेगा। आप अपने पराक्रम से काम करके बहुत सुखी हो जाएंगे।

यदि आपके घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ, विद्या अधूरी रही, ख्वाबी महल देखने शुरु किये तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से उम्र के 36 वर्ष के बाद धर्म के मंदिर में जाकर शीश झुकाने से बहुत लाभ होगा जिससे आपका भाग्य बदल जाएगा। आप चरित्रहीन औरतों के साथ रह कर बहुत दुःखी रहेंगे। आप चोरी और चरित्रहीनता से दूर रह कर, भाग्य के लिए अच्छा फल प्राप्त कर सकते हैं। दूसरों पर रहम करके दुःख उठाने के भागी होंगे। आपके यहां अग्निकांड न हो इसके लिए सतर्क रहना चाहिए। आपका संतान के साथ मनमुटाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. पीले वस्त्र या सोना न पहनें।

उपाय :
1. गुरु-साधू की सेवा करें, पीपल को पानी से सीचें।

2. 43 दिन तांबे का पैसा बहते पानी में प्रवाह करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से यह खुलासा हो रहा है कि आपकी माता और पत्नी में मां-बेटी जैसा प्यार रहेगा। आपके घर में माया का अच्छा प्रभाव रहेगा। लक्ष्मी की बरकत कभी भी कम नहीं होगी। आपकी पच्चीस वर्ष की उम्र तक ही परेशानी रहेगी। इसके बाद समय जीवन भर सुख पूर्ण रहेगा। आपके कमाए हुए धन से स्त्री पक्ष को लाभ होगा। आप विवाह में उपयोगी चीजों का कार्य, जैसे टैंट हाउस, ब्यूटी पार्लर, रेडिमेड गारमेंट्स चलाएं तो अच्छा लाभ होगा। आपको कृषि योग्य जमीन भी मिलेगी। आपको अच्छा भवन एवं वाहन सुख मिलेगा। काली स्त्री से लाभ होगा। 37 वर्ष की आयु तक स्त्री सुख खूब मिलेगा। आपको जद्दी घर से दूर समुद्र की यात्रा द्वारा कमाई होगी। आपके अपने जन्म स्थान के शहर/गांव में लाभ नहीं मिलेगा। आप संसार में कहीं भी रहें मरने के समय जद्दी घर पर वापस आ जाएंगे।

यदि आपकी पत्नी का रंग गोरा हुआ, साले के साथ साझेदारी की, चाल-चलन खराब रखा तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपके काम धंधे में भाई-बंधु, यार-दोस्त आपकी संपत्ति को लूटते रहेंगे। आपके कारोबार में यही लोग रुकावट डालेंगे। ससुराल वालों को कारोबार में साथ न रखें। वैवाहिक संबंध में तथा संतानोत्पति में गड़बड़ी रह सकती है। चमड़े के पर्स में रुपये-पैसे न रखें। आपकी पत्नी और आपकी माता की नहीं बनेगी या वह ग्रहचाल के कारण इकट्ठी नहीं रह पायेंगी। परस्त्री से इश्क के बुरे असर होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।
2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

उपाय :

1. बिल्ली की जेर कंबल के टुकड़े में रख कर अपने पास रखें।
2. कांसे का बर्तन दहेज में जरुर लेवें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि नौवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप लोगों पर परोपकार करेंगे तथा इसके अच्छे लाभ भी आपको मिलेंगे। आप बड़े परिवार के सदस्य होंगे। आप भाई एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त कर धनवान बनेंगे। आपको चलते-फिरते कामों से अधिक लाभ मिलेगा। आपको संतान का सुख होगा। परंतु संतान के सुख प्राप्ति में विलंब हो सकता है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होगी। आपके पास प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। आप धन के

विषय में लापरवाह रहेंगे। आप उदार प्रवृत्ति के, जागीरदार, सदा सुखी होंगे। माता-पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे। आप पर कभी भी कर्ज का बोझ नहीं पड़ेगा। आपका भाग्य अपने माता-पिता के भाग्य से अच्छा होगा। आपकी पत्नी भाग्यवान और अमीर खानदान की होगी। आप पैसे के प्रति बहुत मोह नहीं करेंगे। तीर्थ यात्रा करेंगे भाग्योन्नति होगी उससे अधिक शुभ फल प्राप्त होते रहेंगे। आप धार्मिक विचार वाले होंगे।

यदि आपने दूसरों के माल पर बुरी नजर रखी, जुआ आदि खेला, बुरे काम किये, लोहा/मशीनरी आदि के कार्य किये, घर में शीशम का पेड़ हो, जब आपके नाम 3 मकान बन जायें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप ब्याज का धंधा करें तो नुकसान होगा। आपके दिल में दूसरों से बदला लेने की भावना रहती है। अग्निकाण्ड की शंका है। आपको सांस या दमे की बीमारी हो सकती है। संतान सुख में विघ्न या पुत्र-पौत्र संतान की चिंता रहेगी। मंदे कामों से बदनामी भी हो सकती है। आंखों की दृष्टि खराब हो ऐसी आशंका है। अमीरों से धन लूट कर गरीबों में बांटना, ऐसी आपकी सोच रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न करें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

उपाय :

1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. घर के अंत में अंधेरा कमरा बनायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सर्वगुण संपन्न, धनवान, और आयुवान होंगे। आप तीर्थ यात्रा करेंगे। आप एक सज्जन पुरुष होंगे तथा अपना जीवन सुख से बितायेंगे। आप अपार धन-संपत्ति के मालिक बनेंगे। आपको अपने सगे संबंधियों से भी धन-दौलत प्राप्त होगी। आप दूसरों की भलाई करेंगे आप भले लोगों की गिनती में गिने जाएंगे। आप धर्मात्मा, वाहन सुख से युक्त होंगे। आप अपनी बहन और पुत्री पर धन खर्च करेंगे। आपको ससुराल से भी धनागम होता रहेगा। आपको सरकार पक्ष से पूरा लाभ होगा तथा अपने बुजुर्गों का घर भर देंगे। ससुराल में भी धन की वृद्धि होगी। आप के पास 24 वर्ष की उम्र के बाद धन एकत्र होगा, गरीबी दूर हो जाएगी और धन की वर्षा होगी। आपके पिता और आपके पुत्र पर अच्छा असर पड़ेगा परंतु माता के लिए अशुभ होगा। आपके पास भूमि, भवन, वाहन सभी प्रकार के सुख-संसाधन उपलब्ध होंगे। यदि आप सरकारी महकमे में कार्यरत होंगे तो सरकारी महकमे में बड़े अफसर होकर अच्छा ओहदा प्राप्त करेंगे। आप जन्म भर सुखी रहेंगे। बंदूक-पिस्तौल आदि रखने का शौक होगा।

यदि आपने पाखाने की जगह बदली, घर की छत पर लकड़ी के कोयले रखे, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनाई, माता की आयु की स्त्रियों से संबंध रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके जीवन का 34वां वर्ष कष्टकारी होगा। माता को कष्ट की आशंका है। आप माता का विरोध करेंगे। ससुराल, ननिहाल के लिये अशुभ रहेगा, राजदरबार में हानि, दो विवाह योग या पत्नी के साथ रखैल रखें, ऐसी शंका है। रखैल पर धन बर्बाद करके अपना जीवन नष्ट कर लेंगे। आपको वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। दिन में स्वप्न देखने वाले होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माता की आयु की स्त्री से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

उपाय :

1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, उत्तम सुख से परिपूर्ण तथा अपने पथ पर अग्रसर रहने वाले होंगे। आप इतने अच्छे मुकद्दर के हैं कि आप मिट्टी छुएं तो सोना हो जाता है। 24 वर्ष की उम्र के बाद संतान प्राप्ति योग होगा। आपको कन्या संतान से सुख और पुत्र संतान से मध्यम सुख संभव है। आपको पुत्र का सुख प्राप्त होने की आशा है। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। निर्धनता कभी भी नहीं आएगी। आप शक्की स्वभाव के हैं। आपके जीवन में 48 वर्ष आयु तक समय तो मिला-जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिला-जुला कर आपका जीवन सुखमय ही रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पर स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखें तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपका चाल-चलन ढीला हो तो पुत्रियां अधिक होने, नपुंसक होने की संभावना रहती है। निःसंतान या संतान गोद लेने का योग होता है और जिससे आपको बहुत ही पीड़ा भोगनी पड़ सकती है। आपके भाई आपको गढ्ढे में धकेल सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग करेंगे। पराई औरत से संबंध आपके दांपत्य सुख में बाधा पहुंचा सकते है। आपके जीवन के लिए घातक और मौत का कारण सिद्ध हो सकता है। 48 वर्ष के लगभग पुत्र सुख मिलेगा या माता की आंखें खराब होने पर या माता की मौत के बाद पुत्र जन्म हो ऐसी संभावना है। धन का अपव्यय या अवनति होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय :

1. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वितीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि पंचम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि छठे सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि पंचम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकती है, जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप अपने साझेदार से संतुष्ट नहीं रहेंगे और आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा रहेगा।

14 मई के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे। जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप बचत नहीं कर पाएंगे। बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

14 मई के बाद धनागम में निरन्तरता बढ़ जाएगी जिससे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में कुछ विशम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य में आपकी अहम भुमिका होगी। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे, परन्तु 14 मई से गुरुग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।

यह समय गर्भधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा। नैसर्गिक रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह सस्कार भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीय स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव भी आपके शरीर पर पड़ेगा। 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर भी द्वितीय स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आप अचानक रोग ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरुग्रह के गोचर के बाद आपका समय काफी अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए इस वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए 14 मई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि से विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे है। आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। 14 मई के बाद लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा, मन्त्र पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति

श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को राटी में गुड़ डालकर खिलाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रुके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रुचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों से आपका मेल मिलाप रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम करने पर भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपमें श्रद्धा की भावना नहीं रहेगी एवं धन हानि के योग भी बनते रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं उनसे किसी भी प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही शत्रुओं से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें तथा अपने कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्नचित रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे वांछित लाभ अर्जित होगा। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके चिर प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस समय सफल होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगे तथा इनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही उत्तम फल दायक रहेगा।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से

धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक इनका पूजन तथा आदर करते रहेंगे।साथ ही दूसरे लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपका उचित सहयोग एवं मित्रता रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सुख एवं सहयोग आपको प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी आप यदाकदा प्राप्त करेंगे।अतः आप ठंड या वातरोग से पीड़ित हो सकते है तथा आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य भी सम्पन्न होगा जिसके लिए आपको पछताना पड़ेगा जिससे समाज में सम्मान में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आपका शत्रुपक्ष इस समय प्रबल रहेगा अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता आएगी या कोई अन्य कार्य छूट सकता या बन्द हो सकता है। साथ ही कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार के परिवर्तन होने की भी संभावना रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे समाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में किसी प्रकार का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनसे आपको कोई कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या कीमती द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते है। इससे आप मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति कर सकेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सफल होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्यार्जन करने में समर्थ होंगे तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप सफल भी होंगे। आपके प्रभुत्व में इस समय वृद्धि होगी एवं

सभी लोग आपकी योग्यता को स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार भी मिलेगा जिससे आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस समय समाज से आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय आप रक्त विकार से भी पीड़ित हो सकते है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को करने में सतर्कता का अनुपालन करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा परन्तु अल्पमात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्य मान रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनकी ओर से चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा किसी प्रकार से दण्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा तथा समाज में सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा कुछ न कुछ विवाद चलता रहेगा। आपकी इच्छाएं भी इस मास में अपूर्ण रहेंगी। अतः बुद्धिमता एवं सावधानी से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ समय समय पर शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे साथ ही अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धनार्जन भी करेंगे। इस प्रकार आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे तथा समाज में भी न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार की कष्टानुभूति हो सकती है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा जिससे आप इनकी ओर से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा इनके द्वारा आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इस समय आप में उत्साह के भाव की न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी परेशान

रहेंगे।साथ ही लोभ के भाव की आप में अधिकता दृष्टिगोचर होगी।बन्धु एवं मित्रों से आपके विशेष अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा इस समय मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी परस्पर विवाद होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही अधिकाशं कार्यो को अपनी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप सामान्य धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ फल अधिक मात्रा में प्रदान करेगा तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिंतित एवं भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।साथ ही इस मास में आपके घर में चोरी आदि भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते है। इस समय दूर समीप की कोई यात्रा भी कर सकते है। साथ ही सांसारिक कार्यो से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्ययाधिक्य की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा एवं अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे एवं समाज में यथोचित सम्मान भी प्राप्त होगा।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे साथ ही समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी। इस मास में आपके भाग्योदय

संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे जिससे आप पदोन्नति या विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते है। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनके परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस मास सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता एवं श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे। आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा एवं अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस माह में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं।साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप समस्त भौतिक सुख अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चो की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत अनुकूल नही रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादाप्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ,खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगीऔरदान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगे।साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगें तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यो में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने

पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे ।साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए ।साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रूधिर विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे।

इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही

परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे।अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतःआप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति

आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्ति आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रूकावटें डाल जा सकते है। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नही तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरूआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते है, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा ।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान कास्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा ।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थानपर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नती के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सोफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह

परिर्वतन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबो की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नही कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग

मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नही रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए उत्तम रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली खासियत जो आप में है, आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आनंद भी लेंगे। अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी कुण्डली में दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। आपके आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपको कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए और उद्देश्य पूर्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

9 अगस्त के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। परिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। 9 अगस्त से घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा।

15 अक्टूबर के बाद अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपके पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपका आत्म सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। 18 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपकी दृढ़ निश्चयता और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

18 फरवरी से गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 18 फरवरी के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

राहु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 15 अक्टूबर के बाद व्यावसायिक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष कोई विशेष यात्रा के योग नहीं बन रहे। 18 फरवरी के बाद आपकी छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

राहु के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु नमव भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुएकादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं एकादश में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं वह काबिले तारीफ है। 5 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। 23 अक्तूबर से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगीपरन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करनी होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तमरहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 5 मार्च के बाद गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर भी बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं।

12 अगस्त से आपको भाईयों और मित्रोंकर अच्छा सहयोग मिलने के कारण फिर से धन संचय करने में लग जाएंगे। आपके संचित धन में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में आपको सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 23 अक्तूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़ीयानहींरहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसी

विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

12 अगस्त से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव होने से आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का योग बन रहा है। आपके भाई व मित्रों के लिए समय बहुत शुभ है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। आपको प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ के दो माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे, परन्तु 5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है।31 मई से पंचम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी।

उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 23अक्तूबरसे आपके बच्चों का समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 5 मार्च से द्वादश स्थान परगुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपशारीरिक आरोग्यता को प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकता है। 5 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहें तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। 5 मार्च के बाद आपकीविदेश यात्रा होंगी।

12 अगस्त के बाद आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीयस्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में

आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। 12 अगस्त से पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप मन्त्र जाप करेंगे। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं नवम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 18 मार्च के बाद वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा और आपको बन्धु-बान्धवों का पूरा सहयोग मिलेगा।

आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति के योग हैं। आप अपने व्यापार को ऊंचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चतुर और सूझ-बूझ भरे व्यक्ति हैं तो इसके चलते आप इन चुनौतियों को ही लाभकारी अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं।

लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। यदि ऋण के लिए आवेदन दिया है तो वह भी मिल जाएगा। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक संपति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगा। जिससे आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके

मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। अतः आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं वे गलत संगत में पड़ सकते हैं जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो अपने लक्ष्य से उनका मन भटक सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना प्रारम्भ हो जाएगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करने समय सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

वर्ष के मध्य में एकादश स्थान का मंगल प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए काफी शुभ है। उनके करियर में सफलता के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, भिखारियों को दान देना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध हितकारी रहने वाला है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। अष्टम स्थान का राहु आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगा। अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के मार्ग खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 28 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 12 अगस्त के बाद सप्तम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक अनुकूलता पर धन का व्यय होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। पारिवारिक सुख सुविधा के लिए अधिक धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक दृष्टिकोण से उत्तम रहेगा। 28 मार्च के बाद आपके परिवार में

सदस्य वद्धि के संकेत हैं। यह वृद्धि किसी के विवाह या शिशु जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी ।जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध शुभ नहीं है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम एवं सुबह-सुबह टहलना आदि
वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप सेहत पर ध्यान नहीं देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर अनावश्यक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर योगा आदि करना आपके लिए लाभप्रद है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। ज्योतिष व गुप्त विद्या के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति व्यवसाय के रूप में करियर खोज रहे हैं। उनके लिए शनि ग्रह का गोचर एक सुनहरा अवसर लेकर आ रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है, जिसमें आपको अच्छी उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित भी यात्रएं होती रहेंगी। 13 जुलाई के बाद द्वादश स्थान पर

शनि ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान-पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने पूजा घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनि व बुधवार के दिन काली व नीली वस्तु का दान करें एवं राहु के निम्न मन्त्र का पाठ करें।

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि छठे भाव में और सिंह राशि का राहु सप्तम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होग, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

6 अप्रैल के बाद आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझ कर ही धन का व्यवहार करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 6 अप्रैल से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य

भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य उनका विवाह हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो उसकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है। आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम या सुबह-सुबह टहलने जाना। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती है या प्रारम्भ हो सकती है। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यवसाय में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं

के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 6 अप्रैल से समय धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दुसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। जितना आप अच्छा कार्य करेंगे उतना ही आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन व पूजन करें। इसके प्रभाव से ग्रहजनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आपका अच्छा खर्च हो जाएगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलेगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

15 अप्रैल के बाद घरेलू वातावरण बहुत ही अच्छा रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अप्रैल के बाद दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। वे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे समाज में आपका मान संमान बढ़ेगा। यदि आप दूसरे संतान की इच्छा रखने हैं तो गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह टहलने जाना इत्यादि।

27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। रोजगार के नये नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। 27 अगस्त के बाद आलस्य की भावना आपकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है। अतः अगस्त के बाद आलस्यता व अत्यधिक आत्मविश्वास का त्याग करें और यथार्थवादी बनें ।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 15 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु, राहु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपकी अवश्य विदेश यात्रा होगी।

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- श्वेतार्क गणपति अपने घर में स्थापित करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में स्थानान्तरण की भी संभावना बन रही है। 26 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

सितम्बर के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों को अचानक हानि होगी। परिवार में रोग-बीमारी अधिक होने के कारण आपका व्यय बढ़ेगा।

धन संपत्ति

वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान का गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता जी से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं।

16 सितम्बर के बाद लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आय के मार्ग प्रभावित होंगे। किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपका घरेलू माहौल अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 26 अप्रैल से संतान व भाईयों के लिए समय बहुत

ही शुभ हो रहा है।

सप्तम स्थान का शनि आपकी पत्नी के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं संमान प्रदान करेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप श्रेष्ठ कार्य करने में रुचिशील रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा।

26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का श्रेष्ठ समय रहेगा। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो इस समय के अंतराल में उसका विवाह हो सकता है। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। मौसमजनित बीमारियां भी आपको तंग कर सकती हैं। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि छठे स्थान का राहु रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

अप्रैल के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे। फिर भी आलस्य की भावना बनी रहेगी। किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। 19 अक्टूबर के बाद अचानक आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त हो सकते हैं। परन्तु शीघ्र ही यह स्थिति भी ठीक हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए साल का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 16 सितम्बर के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्रा भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 26 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रूचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। परन्तु इन सभी कार्यों में आपकी पत्नी का सहयोग कम ही रहेगा।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं और शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे की लोटे में चावल, रोली डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। आपके शत्रु आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते हैं तथा आप इस परेशानी से निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। 11 मई के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में सावधानी बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी फिर भी आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे क्योंकि राहु के साथ गुरु की युति अच्छी नहीं होती। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके अच्छा संदेश नहीं दे रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप देन लेन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्म पत्नी एवं पुत्र का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

7 अक्टूबर से व्यापारिक व्यक्तियों को कुछ लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जो आपके लिए अच्छा नहीं है। शेयर बाजार से दूरी बनाए रखना आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रही है। सहनशक्ति बनाए रखें। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। मई के बाद आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए समय अच्छा नहीं है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए शुभ नहीं है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो आपके बच्चों के लिए अनुकूल नहीं है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों का संतान हानि (गर्भपात) हो सकता है। अतः उस समय आपको संतान पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय काफी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, जिससे आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपको मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। लग्न स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में अचानक कोई बड़ी बीमारी होने का प्रबल संकेत दिख रहा है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। फिर भी अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। पंचम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपकी उन्नति को रोक रही है। मई के बाद नौकरी के लिए प्रयासरत अभ्यार्थियों को प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है क्योंकि आने वाले समय में यही परिश्रम आपकी सफलता का द्वार खोलेगा।

7 अक्टूबर के बाद समय में कुछ सुधार हो रहा है तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को सफलता मिल सकती है। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए भी समय शुभ है। नौकरी वांछित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्रा का भी आनन्द ले सकते हैं। व्यवसाय से संबंधित भी आपकी यात्राएं होती रहेंगी।

11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। सांस्कृतिक उत्सवों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। आपके धर्म के अनुसार जितने भी पर्व होते हैं उन सभी पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे। मई के बाद आप दान पुण्य में ज्यादा रुचि लेंगे- जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अक्टूबर के बाद आपके दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष यज्ञ अनुष्ठान करेंगे, जिससे आपको अत्यधिक मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगा।

- दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें तथा सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें ।
- अपने बजन के बराबर अन्न का दान (तुला दान) करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक स्थिति के लिए सामान्य रहेगा। आपके अंदर काम करने का जुनून तो होगा परन्तु कोई शुभ अवसर नहीं मिलने के कारण आपका मनोबल कमजोर हो सकता है। 5 अप्रैल के बाद आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है, आपको धोखा मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 2 जून के बाद सफलता की कुछ उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको कुछ लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे, जिसमें आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभाववित हो रहा है। कोर्ट कचहरी व किसी कानूनी प्रक्रिया में फंस सकते हैं। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में रुचि से अधिक दबाव की स्थिति बन सकती है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आर्थिक स्थिति में सुदृढ .ता बनी रहेगी। 3 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

अप्रैल के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। कुछ अनाावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। धन विनियोजन को प्रबल करने के लिये आपको पराक्रम से काम लेना होगा। इस अवधि में आपका सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा। 4 नवम्बर से वित्तीय विषयों के लिए समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ तो उत्तम रहेगा, परन्तु 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। 7 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह की उपस्थिति अचानक घरेलू महौल को खराब कर सकती है। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। सप्तम स्थान में शनि की स्थिति आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छी नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें।

सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह साल अच्छा नहीं है। अतः आपको सभी के साथ अच्छा संबंध बना कर रखना चाहिए। छोटी-मोटी बातों को अनदेखा कर देना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। 4 नवम्बर के बाद माता पिता के लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उनके स्वास्थ्य पर आपको ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

संतान

पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपको अपनी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। भाग्य थोड़ा कम ही साथ देगा।

2 जून के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बढ़िया रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 2 जून से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लेकिन वर्षान्त में समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

4 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियो को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंताजनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय

समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस साल आपको परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेंगे। आप अपने लक्ष्य के पथ पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को ले आगे बढ़ते रहेंगे। 2 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रूझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ नहीं है। परन्तु विदेश में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। 4 नवम्बर से समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घ ार से दूर भी हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। लम्बी यात्रा का योग इस वर्ष कम ही बन रहा है। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

2 जून से सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्रा होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 4 नवम्बर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्मो को ही पूजा समझेंगे। 2 जून से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मुख्यतः सारे ग्रहो का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ शनि एवं गुरु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। वर्ष के प्रारम्भ में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास लगन से करें क्योंकि 6 अप्रैल के बाद आपको सफलता मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। व्यापार में हानि या साझेदारी में धोखा मिल सकता है। उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में किंचित लाभ होगा तथा उन्नति के मार्ग भी खुलेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु एवं शनि के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं क्योंकि 6 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए और ज्यादा खराब रहने वाला है। चोरी, दुर्घटना व सट्टा इत्यादि के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। रोग-व्याधि, कोर्ट कचहरी इत्यादि में भी आपका धन व्यय होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारी में शादी इत्यादि मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 3 दिसम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिंताएं बनी

रहेंगी। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। किसी के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है इसलिए जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 3 दिसम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। आपको बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि गर्भवती स्त्रियों के लिए खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप ज्यातर बीमार ही रहेंगे कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

साल का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तुला दान या महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं है। वर्षान्त में बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। सामुद्रिक या दर्शनीय स्थलों की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

नौकरी व व्यवसाय से संबंधित देश विदेश की यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा व वाहन चलाते समय हमेशा सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बन रहा है क्योंकि इस वर्ष मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। आपके आस्था एवं विश्वास में कमी आ सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथसालय या गरीब बच्चे के पढाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ .ाएं।
- महामृत्यंजय का पाठ करना या तुला दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सामान्य रहेगा। कार्य-स्थल में अपने काम को लेकर असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि आपको परेशान कर सकते हैं। वैसे मानसिक और शारीरिक रूप से आप काफी ऊर्जावान रहेंगे। नौकरी या व्यवसाय में आप काफी व्यस्त रहेंगे व आपका यह कड़ा परिश्रम ही आपकी सफलता में सहायक होगा। जहाँ तक हो सके अपने कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने की कोशिश करें। क्योंकि 6 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे।

25 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। सफलता के उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व कानूनी प्रक्रिया से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। ध्यान रखें वैसे भी सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप मनचाहा धन कमाने में सफल रहेंगे। जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा भी वापस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। शेयर बाजार में सोच समझकर ही निवेश करें। लॉटरी व सट्टेबाजी में धन न लगाएं।

25 सितम्बर के बाद आपकी आय में वृद्धि होगी। बैंक से आसानी से कर्ज प्राप्त हो सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ प्राप्त होगा। किसी प्रभावशाली व उच्च पदस्थ व्यक्ति की मदद से आपको आर्थिक लाभ होने की संभावना है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी। व्यावसायिक यात्राएँ धन अधिक खर्च करवाएंगी परंतु आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपके भाईयों का पूर्ण सहयेाग बना रहेगा। लेकिन 6 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस अवधी में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप संतान की इच्छा रखते है तो यह समय श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

6 मई से जुलाई पर्यन्त समय प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। परन्तु 6 मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ शारीरिक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं।

शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंताएं भी बढ़ेंगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि जुलाई के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। अतः वाहनादि चलाते समय ज्यादा सावधान रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त

होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। परन्तु 6 मई से जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। यह समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष शुभ नहीं है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी। 6 मई के बाद आप विदेश यात्रा करेंगे ।

इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना या चोट-चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है। 25 सितम्बर के बाद शनि भी शुभ हो जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएंगे तथा सभी सत्कर्मों में पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगी। 6 मई के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा। उस अवधि में आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- मंगलवार का व्रत करें तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं नवम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। जोखिम लेने से न घबराएं और अपने कम्फर्ट जोन से बाहन निकलें। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध नौकरी वाले लोगों के लिए अनुकूल रहेगा। दशमस्थ गुरु के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे। मनचाही नौकरी मिलगी और पदोन्नति भी होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन इस मुसीबत से निकलने में आप सफल रहेंगे। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। भूमि, भवन व वाहन का सुख प्राप्त होगा। संचित धन की वृद्धि होगी। आभूषण एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली सारी बाधाएं दूर होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु आपके दूसरे भाव में प्रवेश करने वाले हैं। उस समय आपको आर्थिक मामलों को लेकर बहुत ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। दूसरों की बातों में न आएं और दूसरों के ऊपर पैसे खर्च करने से भी परहेज करें। आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं है। गलत कार्य में धन निवेश न करें नहीं तो धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम

भूमिका होगी। आपके भाईयों की उन्नति होगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

22 जून को द्वितीय स्थान का राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यहीं रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होगा। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

22 जून के बाद द्वितीयस्थ राहु के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। 10 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

इस अवधि में आपकी छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरीपेसा व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी। नवमस्थ शनि के कारण लम्बी यात्राओं का आनन्द लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा में व्यवधान आ सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस अवधि में आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों, चींटियों व मछलियों के लिए दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। पूरे वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ़ जाएगी। व्यापार में आपके भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

30 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले लोगों का पदोन्नति के साथ अनुकूल स्थान पर तबादला होगा। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। सितम्बर के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय के अंतराल में व्यापार के साथ साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वितीय स्थान का राहु अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। निवेश या आर्थिक मामलों में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर पूरे वर्ष प्रतिकूल रहेगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। 30 जुलाई

तक विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। जुलाई के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। माता पिता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा व सबका सहयोग मिलेगा। सितम्बर के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी दूसरी संतान का चौमुखी विकास होगा। विवाह भी हो सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। 19 सितम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है।

वर्षान्त में अत्यधिक आलस्य के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे तथा मानसिक तनाव भी बना रहेगा। नियमित रूप से व्यायाम करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीकी शिक्षा व विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में सफलता के योग हैं। करियर में उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यापार में महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिकारी वर्ग से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई टैक्नोलॉजी व मशीनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। सितम्बर के बाद आपकी परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में नौकरी में स्थानान्तरण के योग हैं यह स्थानान्तरण आपके हित में होगा। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

30 जुलाई के बाद व्यवसाय या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी। साथ ही परिवार सहित प्रसिद्ध क्षेत्रों की यात्राएं होंगी एवं सगे संबंधियों के घर में विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में जाने का अवसर मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

सितम्बर के बाद आपके धार्मिक कार्य किंचित प्रभावित होंगे। लग्न स्थान का राहु आपके दैनिक पूजा पाठ में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। मानसिक अस्थिरता के कारण भी आप कोई विशेष पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे। गणेश जी का मन्त्र पाठ आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहने वाला है। सहयोगी तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति अथवा कार्यक्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी। व्यापार में नीति निपुणता से काम लेना आपके लिए लाभकारी रहेगा। 16 फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी होगी।

गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यापार में व्यवधान व परिवर्तन को दिखा रहा है। व्यवसाय में आपका निवेश अधिक होगा परंतु लाभ कम मिलेगा। हालांकि चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि पिता या किसी बड़े सम्मानित व्यक्ति की सहायता से आपको लाभ मिलेगा जो आने वाले समय के लिए बहुत ही अनुकूल है। साझेदारी में व्यापार शुरु करना आपके लिए शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण शारीरिक व्याधि दूर करने में अधिक व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है तथा अपने खर्चे पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। केस, मुकद्दमा व कानूनी प्रक्रिया में भी आपके कुछ अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष परिवार में एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग

हो सकती है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं तथा अपने बौद्धिक शक्ति के द्वारा पारिवारिक विषमता को अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। इस वर्ष आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य रहेगा।

संतान

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए कष्टप्रद रहने वाला है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा आपके प्रथम बच्चे की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग तथा इंफेक्शन के कारण होगा।

आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इस सब का नकारात्मक प्रभाव आपकी सेहत पर पड़ेगा, जिससे आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण पेट, मोटापा व लीवर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवारी को गुरु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पढ़ाई लिखाई में कमी या प्रतियोगिता में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। प्रतियोगिता में प्रतिद्वंदियों द्वारा रुकावट डाली जा सकती है।

जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह साल श्रेष्ठ रहने वाला है। विदेशी शिक्षा प्राप्त करने वालों को वांछित सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आपकी सारी यात्राओं में व्यवधान आने की संभावना है। पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं कर पाएंगे। अचानक व्यवसाय से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। इस यात्रा के अंतराल में आपको शरीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर तबादला होगा। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपके विदेश यात्रा होगी तथा इस यात्रा से आपको विशेष लाभ होने वाला है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा तथा मानसिक अस्थिरता के कारण आप पूजा-पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। तन्त्र मन्त्र व साधन के प्रति आपकी रुचि ज्यादा बढ़ेगी। धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा भी इस वर्ष प्रभावित रहने वाली है।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू किसी धार्मिक स्थान पर दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(20/02/2018 - 20/02/2037)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 20/02/2018 को आरम्भ और 20/02/2037 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि नवम भाव में स्थित है। शनी को एक अशुभ ग्रह कहा जाता है, पर यह अशुभ और शुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह माना जाता है। इसके कारण फल की प्राप्ति में देर होती है, पर यह उससे वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है आपकी जन्मकुण्डली में नवम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 11वें, 3रे तथा छठे भाव पर है और यह उनके कार्य को प्रभावित कर रहा है। नवम भाव, जिसमें यह स्थित है, विश्वास, भाग्य, ध्यान साधना, बलिदान, दानशीलता, अध्यापन, धर्म, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

नवम भावम में स्थित महादशा स्वामी शनि की दृष्टि तृतीय और षष्ठम भावों पर है जिससे आपका स्वास्थ्य उत्तम और जीवन खुशहाल रहेगा। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी या स्वास्थ्य समस्या परेशान नहीं करेगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि नवम भाव में स्थित है और भाव को शक्ति प्रदान करता है। आपकी धार्मिक तथा दान-पुण्य के कार्यों में रुचि होगी। आपकी विदेश यात्रा होगी जिसमें आप धन अर्जित करेंगे। चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के लिए दशा अत्यन्त अनुकूल है।

व्यवसाय :

शनि के नवम भाव में स्थित होने के कारण आप अपना पुश्तैनी व्यवसाय अथवा उपदेशक, शिक्षक या चिकित्सक का कार्य करेंगे। आपके जीवन पर आपके पिता का पूर्ण प्रभाव रहेगा ओर आप दान-पुण्य करने वाले एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्र होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपकी सहायता करेंगे और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके समकक्ष साथियों की आपके पारिवारिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी पढ़ाई में दिलचस्पी है और आप अपनी शिक्षा पूरी करने में सफल होंगे।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(12/12/2024 - 11/02/2028)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/02/2018 को प्रारंभ होकर 20/02/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 12/12/2024 को प्रारंभ होकर 11/02/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा, शिष्ट व्यवहार होगा। आमोद-प्रमोद में मन लगेगा। लोकप्रिय होंगे, विशेषकर विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होंगे। उनसे आवश्यकता से अधिक प्रगाढ़ता न बढ़ाएं, अन्यथा कोई व्याधि हो सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यापार में साझेदारी करने से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(11/02/2028 - 23/01/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/02/2018 को प्रारंभ होकर 20/02/2037 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 11/02/2028 को प्रारंभ होकर 23/01/2029 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप यात्राओं के शौकीन होंगे। मित्रों की संख्या में कमी हो सकती है। समाज से तालमेल करने में दिक्कत आ सकती है। सरकारी अधिकारी अप्रसन्न हो सकते हैं ; अपमान से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से व्यवहार में सावधान रहें अन्यथा बदनामी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का माणिक सोने या तांबे की अंगूठी में अनामिका

में सूर्य की उपासना करते हुए धारण करें।

प्रत्येक दिन सूर्य नमस्कार करें और सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(23/01/2029 - 25/08/2030)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 20/02/2018 को प्रारंभ होकर 20/02/2037 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। चंद्र शक्तिशाली ग्रह है। प्रथम भाव में स्थित होकर चन्द्रमा आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर और माता से घनिष्ठ रहेंगे। मन और माता का कारक चंद्रमा लग्न में स्थित होने के कारण आप अत्यधिक संवेदनशील और मूडी रहेंगे। इस कारण कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। कार्यों में देरी होगी, मगर पूरे अवश्य होंगे।

आपके मधुर व्यवहार के कारण जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार का सहयोग मिलता रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(25/08/2030 - 04/10/2031)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 20/02/2018 को प्रारंभ होकर 20/02/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 25/08/2030 को प्रारंभ होकर 04/10/2031 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। मंगल की छठे भाव में स्थिति शुभ मानी जाती है।

इस अवधि में आप साहसी, शक्तिशाली और धैर्यवान होंगे, मगर कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। विषय-वासनाओं में रुचि बढ़ सकती है उच्चपद प्राप्त हो सकता है। ऊर्जा का उपयोग सही दिशा में करना उचित होगा अन्यथा बुरे फंस सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

महादशा :- बुध
(20/02/2037 - 20/02/2054)

बुध की महादशा 20/02/2037 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 20/02/2054 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इस दशा में शनि आपकी छोटी यात्रा तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि हुई होगी, संबंधियों से सहायता तथा जमीन तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप स्फूर्तिवान और शक्तिशाली रहेंगे। आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, फ्लू, बदहजमी, पेट दर्द आदि कुछ मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अवकाश ग्रहण से लाभ, बोनस और ग्रैय्यूइटी मिल सकती है। सट्टा लाभदायक होगा। अचानक लाभ भी हो सकता है। कुल मिलाकर अर्थ की दृष्टि से यह दशा आपके लिए उत्तम होगी क्योंकि इसमें आपका धन-संग्रह होगा। जीवन-वृत्ति और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा,रत्न, पुस्तक, लेखा-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोग अच्छा करेंगे, उन्हें सफलता उच्च पद और अधिकार मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, आय में वृद्धि तथा लाभ होगा। आपको सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा और आप आपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। आपको सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक उपलब्धि के लिए यह दशा बहुत उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख प्रापप्त होगा। आपको जमीन तथा अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपका पैतृक या विरासती सम्पत्ति मिल सकती है। आपको वाहन की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। तीर्थान पर जा सकते हैं।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपकी अनुसन्धान परियोजना में रुचि हो सकती है। आप सभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छा करेंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, समाचार माध्यम, जनसंचार आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपका परिवार के सभी सदस्यों के साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपको बच्चों से सुख तथा आनन्द मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ, पारिवारिक सुख तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को सट्टे में लाभ और सुख मिलेगा जबकि आपके पिता का शुभ कार्यों में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों के प्रति झुकाव होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को जीविकोपार्जन में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका धन संग्रह होगा तथा जमीन-जायदाद और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि में वृद्धि होगी। केतु के फलस्वरूप कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा में यात्रा तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में जीविकोपार्जन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यश, ख्याति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा बच्चों से सुख की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा होगी और सुख तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(20/02/2037 - 19/07/2039)

आपके लिए बुध की महादशा 20/02/2037 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 20/02/2037 को प्रांरभ होकर 19/07/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। उच्चपद और धन का योग है। विरासत, वसीयत, उपहार आदि से धन मिल सकता है। अचानक धनागम हो सकता है। ज्ञान-विज्ञान की गतिविधियों से संबद्ध हो सकते हैं। सफलता और खुशी प्राप्त होंगी। भूमि या अन्य अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी धनी होंगे; सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता का घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, स्पर्धियों पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, एकाग्रता का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति, वाहन और धन प्राप्त करेंगे; प्रसन्न और समृद्ध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्रा और व्यापार में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपको श्वसन तंत्र की मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(19/07/2039 - 16/07/2040)

आपके लिए बुध की महादशा 20/02/2037 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/07/2039 को प्रारंभ होकर 16/07/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे, साहस का परिचय देंगे। खुश रहेंगे। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। माता-पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। माता से संबंध सकारात्मक रहेंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा। पुरखों की जायदाद प्राप्त हो सकती है। बहुत सारे मित्र होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सफल रहेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता

धनी और भाग्यशाली होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ, खर्चे और यात्रा का योग है।

आपकी संतान कृतसंकल्प होगी और लक्ष्य को प्राप्त करेगी। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, मामा से खुशियां मिलेंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी; सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंदिर में दान दें।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(16/07/2040 - 17/05/2043)

आपके लिए बुध की महादशा 20/02/2037 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 16/07/2040 को प्रारंभ होकर 17/05/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम होगा। जीवनसाथी के माध्यम से धनागम हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा, भाग्यशाली रहेंगे। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। सब सुखों का आनंद लेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। जनता का दिन जीतेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कला में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सुखी रहेंगे। आपके पिता सफल होंगे, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता का घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सुख-साधन क्रय कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, संतान से सुख, संतान का जन्म, पिता से उत्तम संबंध और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप कार्यरत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा। परामर्शदाता सफल रहेंगे, प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को व्यापार में खूब लाभ होगा, व्यापार का विस्तार होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गाय को चारा खिलाएं।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(17/05/2043 - 22/03/2044)

आपके लिए बुध की महादशा 20/02/2037 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/05/2043 को प्रारंभ होकर 22/03/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आयु में बड़े लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। व्यापार में लाभ होगा। आत्मविश्वास और सम्मान में वृद्धि होगी। विदेश जा सकते हैं। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। हर काम में सफलता मिलेगी, प्रगति होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; सम्मान और उच्चपद मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता और प्रसिद्धि मिलेंगी। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा; सरकार से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति मिल सकती है, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा अच्छी होगी, सुख-साधन होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सफलता मिलेगी और व्यापार में धनलाभ होगा।

आपकी संतान की इच्छाएं पूर्ण होंगी, साहित्य और दूरदर्शन आदि में सफलता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, धन संचित होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सक्रिय रहेंगे लाभ, सफलता और धन का संकेत है। व्यापारी सफलता और धन के भागी होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(22/03/2044 - 21/08/2045)

आपकी बुध की महादशा 20/02/2037 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 22/03/2044 को प्रारंभ होकर 21/08/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। रिश्तेदारों से संबंध मधुर होंगे। आप दूसरों की मदद करेंगे और सब सुखों का भोग करेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध रहेंगे। कभी-कभी आप भावुक या उदास हो सकते हैं, इस प्रवृत्ति से बचना श्रेयस्कर होगा। छोटी बातों का बुरा मानना उचित नहीं है। कार्यक्षेत्र और समाज में सफलता मिलेगी। यात्राएं हो सकती हैं। सुख के साधन उपलब्ध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में, विशेषकर तरल पदार्थ और स्त्रियों से संबंधित कार्य में लाभ होगा। आपके पिता का घरेलू जीवन प्रसन्नता से भरपूर रहेगा। माता सफल होंगी ; प्रसिद्धि और धन प्राप्त करेंगी।

आपके भाई-बहनों के बहुत से मित्र होंगे; धन, उत्तम शिक्षा, संतान से खुशी, धनलाभ, सफलता का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी, पिता से लाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लाभ, यात्रा, उच्चपद और धन का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो मिलजुल कर किये काम से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परमर्शदाता सौभाग्यशाली रहेंगे जबकि व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। भावनात्मक व्याधियों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चावल, सफेद वस्त्र और दूध का दान करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

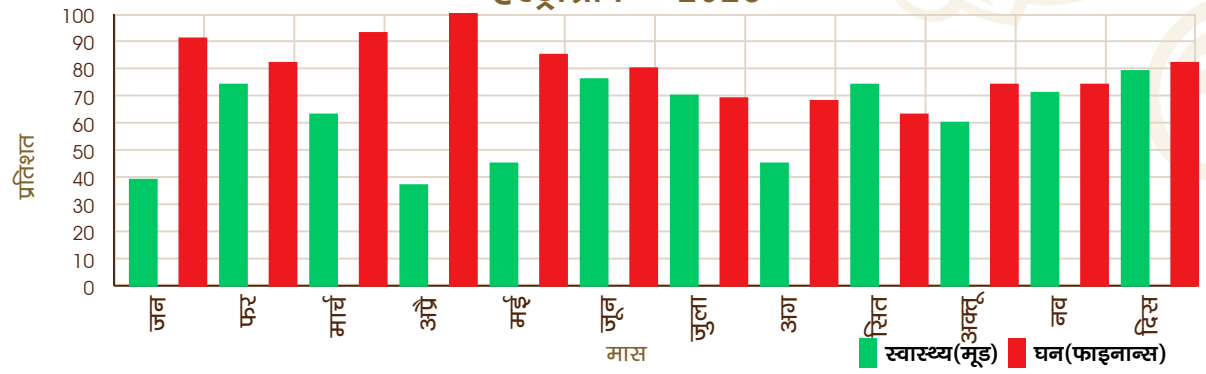

एस्ट्रोग्राफ - 2026

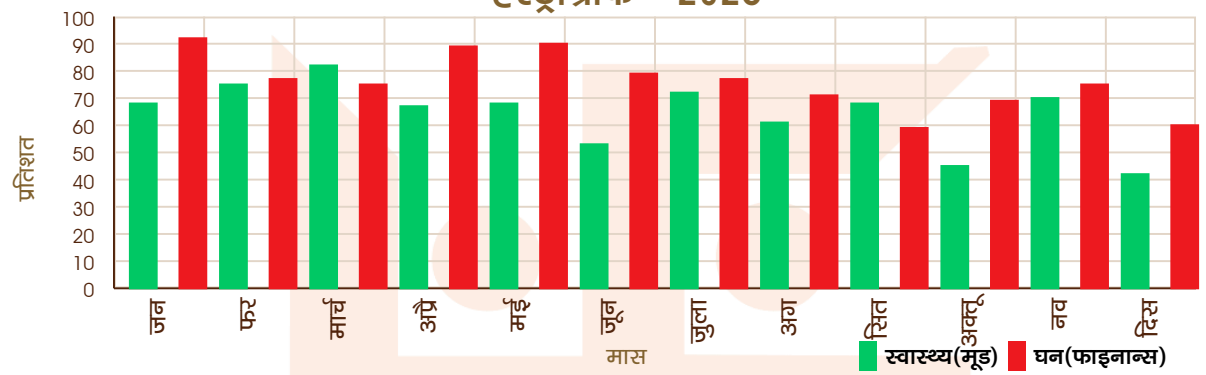

एस्ट्रोग्राफ - 2027

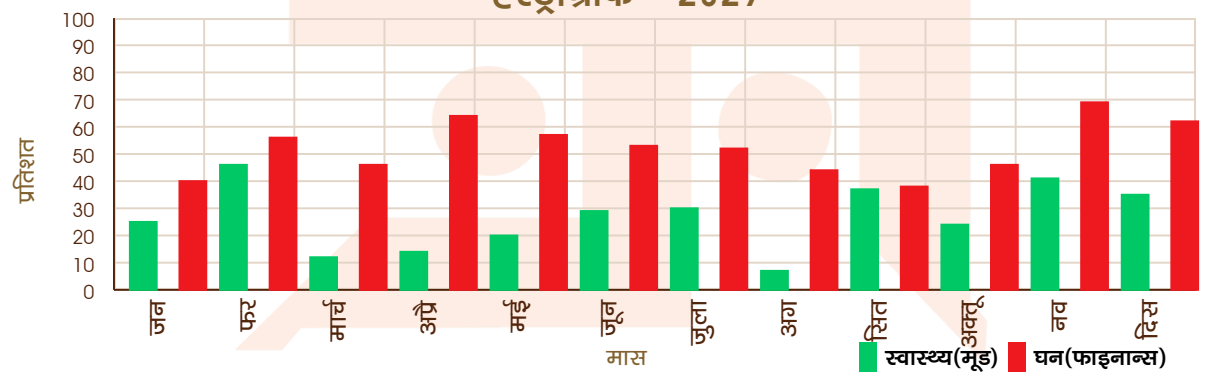

एस्ट्रोग्राफ - 2028

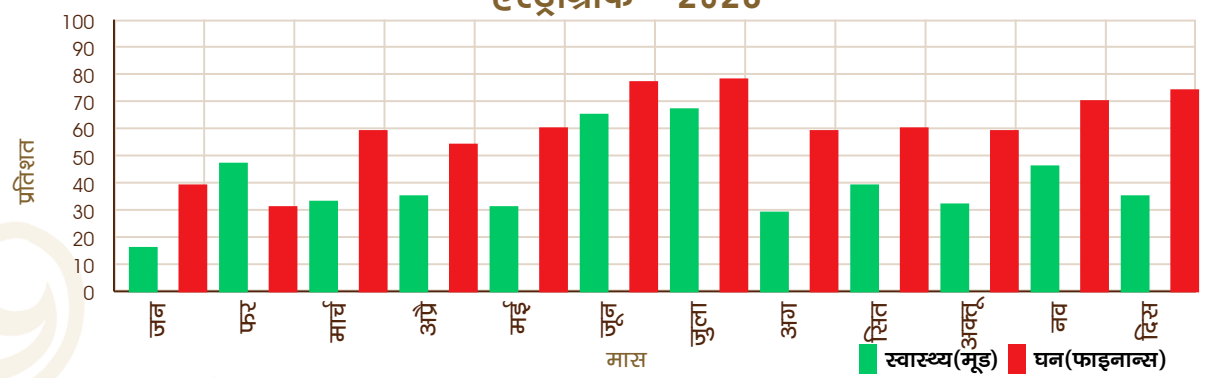

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

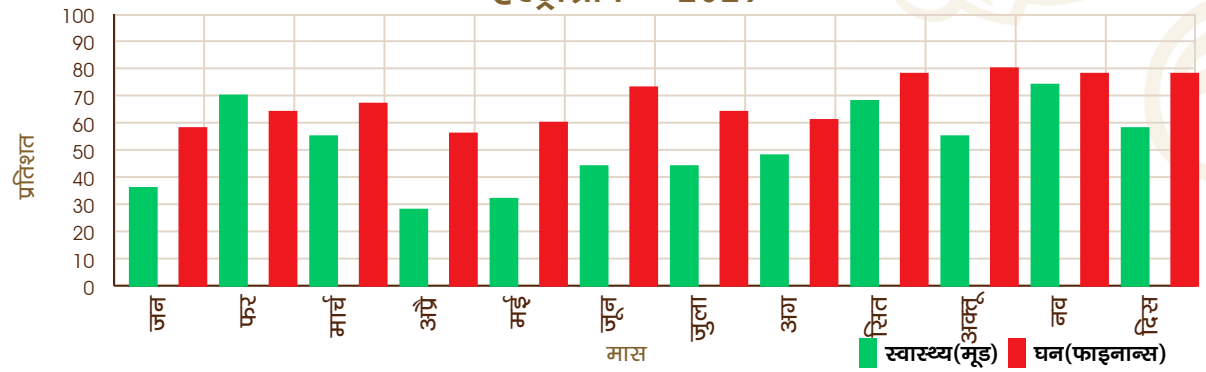

एस्ट्रोग्राफ - 2030

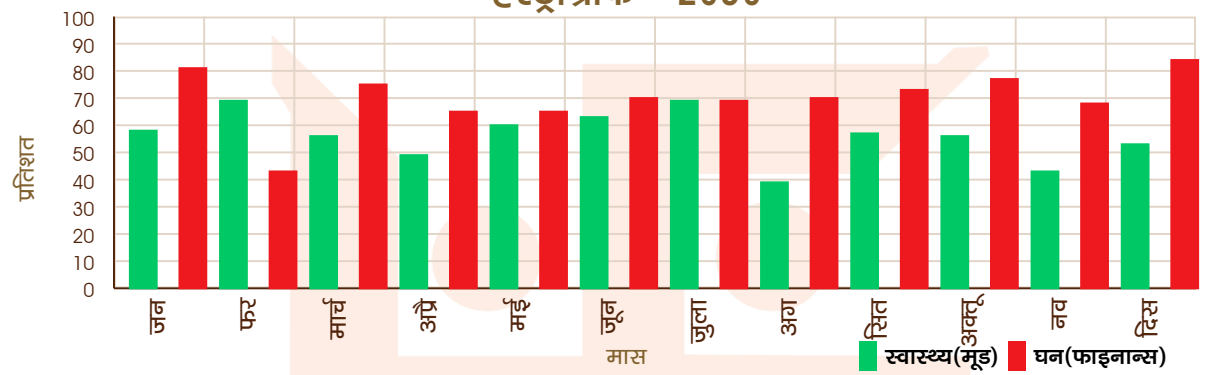

एस्ट्रोग्राफ - 2031

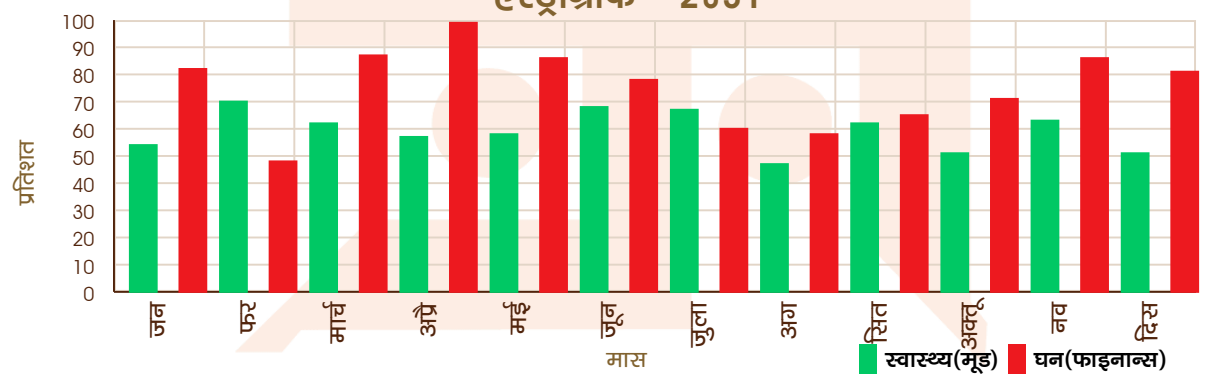

एस्ट्रोग्राफ - 2032

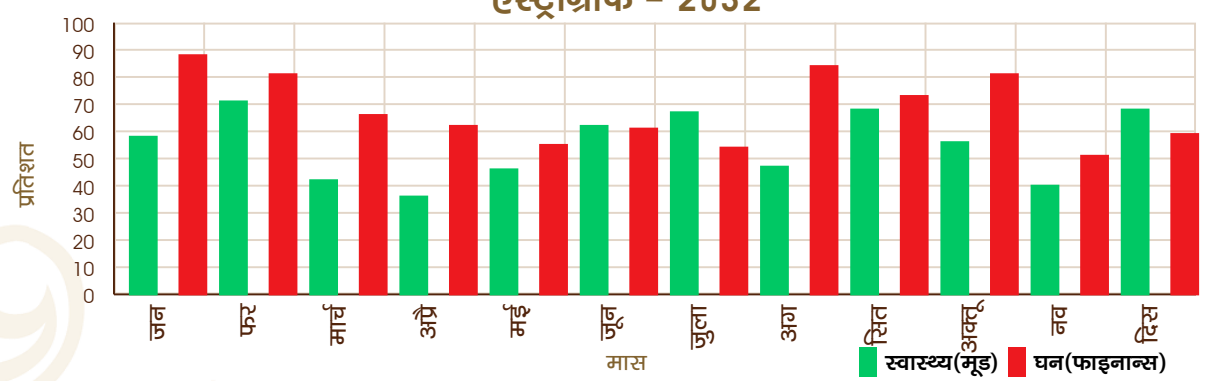

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2033

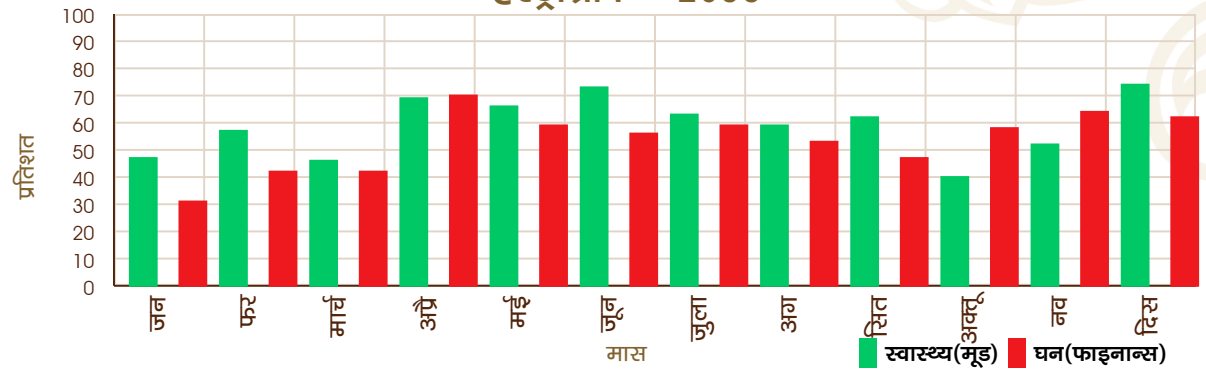

एस्ट्रोग्राफ - 2034

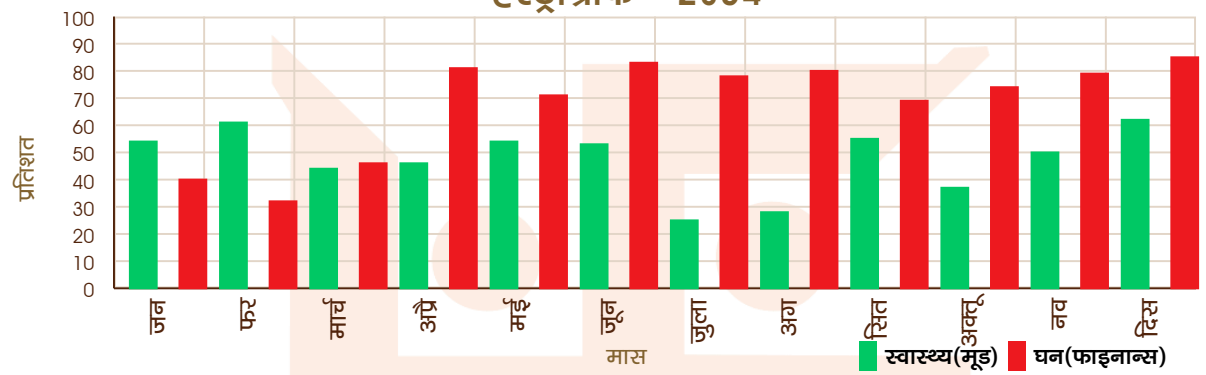

एस्ट्रोग्राफ - 2035

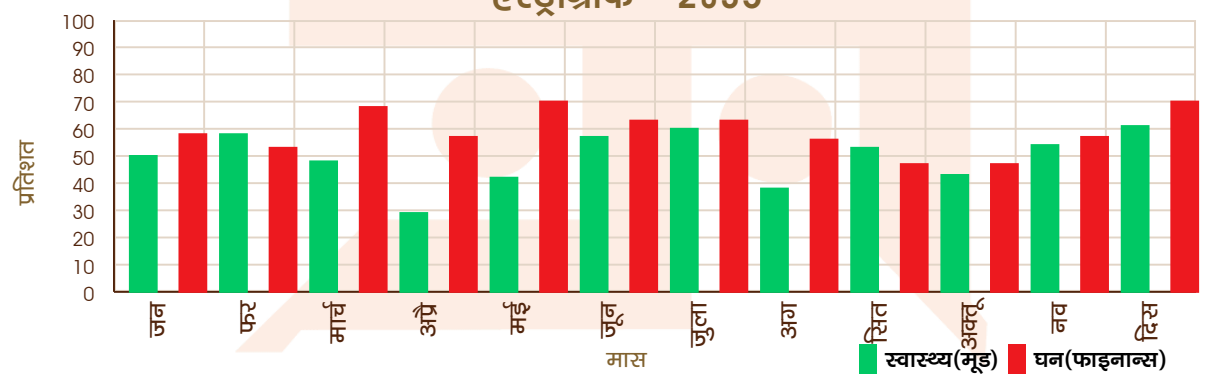

एस्ट्रोग्राफ - 2036

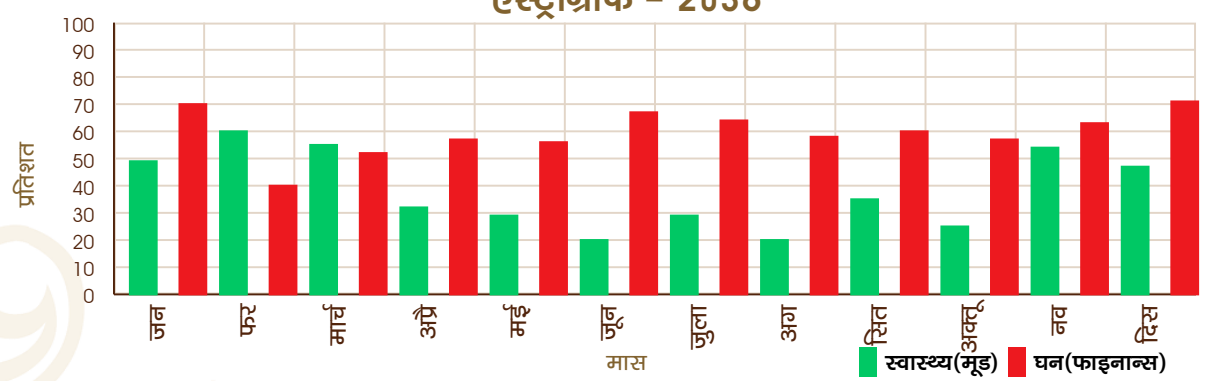

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2037

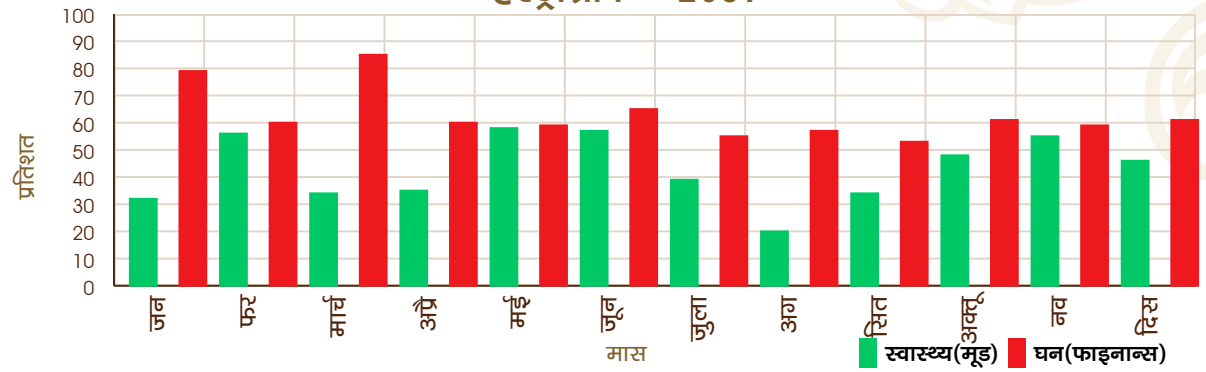

एस्ट्रोग्राफ - 2038

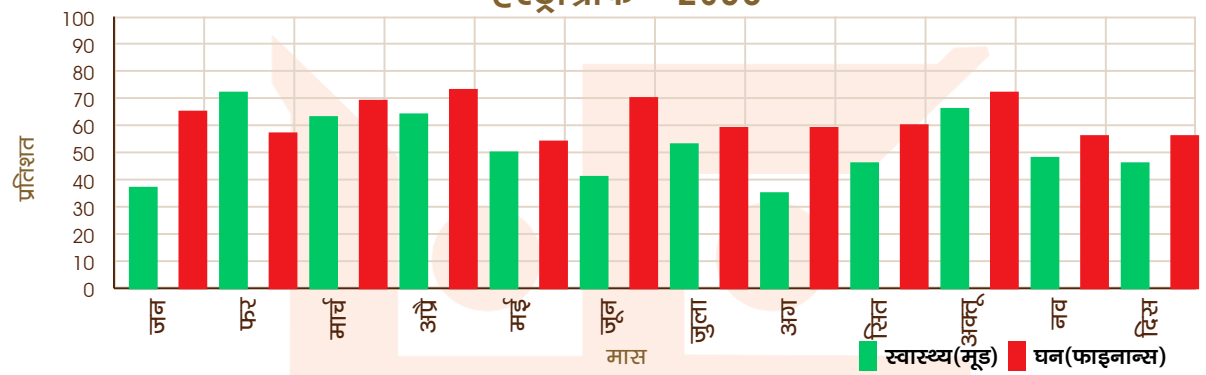

एस्ट्रोग्राफ - 2039

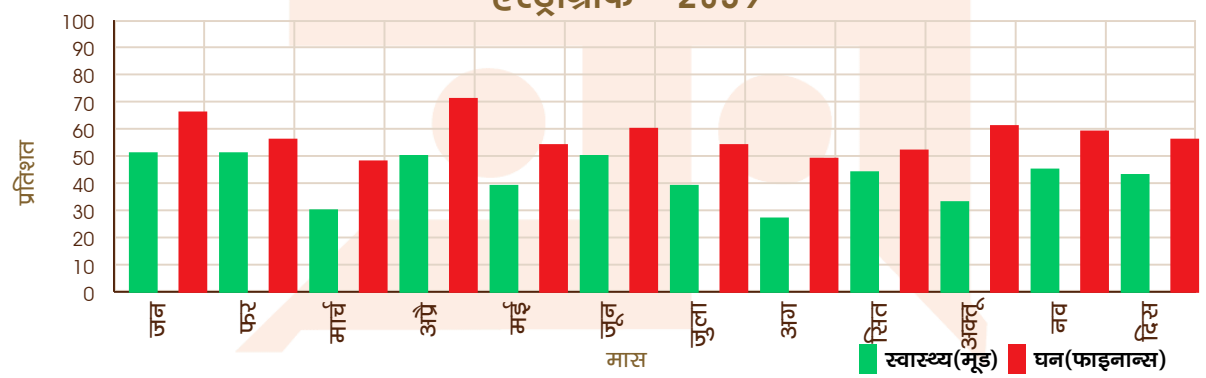

एस्ट्रोग्राफ - 2040

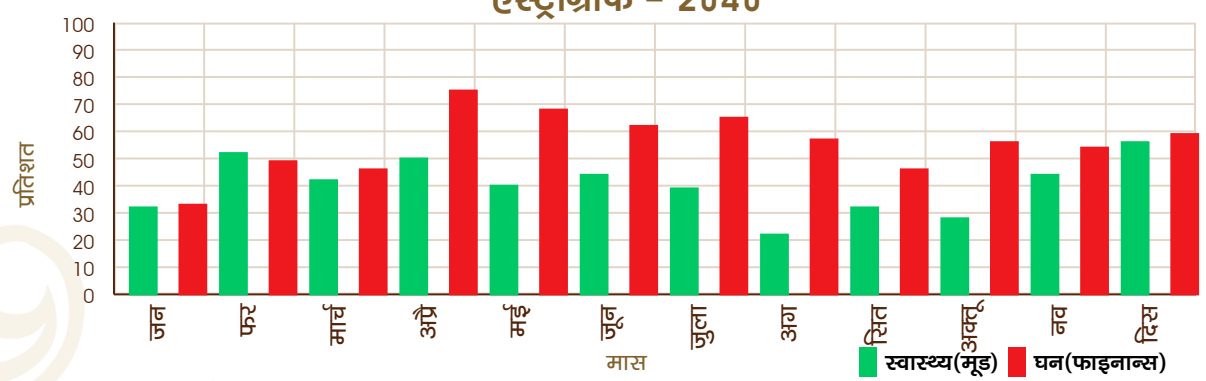

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2041

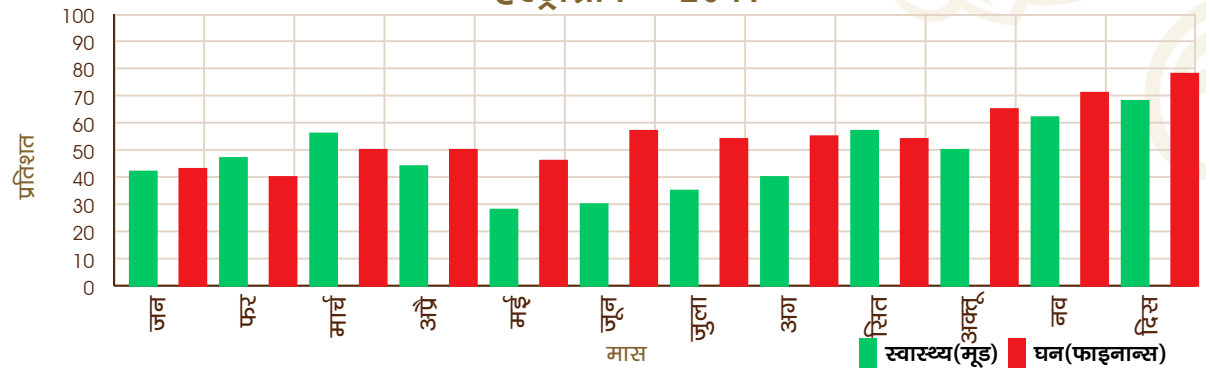

एस्ट्रोग्राफ - 2042

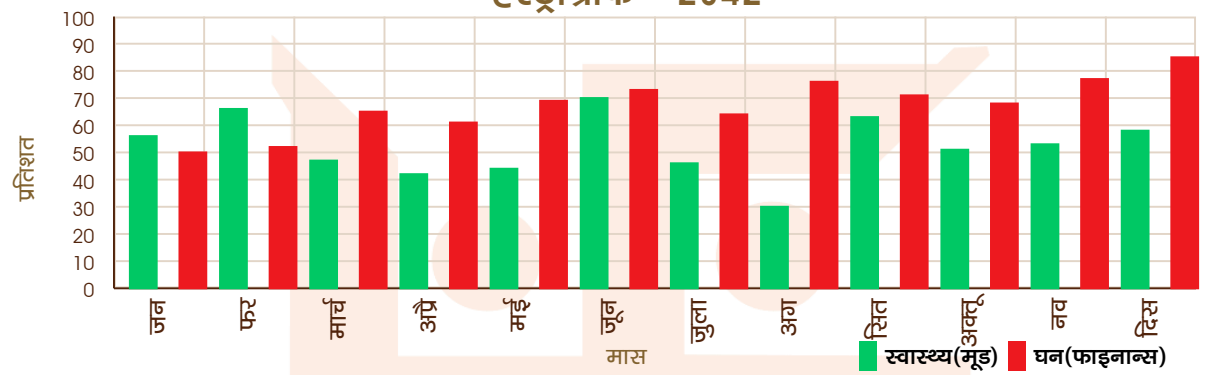

एस्ट्रोग्राफ - 2043

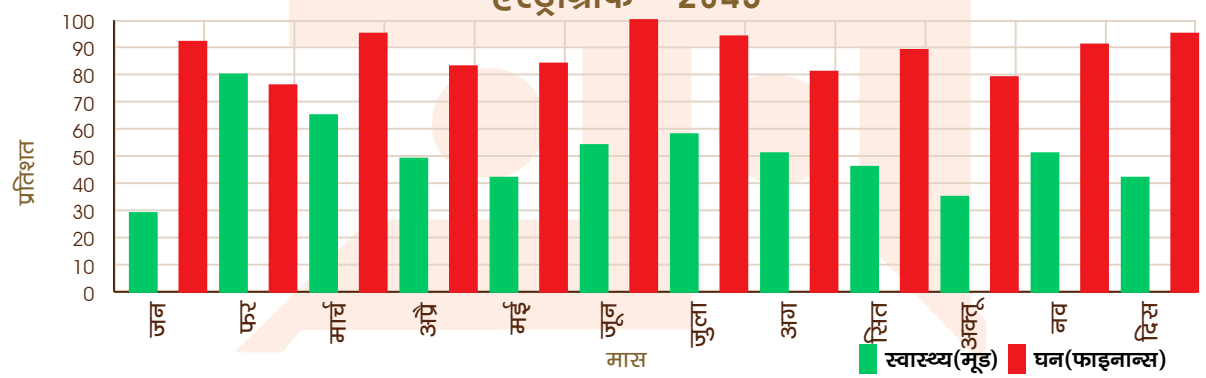

एस्ट्रोग्राफ - 2044

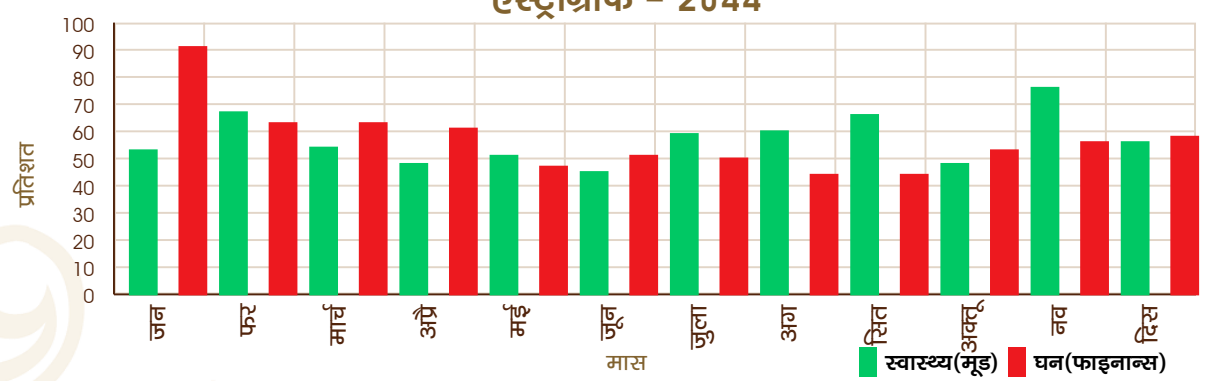

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,शनि योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

केदार योग

संख्यायोगाः सप्तसप्तर्क्षसंस्थै-
रेकापायाद् केदाराख्यः ।
केदाराख्ये श्री कृषिक्षेत्रयुक्तः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 39, 40।।

यदि जन्मपत्रिका में सातों ग्रह (सूर्य, चंद्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि) मात्र 4 राशियों में किसी भी क्रम में हो तो केदार योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 1093 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कृषि क्षेत्र, कृषि और लक्ष्मीवान होंगे।

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44-45।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

भूप योग

तुङ्गव्योमचरे तपःस्थलगते भूपः शुभालोकिते।
।। जातकपारिजात ।। अ. 14/श्लोक 73 ।।

यदि अपनी उच्च राशि में नवम राशि गत कोई ग्रह हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक भूप होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप राजकीय सुखों से युक्त होंगे।

सत्कीर्तियुक्त योग

लाभेशे कर्मभावस्थे कर्मेशे बलसंयुते।
देवेन्द्रगुरुणा दृष्टे सत्कीर्त्तिसहितो भवेत्।।
।। बृहद् पाराशरहोराशास्त्र ।। अ. 12/श्लोक

यदि जन्मकुण्डली में लाभ का स्वामी कर्मस्थ हो तथा कर्मेश बली हो तथा उस पर गुरु से दृष्ट हो तो जातक सत्कीर्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सत्कर्मी प्राणी होकर सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

विद्वान योग

सुखेशे केन्द्रभावस्थे तथा केन्द्रे स्थितो भृगुः ।
शशिजे स्वोच्चराशिस्थे विद्वान्पण्डित एव सः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-6

यदि जन्मपत्रिका में सुखेश केंद्र में हो और शुक्र भी केंद्र में हो तथा बुध अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पंडित एवं विद्वान होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पंडित एवं विद्वान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री-कुटुम्बी योग

कलत्रे भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम स्थान में सूर्य स्थित हो तो जातक बहुत कुटुम्ब वाला तथा बहुस्त्री वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहु कुटुम्बी तथा आपके कई जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : केतु,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

जायेशे शुभयुतेरिनीचगे सप्तमेपापे द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त होकर अपनी शत्रु या नीच राशि में

हो और सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः।।

।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.-57।।

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अ्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः।

।। बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5.।।

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग

से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,शनि योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।